आहुति के प्रथम संस्करण को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 25 सितंबर 2016 को कोझिकोड में हुई भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में जारी किया गया था।

25 सितंबर 2016 को भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आहुती की पुस्तक को जारी किया। बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और तपस्या के रूप में उनके प्रयासों का जयजयकार करते हुए, श्री नरेंद्र मोदी ने साफ रूप से रेखांकित किया कि हिंसा, का रास्ता अलोकतांत्रिक है, जिसका कभी भी सहारा नहीं लेना चाहिए, सिर्फ इसलिए कि कोई दूसरा राजनीतिक दल की विचारधारा के लाईन में आने से विफल रहता है। "केरल के बेसहारा कार्यकत्ताओं की आवाज शायद दिल्ली तक पहुंच नहीं पाई। लेकिन आज, मैं अपने कार्यकत्ताओं से कहूंगा कि आप आहूति को एक अन्य किताब के रूप में न लें जिसे आपने केरल प्रवास के दौरान प्राप्त किया है। इसके बजाए आहुति पर भारत के सभी राज्यों में चर्चा और विचार होना चाहिए, कम से कम तीन या चार स्थानों पर क्रमवार, ताकि आवाज (जिनके द्वारा गलत किया गया है) दिल्ली पहुंचे।" श्री नरेंद्र मोदी ने पूरे राष्ट्र से भी आग्रह किया कि वो मारे गए कार्यकत्ताओं के साथ खड़े हों, ताकि "उनका जीवन और बलिदान अनुकरणीय रहे और लोकतंत्र की ज्योति जगाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करे, जिस पर बद्धिजीवियों और अन्य सम्मानित साधुओं को विचार करना चाहिए।"

आहुति

केरला में बलिदान की अनकही कहानियाँ

cksps Center for Kerala Socio-economic and Political Studies

भारत माता के बहादुर
सपूत, राष्ट्रीयता की
रक्षा के लिए जिन्होंने
अपनी जान गंवाई

CONCEIVED AND EDITED BY

Sanju Sadanandan

&

Jayashankar Panicker

UNDER THE GUIDANCE AND SUPPORT OF

Vineetha Menon

Arun Shrivastav

Binu Padmam

Sudin Nair

Prakash Kumar

Nirupaka Bharati

Dr. Rasita Anand

Jinoy KJ

Saurav Kumar

Sunilkumar TP

DESIGN & LAYOUT

PUBLISHED BY

Centre for Kerala Socio-economic and Political Studies

EDITION

English - First: September, 2016

Hindi - First: April, 2017

For internal circulation only

We have made every possible effort in collecting details pertaining to the martyrs, from various sources. However there could be omissions, which could have happened unknowingly. We apologize for the same. We also request an update in case of any exclusion or error regarding data or names, in connection with the details (mail to us: CKSPS@outlook.com). The same would be incorporated in the next edition.

प्रस्तावना

केरल राजनीतिक हत्याओं का लगभग पर्याय बन गया है । देवताओं की अपनी भूमि पर हत्याओं की अधिकतम संख्या का गवाह बन गया है। विरोधी राजनीतिक विचारधाराओं का पालन करने वाले राष्ट्रवादियों की हत्या मात्र शमन के लिए राजनीतिक बदले की भावना से कर दी जाती है । केरल की राष्ट्रवादी ताकतें हमेशा कम्युनिस्टों या मार्क्सवादियों और इस्लामवादी कट्टरपंथियों के बदले की भावना का शिकार होती रहीं हैं। कई बार उन सबों के बीच एक अपवित्र गठजोड़ होने के कारण भी राष्ट्रवादी इसका खामियाज़ा भुगतते हैं। वास्तव में इसके अतिरिक्त, वामपंथ (कम्युनिस्ट) प्रायोजित हिंसा और ज़्यादतियां बेहद चालाकी से केरल में हो रही हैं। मारे गए लोगों के परिवारों की मुश्किलें और बढ़ी हैं । सच्चाई यह है कि ऐसे परिवारों के जीवित सदस्यों को राजनीतिक गुंडों द्वारा लगातार फिल्मी अंदाज़ से या मनगढ़ंत आरोप लगाकर परेशान किया जा रहा है।

कम्युनिस्ट को कहीं भी किसी भी रूप में देखा जा सकता है। न केवल वह निरंकुश हिंसा में लिप्त है बल्कि अपने हिंसात्मक विचारों को आगे बढ़ाने के लिए खून-खराबा करना उसके लिए आम बात है। कुछ हत्याओं को उनकी 'विचारधारा' के कमज़ोर पड़ने के उदाहरणों के तौर पर देखा जा सकता है । 16 वर्षीय युवा सुब्रमण्यम की हत्या भी उसी का एक उदाहरण है। हत्या थन्नूर, मलप्पुरम में 18 मार्च 1965 को की गई। यहां मुस्लिम लीग के सदस्यों ने विधानसभा चुनाव जीता था । जीत का जश्न मनाने का बहाना बनाकर गुंडों ने जनसंघ कार्यकर्ताओं के आवासों पर एक उपद्रवी हमला किया। सवाल यह है कि क्या पुलिस फायरिंग से यह हत्या सुनिश्चित नहीं की गई? बागी मुस्लिम लीग गुंडों पर लगाम कसने के बजाय पुलिसकर्मी मासूम जनसंघ कार्यकर्ताओं पर आग बरसा रही थी।

सुब्रमण्यम को 3 मार्च, 1965 को गोली मार गई थी और 18 मार्च, यानी 15 दिन बाद उसकी मौत हो गई। इस हत्या की निंदा करने के बदले वामपंथी मुस्लिम लीग के अपराधियों और हिंसा फैलाने वालों की दो साल तक तरफदारी करते रहे । दोनों एक दूसरे का समर्थन करते रहे जिसने बाद में एक गठबंधन की सरकार का रुप ले लिया । इस गठजोड़ का परिणाम इस रुप में सामने आया कि वामपंथियों ने मलप्पुरम नामक एक अलग ज़िला बनाकर मुसलमानों को तोहफे के रुप में दिया। यह हम सभी की सोच का पतन है कि खून के प्यासे कम्युनिस्टों को बख्श दिया गया है। समय के साथ ऐसी विचारधारा भारत सहित दुनिया भर में जड़ जमा चुकी है। रक्तपात और हिंसा का भी ट्रेडमार्क किया गया है ।

साम्यवाद 1957 से ही केरल की धरती पर अपना दांव खेल रहा है। सीपीआई और सीपीएम राजनीतिक हत्याएं सुनिश्चित करने के लिए एक सूची लेकर केरल में सबसे आगे खड़े हैं । वामपंथी विचारधारा के अनुयायियों द्वारा साफ तौर पर विरोधी विचारधाराओं वाले राजनीतिक दलों के सदस्यों को निर्दयता से खूनी स्ट्रोक के लिए लक्षित किया गया है और इसे आसानी से वामपंथी कर भी रहे हैं। उदाहरण के तौर पर जयकृष्णन मास्टर की घटना को लिया जा सकता है। एक युवा शिक्षक को नौ और दस साल की मासूम उम्र वाले छात्रों के सामने सत्तारुढ़ मार्क्सवादी पार्टी के सदस्यों ने काट दिया था। ऐसा केवल इसलिए किया गया क्योंकि उन्होंने एक राष्ट्रवादी पार्टी के साथ खड़ा होना चुना।

जहाज़ के मलबे आईएनजी कहर की प्रक्रिया में वामपंथी विचारधारा ने महिलाओं को भी नहीं बख्शा। यशोदा और उसके पति धर्मजन के टुकड़े-टुकड़े करने वाला डरावना नरसंहार इस बात का सबूत है कि जब कम्युनिस्ट चाकू लहराने लगते हैं तो महिलाएं भी सुरक्षित नहीं हैं। अन्य पीड़ित महिलाओं में कौशल्या और अम्मा ने भी कम्युनिस्टों के हाथों द्वारा हिंसक मौतों से मुलाकात की है। हत्या को और वीभत्स बनाने में बर्बरता का प्रयोग अभी तक कम्युनिस्टों का एक प्रधान गुण बना हुआ है।

सुब्रमण्यम और राजन पर पेट्रोल डालकर जलाने की वारदात इसके उदाहरण हैं। सत्यन, जिनका सिर बेरहमी से काट दिया गया था तथा वामपंथी क्रूरता के सभी उदाहरण, विशेष रूप से तालिबानी आतंक के समकक्ष हैं। इससे ज़्यादा बर्बरता क्या हो सकती है कि कम्युनिस्टों की क्रूरता से जानवरों को भी छूट प्राप्त नहीं है, चाहे वह परस्सीनिकाड्डवू सांप पार्क का मामला हो या उन कई कुत्तों का , जिनकी गर्दन कटी पाई गई। मनुष्य हों, पक्षी और जानवर हों या पर्यावरण, कम्युनिस्टों को जो चीज़ अच्छी नहीं लगती है, उसका विनाश वे सुनिश्चित करते हैं। अनूप का मामला भी इसी का उदाहरण है। कूट्टीयारी में अनूप पश्चिमी घाट के पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रदर्शन में जुटा था, जो मार्क्सवादियों को पसंद नहीं आया। मार्क्सवादियों ने दूर से ही एक देशी बम फेंका जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके अतिरिक्त, वामपंथी राज्य में राजनीतिक खेल लगातार खेल रहे हैं। केरल के कई शैक्षणिक संस्थानों और विश्वविद्यालय परिसरों पर विनाशकारी निशान निष्पादित किए जा रहे हैं। वास्तव में वामपंथी राजनीतिक समूहों द्वारा प्रचारित हिंसा और नरसंहार की विचारधारा एक सर्वविदित तथ्य है, जिसके कारण वामपंथी समर्थक संस्थाओं ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को तिलांजलि दे दी है। केरल विश्वविद्यालयों के परिसरों की राजनीति का सरसरी तौर पर विश्लेषण करने पर पता चलता है कि कैसे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कई छात्र वामपंथी हिंसा के आवेग का शिकार हुए हैं। राष्ट्रविरोधी छात्र समूहों से जुड़े और धार्मिक कट्टरपंथी संगठनों द्वारा समर्थित केरल के कॉलेज परिसर से कैसे एबीवीपी के दुर्गादास, पी एस अनु, सुजीत के साथ जुड़े छात्रों, किम करुणाकरण, बिम्बी, मुरुगनन्दा, विशाल, सचिन गोपाल और कई अन्य लोगों को बेरहमी से रास्ते से हटा दिया गया। वास्तव में, विशेष तौर पर, अनु, सुजीत और किम करुणाकरण की जिस तरह से हत्या कर दी गई, परिसर राजनीति के इतिहास में अद्वितीय है ! राजनीतिक समूहों को धन्यवाद जिन्होंने बदला लेकर अपनी प्यास बुझाई ! इन छात्रों को निशाना बनाने का सीधा सा कारण है कि वे केरल के शैक्षणिक परिसरों में एक राष्ट्रवादी संगठन का हिस्सा बने। **'आहूति'** के पीछे उद्देश्य है- दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा का समर्पण और इन शहीदों द्वारा किए गए बलिदान को देश के सामने लाना। राष्ट्रीय क्षति के साथ साथ, उनकी अनुपस्थिति ने उनके परिवारों को सदा के लिए दरिद्रता के अंधेरे में उजाला तलाशने के लिए अकेला छोड़ दिया है । ये बहादुर, गुमनाम हीरो आज ज़िन्दा होते तो राष्ट्रीय ताक़त के खंभे के रूप में खड़े होते। हम प्रत्येक उन व्यक्तियों के प्रति इस प्रयास में अपने दिल से आभार जताते हैं, जिनसे हमें हर संभव तरीके से मदद मिली है। विशेष रूप से अपने ज़मीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के ,जिन्होंने ईमानदारी से आंकड़े एकत्र करने में हमारे साथ मेहनत करके हमारी मदद की, हम आभारी हैं। श्री वीएन गोपीनाथन, श्री सोहनलाल शर्मा, केसरी सप्ताहिक, दैनिक जन्मभूमि, ऑरगेनाइज़र, हैंदवाकेरलम डॉट कॉम, संवाद डॉट कॉम, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी रिसर्च फॉउडेशन को कोटि-कोटि धन्यवाद। **श्री. बी एल संतोष** (राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री, भाजपा) के मार्गदर्शन और समर्थन के बिना इस काम की अवधारणा अधूरी रह जाती। हम भाजपा **सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी** का भी हृदय से आभार एवं धन्यवाद व्यक्त करते हैं जिनके सहयोग एवं मार्गदर्शन के बिना आहुति का हिंदी संस्करण संभव नहीं हो पाता।

अमित शाह
अध्यक्ष
Amit Shah
President

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

२१ सितम्बर, २०१६

संदेश

केरल में कई दशकों से संघ और भाजपा कार्यकर्ता बलिदान देकर देश और अपनी विचारधारा के लिए कुर्बानी दे रहे हैं। **आहुति** उन सभी हुतात्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि है।

केरल में जिस प्रकार की हिंसा की राजनीति चल रही है, उससे पूरा देश स्तब्ध है। स्वतंत्रता के पश्चात हमने लोकतंत्र अपनाया और लोकतंत्र में सत्ता प्राप्ति के लिए हिंसा का रास्ता चुनना हमने कभी स्वीकार नहीं किया। जिस प्रकार से राजनीति में हिंसा के माध्यम से सत्ता प्राप्ति तथा सत्ता में बने रहने का षड्यंत्र केरल में चल रहा है वह किसी भी परिस्थिति में असहनीय है। इस तरह की राजनीति लोकतंत्र तथा देश एवं समाज के लिये घातक है।

केरल में विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं पर जिस प्रकार के हमले हुए, उसे किसी भी रूप में सहन नहीं किया जा सकता। इस तरह की घटनाएँ अकेली नहीं, बल्कि इन घटनाओं की एक बड़ी श्रृंखला है, जिसमें षड्यंत्रपूर्वक ढंग से बड़ी निर्दयता से हत्यायें की गई हैं। मार्क्सवादी-कम्युनिस्ट विचार वाले दल निरंतर अपने वर्चस्व के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का जवाब हिंसा से देते हैं। ऐसा इतिहास रहा है कि जब वैचारिक संघर्ष में हार होने लगती है, तब मार्क्सवादी दल हिंसा का सहारा लेने लगते हैं। पश्चिम बंगाल में भी यही हुआ था। जिस प्रकार की चुनौती भाजपा के समर्पित कार्यकर्ता केरल में दे रहे हैं, उसका जवाब कम्युनिस्ट दल हिंसा से देना चाहते हैं। यह कम्युनिस्ट दलों की वैचारिक एवं राजनैतिक हार है। हमारे निष्ठावान कार्यकर्ताओं के बलिदान से केरल में भी परिवर्तन का दौर आरंभ हो चुका है। मैं ऐसे सभी बलिदानियों को नमन करता हूँ और हर कार्यकर्ता का अभिनन्दन करता हूँ।

केरल की हिंसक राजनीति का पूरा चित्र अब भी देश के सामने नहीं आ पाया है। एक-दो वीभत्स घटनाएं, जो राष्ट्रीय मीडिया में चर्चित हुईं, उनके अलावा अन्य कई घटनाओं से पूरा देश अनभिज्ञ है। ऐसी आशा है कि यह पुस्तिका उस कमी को पूरा करेगी और इसके माध्यम से पूरा देश इन भयानक घटनाओं को जान पायेगा। **'आहुति'** सही मायने में हमारे राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं को देश सेवा में अपने प्राणों की आहुति देने वालों की एक गाथा है। यह पुस्तिका उनकी शौर्यपूर्ण स्मृतियों को एक विनम्र श्रद्धांजलि है।

भवदीय

(अमित शाह)

11, अशोक रोड, नई दिल्ली-110 001 दूरभाष: 23005700 फैक्स: 23005787
11, Ashok Road, New Delhi-110 001, Phone : 23005700 Fax : 23005787
e-mail: amitshah.bjp@gmail.com

Kummanam Rajasekharan
State President

भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janatha Party
Kerala State Office

इस साल के शुरू में केरल में विकास का कार्ड खेलकर सत्ता पर कम्युनिस्टों ने कब्ज़ा कर लिया। भ्रष्टाचार और घोटालों से भरी कांग्रेस के पतन ने यह उनके लिए आसान बना दिया। भाजपा ने राज्य में मज़बूत प्रदर्शन किया, हालांकि हम केवल एक ही सीट जीतने में कामयाब रहे, फिर भी काफी हद तक हमारे वोट बढ़े। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि कम्युनिस्टों ने किसी भी लोकतांत्रिक विरोधी को कभी सहन नहीं किया है। वे केवल हिंसा की भाषा जानते हैं और इसलिए जब वे सत्ता में आते हैं तो इसमें अधिक लिप्त हो जाते हैं। कम्युनिस्टों के सत्ता में आने के साथ ही, उनके आशीर्वाद से राजनीतिक हिंसा की गाथा मुख्यधारा में पूरी तरह वापस आ गयी है। चुनाव के परिणाम आने के दिन से ही जश्न मनाने के नाम पर अत्याचार शुरु हो गया है। नतीजे के तौर पर, एक युवा और होनहार नौजवान प्रमोद, जो संयुक्त अरब अमीरात से स्वदेश आया था, निजी और सार्वजनिक संपत्ति भाजपा के अभियान में मदद करने के लिए दे रहा था, का जीवन बर्बरता की बलि चढ़ गया। पहले दिन से ही कमुनिस्टों ने यह संदेश दिया कि वह अपने विरोधियों के खिलाफ हिंसा फैलाना जारी रखेंगे। और आज भी उनकी गुंडागर्दी निर्भीकता से पश्चाताप के बिना जारी है। इस वर्तमान परिदृश्य में हम लोग कई गुना चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हमारे कार्यकर्ता सबसे अधिक विनम्र पृष्ठभूमि से हैं। और वे तेज़ी से बढ़ रहे इन व्यापक हमलों का आसानी से शिकार रहे हैं। हत्या के मामले में सरकार की ओर से कोई मुआवज़ा नहीं है और इनके परिवारों को बेसहारा छोड़ दिया जाता है। यदि अपंगता आती है तो चिकित्सा का व्यय काफी आता है लेकिन उन्हें अक्सर इलाज के लिए बिना किसी सहारे के मझधार में छोड़ दिया जाता है। हत्या के मामले में कानूनी शिकायत या हत्या करने के प्रयास के मामले दायर करना भी एक अलग मसला है। लंबी कानूनी लड़ाई में कई व्यक्तियों, परिवारों और हमारे संगठन का एक बड़ा दायित्व है। इसके अलावा हमारे कार्यकर्ता आर्थिक स्तर पर भी संघर्ष कर रहे हैं । पार्टी के साथ जुड़े होने के कारण सामाजिक रूप से उनका बहिष्कार किया जाता है।

हमारे लोगों के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार का खुलेआम उल्लंघन किया जा रहा है। वास्तव में यह एक ऐसी दयनीय हालत है जो कम्युनिस्ट गढ़ के गाँवों में हमारे कार्यकर्ताओं को हताशा की ओर धकेल रही है। कम्युनिस्ट जो खुद मुक्त भाषण के लिए चैंपियन माने जाते हैं, उन्हें आलोचना का एक शब्द भी सहन नहीं होता। **इससे हमारी दृष्टि को सही दिशा मिलेगी और भविष्य की राह तय होगी:** इस संदर्भ में, हम अपने संगठन के आदर्शों को कायम रखने में अपने कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए बलिदान को एक पल के लिए भी नहीं भूल सकते और मैं इस कदम के लिए उनका आभारी हूँ। अब उचित समय आ गया है। इन कम्युनिस्टों के अत्याचारों का सार्वजनिक रिकॉर्ड होगा, जो अपने राजनीतिक रसूख के दिखावे और असहमति वालों को दबाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। इस परिप्रेक्ष्य में चर्चा करना और भविष्य के कार्यक्रम को निर्धारित करने में इससे मदद मिलेगी। हिंसा के इस राजनीतिक संस्थानीकरण करने वालों और असहिष्णु ब्रिगेड को बेनकाब करने के लिए मैं विनम्रतापूर्वक अपने पार्टी के नेताओं और सभी कार्यकर्ताओं से मदद चाहता हूं। हमारी आवाज़ परिलक्षित किए जाने की ज़रूरत है।

कुम्मनम राजशेखरन

अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी, केरल |

Mararji Smruthi Mandiram, K.G. Marar Road, Thycaud P.O Thiruvananthapuram-695 014, Kerala
Ph : 0471-2333390, 2337711, 2337713 Fax : 2337715 Email : kummanamrajasekharan@gmail.com

प्रस्तावना

इतिहास हमें बताता है कि अन्य विचारधाराओं के मुकाबले साम्यवाद में अधिक खून बहा है क्योंकि बाकी फासीवादी विचारधाराओं के प्रभाव की तुलना में साम्यवादी प्रभाव में अधिक हत्याएं हुईं हैं। विश्व भर में इसका नाम हिंसा, जघन्यता और अधिनायकवाद से जुड़ा है। कोई हैरानी की बात नहीं है कि सीपीआइ(एम) का 'कन्नूर मॉडल ' जिसमें साम्यवादी निरंतर स्वयंसेवकों को अपना निशाना बनाते हैं और मार डालते हैं , स्टॅलिन के रूस या माओ के चीन की व्यवस्था से प्रेरित परिणाम है, जहाँ विरोध के स्वर और विरोधियों को राज्य और पार्टी द्वारा सख्ती से कुचल दिया जाता है। संयोग से 'कुनूर मॉडल' (क्षेत्र में सभी विरोधी आवाजों का दमन औए साम्यवादियों की सत्ता बनाये रखना) सीपीआइ (एम) के सदस्यों के लिए हत्याएं करने का एक सामान्य तरीका बन गया है। इसलिए कुन्नूर और अन्य साम्यवादी प्रभाव के क्षेत्रों में जो स्थिति है, वह स्थानीय परिस्थितियों से नहीं उपजी हैं।

केरल में सीपीआइ(एम) का यह निर्दयी और घृणास्पद खूनी खेल खासतौर पर कन्नूर में (जहाँ अन्य क्षेत्रों के मुकाबले काफी संख्या में हत्याएं हुईं हैं) वर्ष 1969 में एक दलित वड्डीक्कल रामाकृष्णन की हत्या से शुरू हुआ। रामाकृष्णन एक सक्रिय स्वयंसेवक थे जिन्होंने काफी संख्या में साम्यवादियों को राष्ट्रवादी संगठन से जोड़ा था। तब से केरल में 270 स्वयंसेवकों और समर्थकों की हत्या की जा चुकी है। इनमें से 232 सीपीआइ (एम) व अन्य अधिकतर इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा मारे गए। घायलों की संख्या मारे गए लोगों के मुकाबले करीब छह गुना है। इसके बावजूद पुलिस के अत्याचार और झूठे मामले दायर करने की घटनाएं सामान्य हो चुकी हैं। खासतौर पर जबकि सीपीएम/एलडीएफ सत्ता पर काबिज़ है।

कन्नूर में हमारे कार्यकर्ताओं पर हमले का मुख्य कारण सीपीआइ(एम) के कैडर का भारी तादाद में आरएसएस की ओर आना है। उत्तरी केरल, खासतौर पर कन्नूर में, हमारे ज़्यादातर कार्यकर्ता पहले साम्यवादी दल में थे। दूसरे, इस क्षेत्र में आरएसएस सीपीएम के आतंक और आधिपत्य के सामने झुकने से इनकार करता रहा है। यह उनसे बर्दाश्त नहीं होता है। हिन्दू राष्ट्रवादियों के खिलाफ इस लाल आतंक का एक लक्ष्य मुस्लिम वोट बैंक भी है , जिसके प्रति तुष्टिकरण की इनकी पुरानी नीति है। ये खुले आम संघ पर किये गए हमलों का अहंकार जताते हैं। दूसरी ओर इनकी पार्टी बीफ फेस्टिवल करके कट्टरपंथी वोट हासिल करने की कोशिश करती है।

हिंसा करने का प्राथमिक लक्ष्य आरएसएस की प्रतिष्ठा और सदस्यता बढ़ने पर रोक लगाना भी है। अन्य सामी धर्मों की तरह साम्यवाद में सिद्धांत या दल का त्याग ऐसा पाप है जिसकी सजा मौत ही है। सीपीएम की सत्ता के साथ ही केरल में हिंसा और हत्याओं की वारदातें बढ़ गयी हैं और 'कन्नूर मॉडल' को राज्य के अन्य हिस्सों में भी अपनाया जा रहा है। सीपीआइ (एम) के राज्य सचिव कोडियारी और कन्नूर जिला के सचिव पी जयराजन दोनों ने खुले आम आरएसएस और अन्य राष्ट्रवादी संगठनों पर हमला करने को कहा है। तिरुअनंतपुरम में बीजेपी के राज्य समिति के कार्यालय पर पहले हमला हुआ और बाद में बम फेंका गया।

केरल का मीडिया (कुछ अपवाद छोड़कर) वामपंथियों द्वारा नियंत्रित है और उनका स्टाफ जाने माने मार्क्सवादियों से भरा हुआ है। संस्कृति के नेतृत्व की ज़िम्मेदारी उठाने वाले नेता गण लोगों की शिकायतें सामने नहीं ला पाते क्योंकि उन्हें मार्क्सवादियों की हिंसा का डर है। वामपंथी बुद्धिजीवियों की जुबान बेशर्मी और बिना पछतावे के हमेशा सीपीएम और उसकी हत्यारी राजनीति के समर्थन में चलती रहती है। राष्ट्रीय मीडिया मज़े से इस गंभीर स्थिति को नज़रंदाज़ किये हुए है। अब समाज को ही इस राज्य समर्थित आतंक के खिलाफ उठाना होगा। हम उम्मीद करते हैं कि इस राजनीतिक हिंसा का जो दस्तावेज़ हमने तैयार किया है उसके आधार पर देशभर में सेमिनारों द्वारा वामपंथी हिंसा के प्रति जागरूकता पैदा होगी और राष्ट्र छिपे हुए वास्तविक असहिष्णु गुट का पर्दाफाश करेगा।

जे नंदकुमार
संयोजक, प्रग्या प्रवाह

कन्नूर हिंसा पर पद्मश्री पि परमेस्वरन द्वारा जारी वक्तव्य

31 मार्च, 2008

केरल के कन्नूर जिले का नाम पिछले चार दशकों में हिंसा की राजनीति के चलते देश भर में काफी मशहूर हो गया है। यह सिलसिला चलता ही जा रहा है। यह अजीब बात है कि एक ऐसे राज्य में जोकि पूर्ण साक्षरता के लिए जाना जाता है, अब इस तरह के इलाके है जहाँ राजनीति और विचारधारा की भिन्नता के कारण लोग जघन्य हत्याएं कर रहे हैं। और यह काम लगातार बिना किसी राहत के चलता ही जा रहा है।

देश भर में सही सोच रखने वाले लोग इन असभ्य और अमानवीय घटनाओं के प्रति चिंतित हैं। लगातार हो रही इन घटनाओं को रोकने के लिए कोई स्थायी समाधान ढूंढना है तो पूरे परिदृश्य को सही परिप्रेक्ष्य में समझना ज़रूरी है। इसके पीछे एक लम्बा इतिहास है जिसका केरल की जनता और केरल के बाहर के लोगों को ज्यादा अनुमान नहीं है। साम्यवादी-मार्क्सवादी मनोविज्ञान संघ परिवार के प्रति गहरी नफरत से ग्रस्त है। यह तथ्य तब प्रकाश में आया जब वर्ष 1948 में तिरुअनंतपुरम में आरएसएस की एक रैली जिसे गुरूजी गोलवलकर संबोधित कर रहे थे, साम्यवादी छात्रों के एक प्रदर्शन के हमले का शिकार बनी। जबकि इस प्रदर्शन को किसी ने नहीं उकसाया था। वर्ष 1949 में एक बार फिर दो योजनाबद्ध हमले किये गए। एक कोझीकोड और दूसरा एलेप्पी में, जहाँ गुरूजी गोलवलकर संघ के स्वयंसेवकों को संबोधित कर रहे थे।

उस समय आरएसएस केरल में कोई प्रभावी संगठन नहीं था। ये हमले योजनाबद्ध, एक तरफ़ा और पूर्ण असहिष्णुता से ग्रस्त थे। जैसे –जैसे संघ का विकास और लोकप्रियता बढ़ती गयी कम्युनिस्ट दल और उसका मीडिया विषाक्त कुप्रचार में जुट गया। वर्ष 1950 में संघकार्य केरल के उत्तरी भागों में, विशेष तौर पर कन्नूर में प्रभावशाली हो गया। संघ के प्रचारक कन्नूर में पहुंचे तो उन्हें डराया धमकाया गया और उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया। उन्हें रहने और खाने की व्यवस्था करना मुश्किल हो गया। उन्हें रेलवे प्लेटफार्म पर शरण लेनी पड़ी। फिर भी संघकार्य बढ़ने लगा तो उनपर हमले किये जाने लगे। आज इन हमलों की गंभीरता विभिन्न स्तरों पर बढ़ती जा रही है।

आपातकाल के दौरान ये हमले बंद हुए थे क्योंकि आरएसएस तथा कम्युनिस्ट पार्टी दोनों ही दमन का शिकार बनी थीं। वास्तव में दोनों ने साथ ही जेल में समय बिताया था। परिणामतः जब आपातकाल हटा तो दोनों ने मिलकर कांग्रेस को हटाने के लिए काम किया। लेकिन यह साथ अधिक नहीं चला। आरएसएस ने आपातकाल का पूरी ईमानदारी से विरोध किया था। जिससे उसे लोकप्रिय समर्थन मिला, जिसकी बानगी मतदान में देखने को मिली। संघ ने कन्नूर जिले के वामपंथी इलाकों में भी अपनी जडें जमा ली थीं। इससे मार्क्सवादी हतोत्साहित हो गए। इसके बाद वे सब प्रकार की शत्रुतापूर्वक कारवाईयों में लग गए, जिस से कि संघ और बीजेपी के कार्यकर्ता ख़त्म हो जायें। वर्ष 1980 में संघ के खिलाफ हमलों की ऐसी लहर चली कि दर्जनों कार्यकर्ताओं को जान से हाथ धोना पड़ा।

इसका काफी विरोध हुआ और ईएमएस नम्बूदरीपाद, ईके नयनार, बीएमएस के नेता डीपी ठेंगडी और सीटू के नेता रामामूर्ति ने अपने पद का उपयोग कर स्थिति सुधारने के प्रयत्न किये। कोच्ची में कुछ नेताओं की बैठक हुई, जिसमें एक समझौता तैयार किया गया। लेकिन सीपीआई (एम) के राज्य स्तर के नेताओं ने इसे मानने से इनकार कर दिया।

हत्या की राजनीति का एक अजीब पहलु यह भी है कि सीपीआई (एम्) ने संघ और बीजेपी तक ही विरोध समेट कर नहीं रखा है। बाकि राजनीतिक दल भी भुगत रहे हैं। एक लोकतान्त्रिक व्यवस्था में यह केवल असहिष्णु, अशोभनीय और अमान्य व्यवहार है। यह नग्न सत्य है कि सीपीआइ (एम) पूरे कन्नूर जिले को अपने एकाधिकार, जागीर और सत्ता के केंद्र के रूप में देखती है। कोई भी अन्य दल यहाँ संविधान के अनुसार बिना रोकटोक के काम काम करने का मूल अधिकार इस्तेमाल नहीं कर सकता। अगर उनका अलिखित कानून किसी ने भंग किया तो वह खतरा मोल ले रहा होगा। सीपीआइ (एम) द्वारा संघ परिवार पर खुले आम हमले के पीछे एक और मनोवैज्ञानिक कारण है। केरल के गहरे सांप्रदायिक वातावरण में अल्पसंख्यक वोट को हासिल करने की उनकी यह राजनीतिक रणनीति है। वे दावा करते हैं कि अल्पसंख्यकों को 'हिन्दू कट्टरपंथियों' से बचने में केवल वे ही सक्षम हैं।

यह एक सर्वमान्य तथ्य है जिसे केवल सीपीआइ (एम) स्वीकार नहीं करती, कि कन्नूर जिले में बहुत सी पंचायतें हैं जिनमें सैकड़ों मतदान बूथ हैं जहाँ कभी भी लोकतान्त्रिक ढंग से चुनाव संपन्न नहीं हो सके हैं। क्योंकि मार्क्सवादी दल इनपर कब्ज़ा जमा लेते हैं और तय करते हैं कि कौन वोट डालेगा और कौन नहीं। इसकी वजह से कन्नूर जिले के अधिकतर इलाकों में सभी दलों के मन में डर बैठ गया है।

यहाँ “सीपीआइ (एम) द्वारा नियंत्रिक लोकतंत्र” है और” सीपीआइ (एम) व्यवस्थित चुनाव”। यहाँ एक उबलता हुआ रोष है, जिसे कोई सरकार आज तक सफलतापूर्वक शांत नहीं कर पाई है।

हाल में हत्याओं के इस सिलसिले को लम्बे काल से चले आ रहे दमन, अत्याचार, असहिष्णुता और शारीरिक हमलों के आईने में देखना होगा। जब तक कि इस सच को समझा नहीं जायेगा, अन्याय को पूरी तरह ख़तम नहीं किया जायेगा और लोकतान्त्रिक ढंग से चुनाव की प्रक्रिया को पुनर्स्थापित नहीं किया जायेगा तब तक शांतिपूर्ण और स्थायी समाधान की कोई आशा नहीं है।

कहा जा सकता है कि एक त्रिबिंदु कार्यक्रम लागू किया जाना चाहिए जोकि सभी दल, विशेषतः सीपीआइ (एम) को समझ में आ जाये और सर्वमान्य हो। ये तीन बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. सीपीआइ (एम) कुन्नूर जिले को 'विशेष राजनीतिक क्षेत्र' (एसपीजेड) का दर्जा देने का वाद छोड़ दे।
2. सीपीआइ (एम) इस बात को मान ले कि संघ कार्य जिस प्रकार से भारत गणराज्य के अन्य भागों में एक सच्चाई है उसी प्रकार से कन्नूर जिले में भी है। यह एक दृढ तथ्य है जिसे सफाया करने की प्रवृति और व्यवहार से छिपाया या अनदेखा नहीं किया जा सकता। शाखा इस कार्य का अटूट हिस्सा है।
3. उन्हें इस शातिर सोच को छोड़ देना चाहिए कि आरएसएस पर हमला या हत्या की राजनीती से चुनावों में अल्पसंख्यकों को अपने पक्ष में किया जा सकता है । अल्पसंख्यक भी इतने अक्लमंद हैं कि इस जाल में नहीं फंसेंगे। थोड़े समय को छोड़कर सरकारी मशीनरी के दुरूपयोग से भी यह संभव नहीं।

(पी. परमेस्वरनआरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक,भारतीय विचार केंद्र के निदेशक और विवेकानंद केंद्र के

अध्यक्ष हैं।)

वाडिक्कल रामकृष्णन

28 अप्रैल, 1969 को शहीद, कन्नूर

पेशे से दर्ज़ी वाडिक्कल रामकृष्णन थालास्सेरी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के मुख्य शिक्षक थे । अपने कार्य के प्रति अत्यंत समर्पित वह अपने क्षेत्र की गतिविधियों में जुटे हुए थे । उनके कार्य करने की क्षमता से माकपा के गुंडों में काफी रोष बढ़ा। अपनी दुकान से घर लौटते समय एक रात मार्क्सवादी के आताताइयों ने उन्हें घेर लिया और मौत के घाट उतार दिया। केरल के इतिहास में वाडिक्कल रामकृष्णन की हत्या पहली राजनीतिक हत्या मानी जाती है। वामपंथी समर्थक भी इसे एक राष्ट्रवादी विचारधारा से जुड़े अनुयायी की राजनीतिक हत्या मानते हैं।

पी एस श्रीधरन नायर

7 सितंबर, 1969 को शहीद, कोट्टयम

यह वह समय था जब पोनकुरन्नम, कोट्टयम सीपीआई (एम) के कारण हिंसा का गवाह बना हुआ था। भारतीय जनता पार्टी के ज़िला संयुक्त सचिव श्रीधरण गंभीर रुप से घायल एक बच्चे को आयुर्वेदिक अस्पताल ले जा रहे थे। वामपंथी इस बात को समझे बिना उन्हें घसीटते हुए बाहर ले गए और उनकी हत्या कर दी।

वेलियाथुनायडू चंद्रशेखरन

10 फरवरी, 1970 को शहीद, एरनाकुलम

चंद्रशेखरन की हत्या परुर में 300 से ज्यादा सीपीआई (एम) के गुंडों ने कैथरम, परुर अलुवा में उस समय कर दी जब वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा लगा रहे थे। चंद्रशेखरन स्वयंसेवक और ज़िला शारीरिक प्रशिक्षण प्रमुख थे। शाखा में भाग ले रहे चंद्रशेखरन की नृशंस हत्या कर दी गई।

लीला बलिदानी वडिक्कल रामकृष्णन की पत्नी हैं। 47 साल पहले शादी के कुछ दिनों बाद ही वह अपने पति को खो चुकी हैं। उस समय कन्नूर में वामपंथी हिंसा और आतंक मचाए हुए थे।

वी रामकृष्णन

1 फरवरी, 1971 को शहीद, पलक्कड़

पुथु, परियम में आयोजित आरएसएस की शाखा में शरीक होने जा रहे रामकृष्णन की हत्या वामपंथी उग्रवादियों ने कर दी। रामकृष्णन आरएसएस के मंडल शारीरिक प्रमुख थे।

उन्नीछोइकुट्टी

13 मार्च, 1971 को शहीद, मलयप्पुरम

पेशे से मछुआरे उन्नीछोइकुट्टी आरएसएस के कार्यकर्ता थे। वह सबसे उम्र दराज़ कार्यकर्ता भी माने जाते थे। उनकी हत्या इस्लामिक रमपंथियों ने कर दी थी।

पी पी भक्तवालसन

1 नवंबर, 1973 को शहीद, त्रिसुर

आरएसएस मुल्लास्सरी पंचायत, चवक्कड़ के मंडल कार्यवाहक भक्तवालसन पर वामपंथी गुंडों ने हमला कर उनकी नृशंस हत्या कर दी। उनके शव को वामपंथियो ने कुंए में फेंक दिया था।

शंकरनारायणन

10 मार्च, 1974 को शहीद, त्रिसुर

10 मार्च 1974 की शाम में शंकर की हत्या वामपंथियों ने छुरा मारकर इसलिए कर दी क्योंकि वे आरएसएस से जुड़े हुए थे। यह हत्या कोडूवायुर में की गई।

एम टी कृष्णन

8 अप्रैल, 1974 को शहीद, पलक्कड़

आरएसएस से जुड़े होने के कारण छात्र कृष्णन की हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी थी। यह घटना कोडुवायुर में घटी थी।

करंगारी चंद्रन

8 नवंबर, 1974 को शहीद, वायनाड़

आरएसएस के सक्रिय कार्यकर्ता चंद्रन की हत्या इस्लामिक चरमपंथियो ने कर दी थी।

सुधींद्रनाथ पाई
24 दिसंबर, 1974 को शहीद, एरनाकुलम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कन्नामलाई के भाग सरकार्यवाहक सुधींद्रनाथ पाई पर वामपंथी गुंडों ने 8:30 बजे हमला बोलकर हत्या कर दी। सुधींद्रनाथ पाई शाखा में भाग लेकर अपने घर लौट रहे थे। उस समय सुधींद्रनाथ पाई प्री युनिवर्सिटी के छात्र थे।

छक्कन
25 अक्टूबर, 1978 को शहीद, त्रिसूर

दलित समुदाय से ताल्लुक रखने वाले छक्कन आरएसएस के कार्यकर्ता थे। दैनिक मजदूरी कर जीवन यापन करने वाले छक्कन कांग्रेसी गुंडो की नृशंसता का शिकार हुए। नृशंसता की पराकाष्ठा का अंदाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि छक्कन की हत्या उसके बेटे का सामने ही की गई। वह इस्लामिक चरमपंथियों द्वारा की जा रही आपराधिक वारदातों को रोकने के लिए लोगों से सहयोग मांग रहे थे।

पंथ्यक्कल पविथ्थरन
29 अक्टूबर,1978, को शहीद, कन्नूर

पविथ्थरन बेकरी का कारोबार करते थे। सुबह के समय बेकरी के लिए दूध जमा करने में वे व्यस्त थे। उसी समय वामपंथी गुंडों ने उन्हें घेर लिया। जान बचाने के लिए पविथ्थरन पास के एक घर में घुस गए, लेकिन वामपंथी गुंडों ने उन्हें घसीटकर बाहर निकाला और गला रेतकर हत्या कर दी।

पन्नियान्नुरु रविंद्रन
2 नवंबर,1978 को शहीद, कन्नूर

भरतीय मज़दूर संघ के कार्यकर्ता, रविंद्रन माही एक मिल में काम करते थे। उनकी हत्या घर लौटने के समय कर दी गई।

कुंजीरामन
15 जनवरी, 1979 को शहीद, कन्नूर

पेशे से एक वकील के क्लर्क कुनिहरमन आरएसएस के समर्थक थे। एक दिन कोर्ट जाते समय कोथूपुरमबू के पुल पर उनपर हमला कर दिया गया। तीन दिनों बाद उनकी मौत हो गई।

के विजयन
21 मार्च,1979 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस खंड के कार्यवाहक विजयन पेशे से बुनकर थे। धागा जमा करने के समय मार्क्सवादियों के गुंडों ने उसपर तेज़धार हथियार से हमला कर हत्या कर दी। हत्या के समय उसके साथ उसका भाई भी था।

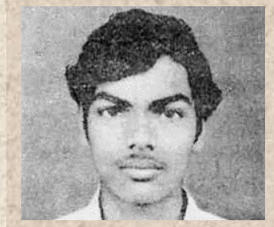

पनुनंदा चंद्रन
2 सितंबर, 1978 को शहीद, कन्नूर

चंद्रन का गांव मार्क्सवादियों का गढ़ माना जाता है। उसका परिवार भी मार्क्सवादी समर्थक ही माना जाता है, लेकिन वह अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़ गया। बाद में वह आरएसएस में शामिल होकर मुख्य शिक्षक बन गया। शाखा से लौटते समय मार्क्सवादी गुंडों ने हमला कर उसकी हत्या कर दी।

बालाकृष्ण करुप
3 अप्रैल, 1979, को शहीद, कन्नूर

मार्क्सवादी समर्थक परिवार से आने के बावजूद बालाकृष्ण आरएसएस से जुड़े हुए थे। वह कोट्टम डाकघर में पोस्टमास्टर थे। मार्क्सवादी गुंडे अक्सर उसे परेशान किया करते थे। बालाकृष्ण की हत्या डाकघर के अंदर ही कर दी गई।

हरिदसन
6 अप्रैल, 1979, को शहीद, कोझीकोड

आरएसएस के सक्रिय कार्यकर्ता हरिदसन की हत्या मार्क्सवादी गुंडों ने कर दी।

पी के रविंद्रन
14 नवंबर,1979, को शहीद, पथानमथिट्टा

आरएसएस के खंड कार्यवाहक रविंद्रन की हत्या दिनदहाड़े कर दी गई जब वह अपनी बहन को कोझेनचेरी कॉलेज से लाने के लिए जा रहा था।

के पी नानू मास्टर
6 मई, 1980, को शहीद, कन्नूर

भाजपा के सचिव नानू मास्टर पेशे से शिक्षक थे। वे अपने पड़ोस की एक दुकान पर बैठे थे तभी वामपंथी गुंडों ने बम फेंककर दहशत फैला दी और नानू की बेरहमी से हत्या कर दी।

सुरेंद्रन
15 सितंबर, 1980, को शहीद, कन्नूर

धर्मसुरेन के रुप में जाने जानेवाले सुरेंद्रन आरएसएस के कार्यकर्ता थे। पेशे से दिहाड़ी मज़दूर सुरेंद्रन को 13 सितंबर की रात वामपंथी गुंडों ने हमला कर घायल कर दिया। अस्पताल में दो दिनों तक भर्ती रहने के बाद उसकी मौत हो गई।

गोपालकृष्णन
18 सितम्बर, 1980 को शहीद, आलप्पुज़ा

आर ऐस ऐस खंड कार्यवाह नेदुमुडी, कुट्टनाड। गोपालकृष्णन बस में यात्रा कर रहे थे, तभी मार्क्सवादियों ने उन्हें रास्ते पर रोक दिया और ज़बरदस्ती बस से उतार कर उनकी दिन दहाड़े हत्या कर दी गयी थी।

करिमपील सतीशन
23 अक्टूबर,1980, को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के स्वयंसेवक सतीशन अस्पताल में भर्ती अन्य स्वयंसेवक को देखने जा रहे थे। उसी समय वामपंथी गुंडो ने हमला कर उन्हें जान से मार डाला। कोडियेरी बालाकृष्णन को अवैध रुप से उसकी हत्या का आरोपी बनाया गया।

पेरिनथटिल शशि
20 नवंबर,1980 को शहीद, कन्नूर

शशि आरएसएस का कार्यकर्ता था और पेशे से ऑटो रिक्शा चालक था। 17 नवंबर को वामपंथी गुंडों ने हमला कर उसे गंभीर रुप से घायल कर दिया। इलाज के दौरान ही 20 नवंबर को उसकी मौत हो गई।

कावियुर श्रीधरन
24 नवंबर, 1980 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के मंडल कार्यवाहक श्रीधरन पेरिनथटिल शशि के साथ ही 17 नवंबर को यात्रा कर रहे थे। वामपंथी हमलावरों के हमले में पेरिनथटिल शशि के साथ वे भी घायल हुए थे और शशि के साथ वे भी अस्पताल में भर्ती थे। लेकिन उनकी भी मौत हो गई।

मधुसूदनन
26 नवंबर, 1980, को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के मुख्य शिक्षक, मधुसूदनन कावियुर श्रीधरन के अंतिम संस्कार में भाग लेने जा रहे थे। रास्ते में उनकी बहस वामपंथी गुंडों से होने पर उन्हें मार डाला गया।

करयाट्टुपरम राजू
26 नवंबर, 1980 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के इस कार्यकर्ता ने सीपीएम छोड़कर राष्ट्रवादियों से हाथ मिलाया था। वामपंथी गढ़ माने जाने वाले अपने गांव में वह काफी सक्रिय थे। इससे वामपंथियों मे रोष बढ़ा और सबक सिखाने की चेतावनी दी गई। राजू की हत्या 26 नवंबर को कर दी गई।

पाराई नानू
26 नवंबर, 1980, को शहीद, कन्नूर

इस आरएसएस के कार्यकर्ता ने सीपीएम छोड़कर राष्ट्रवादियों से हाथ मिलाया था। करयाट्टुपरम राजू की हत्या वामपंथियो द्वारा किए जाने पर वह राजू को देखने जा रहे थे। वामपंथियो ने उनकी जीप रोककर चाकू से हमला कर उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

राजन
26 नवंबर, 1980 को शहीद, त्रिसूर

आरएसएस के मंडल कार्यवाहक राजन पर घर लौटते समय वामपंथी गुंडों ने हमला कर उन्हें जान से मार डाला। राजन की क्षतविक्षत लाश पहचान में भी नहीं आ रही थी। उसकी आंखें निकाल दी गई थी।

ए टी राघवन
27 नवंबर,1980 को शहीद, कन्नूर

वर्षों तक वामपंथी रहे राघवन आरएसएस से प्रभावित होकर राष्ट्रवादी गतिविधियों में सक्रिय थे। संगठन का काम करके लौट रहे राघवन पर वामपंथी नक्सलियों ने हमला कर उन्हें मार डाला।

पनुनंदा सुरेंद्रन
10 दिसंबर, 1980 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस मंडल के शारीरिक शिक्षक प्रमुख सुरेंद्रन की वामपंथी गुंडों ने बम फेंककर हत्या कर दी।

शिवन
4 अप्रैल, 1981 को शहीद, अलप्पुझा

गरीब हरिजन परिवार से आने वाले शिवन मज़दूर थे। उसका आरएसएस से जुड़ना मार्क्सवादियों को अच्छा नहीं लगा। दो वामपंथियो ने हत्या से पहले उसे चेतावनी दी थी। पुथेनचिरिल पुल पर उसे रोककर वामपंथी दोस्तों ने चाकू मारकर उसकी हत्या कर दी।

वी ए गंगाधरन
6 अप्रैल, 1981 को शहीद, कन्नूर

अकिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के तालूक सचिव गंगाधरन को कल्लास्सेरी के पंचायत कार्यालय में कर्ल्क की नौकरी मिली थी। नौकरी ज्वाइन करने के दूसरे दिन ही वामपंथी गुंडों से उसकी बहस हो गई जिसके दौरान चाकू मारकर हत्या कर दी गई।

पन्नीयानूर दिवाकरन
7 अप्रैल, 1981 को शहीद, कन्नूर

लंबे समय से स्वयंसेवक रहे दिवारन पेशे से दर्ज़ी थे। एक दिन वामपंथी गुंडों ने दिनदहाड़े दुकान पर ही उसपर हमला बोलकर हत्या कर दी।

एम के लक्ष्मणन
17 अप्रैल, 1981 को शहीद, कन्नूर

थालेस्सरी भाजपा मंडल के अध्यक्ष लक्ष्मणन 1 अप्रैल को जब चेराक्करा स्थित अपने ससुराल में थे तभी उनपर हमला किया गया। गंभीर रुप से घायल एम के लक्ष्मणन की मौत 17 अप्रैल को हो गई।

पोक्कन
14 सितंबर, 1981, को शहीद, कोझीकोड

वडागरा में भाजपा के कार्यकर्ता पोक्कन कृषि कार्य से जुड़े हुए थे। वामपंथी गुंडों से सामना होने के बाद गुडों ने पहले उसे घेरा और बाद में गोली मारकर हत्या कर दी।

राजगोपालन
1 अक्टूबर, 1981, को शहीद, एरनाकुलम

आरएसएस मंडल के शारीरिक शिक्षक प्रमुख राजगोपालन पर जिस समय मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया था, उस समय वे अपने दोस्तों के साथ कडुंगल्लुर जंक्शन पर बातचीत कर रहे थे। सबसे दुखद बात यह है कि पुलिस के सामने ही उसपर चाकू से हमला किया गया। पुलिस ने बीचवचाव करने की पहल नहीं की।

शिवरमण
10 जनवरी, 1982, को शहीद, त्रिसूर

भाजपा मज़दूर संघ से जुड़े शिवरमण मुख्य मज़दूर का काम करते थे। वैचारिक मतभेद होने के कारण वामपंथी संगठन से जुड़े लोग लगातार धमकी दे रहे थे। त्रिकुर में एक ट्रक से माल उतारते समय सीटू के सदस्यों ने उनकी हत्या कर दी।

टी एन दुर्गादसन
20 जुलाई, 1981 को शहीद, कोल्लम

आरएसएस के प्रचारक दुर्गादसन मल्लप्पुरम के रहने वाले थे। निरामेल एनएसएस कॉलेज के प्रिंसिपल से एक स्वयंसेवक के बेटे के एडमिशन की बात बताकर घर लौट रहे थे। दुर्गादसन का सामना एसएफआई के गुंडों से हो गया। कॉलेज परिसर में ही दिन के उजाले में उसकी हत्या कर दी गई। दुर्गादसन के पिता टी एन भास्करण संघ के प्रचारक रह चुके थे।

के पी भास्करन
23 जनवरी, 1982 को शहीद, कन्नूर

इस भाजपा के कार्यकर्ता ने सीपीएम छोड़कर राष्ट्रवादियों से हाथ मिलाया था और ये अहसदुर्ग मंडलम के उपाध्यक्ष थे। भास्करन के आह्वान पर मार्क्सवादी पार्टी के कई सदस्य भाजपा में शामिल हुए थे। उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को भास्करन पार्टी के वरिष्ठ सदस्यों के कार्यक्रम में भाग लेकर घर लौट रहे थे। कानुजंगाडु के पास मार्क्सवादियों ने पत्थर से कुचलकर उनकी हत्या कर दी।

एन रवि
1 मार्च, 1982 को शहीद, पथानमथिटा

आरएसएस के आदुर शाखा के शारीरिक शिक्षण प्रमुख रवि जनजागरण काम में व्यस्त थे। आदुर के मंदिर के पास उनका सामना वामपंथी कार्यकर्ताओं से हो गया। रवि पर हमला कर उन्हें मार डाला गया।

के के गणेशन
4 अप्रैल, 1982 को शहीद, ईरीनजालाकुड्डा

भाजपा युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष की नृशंस हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी।

वेणु और राजू
14 अक्टूबर, 1981 को शहीद,अलप्पुझा

दोनों भाई आरएसएस के कार्यकर्ता थे। दोनों की उम्र क्रमशः 14 और 17 साल थी। बालागोकुलम में दोनों सक्रिय थे। दोनों भाई जब फसल लगी खेत में काम कर रहे थे तभी वामपंथी गुंडों ने घेर लिया और मौत के घाट उतार दिया।

विश्वमबरम
18 जुलाई, 1982 को शहीद, अलप्पुझा

आरएसएस के कार्यवाहक विश्वमबरम दलित समुदाय से आते थे। कुट्टूनाड तालूक में वामपंथियो का गढ़ है। शाखा में भाग लेने जा रहे विश्वमबरम की हत्या मार्क्सवादियो ने कर दी । हालांकि जान बचाने के लिए विश्वमबरम ने नदी में छलांग लगायी, लेकिन वामपंथियो के पत्थर मारने से वह जान बचाने में असमर्थ साबित हुए।

प्रदीप
8 अप्रैल, 1983 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के कार्यकर्ता प्रदीप पहले सीपीआई (एम) का सदस्य था। वह स्थानीय बीड़ी फैक्टरी में मज़दूर था। वामपंथियों ने फैक्टरी में काम कर रहे प्रदीप पर बम फेंक दिया और आतंक मचाकर उसकी हत्या कर दी।

सत्यदेवन
1 मई, 1983 को शहीद, त्रिसूर

भाजपा के कार्यकर्ता सत्यदेवन की हत्या वामपंथियों ने कर दी थी।

अय्यप्पन
3 अगस्त, 1983 को शहीद, कोच्ची

नयाठोड़, एरनाकुलम आरएसएस के खंड कार्यवाहक अय्यप्पन पहले प्रचारक भी रहे थे। वह हरिजन परिवार से आते थे और कृषि कार्य करते थे। अय्यप्पन को कई बार जान से मारने की धमकी मिली थी। वह इसकी सूचना पुलिस को दे चुके थे। लेकिन उनकी बातों को पुलिस ने गंभीरता से नहीं लिया। उस दुर्भाग्यपूर्ण सुबह को डीवाईएफआई के सदस्यों ने कावरप्पारमबू जंक्शन पर उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

वासवन
22 अक्तूबर, 1983 को शहीद, आलप्पुज़ा

कायमकूलम के पास मुथुकुलम से आरएसएस कार्यकर्ता वासवन को कम्युनिस्ट गुण्डों द्वारा तब अपहरण कर लिया गया जब वे शाखा में भाग लेने के बाद घर की ओर लोट रहे थे। उन्हें एक दूर दराज के स्थान पर ले जाया गया, और जिस तरह से कप्तान सौरभ कालिया की हत्या पाकिस्तानी आतंकवादियों ने की, ठीक उसी प्रकार इनकी क्रूर हत्या कर दी गयी थी। वासन का मृत शरीर अगले दिन पास के दलदली धान के भूमि में गड़ा हुआ बरामद किया गया था।

पिनराई चंद्रन
4 जनवरी, 1984 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के पिनराई नगर तालुक कार्यवाह, चंद्रन को कम्युनिस्ट हमलावरों द्वारा एक बम हमले में मारा गया था।

उन्नीकृष्णन
20 मार्च, को शहीद, एरनाकुलम

भारतीय मज़दूर संघ के सदस्य उन्नीकृष्णन की हत्या कोचिन रिफाइनरी, अंबालामुगल के अंदर कर दी गई।

सतीशन टी
8 मई, 1984 को शहीद, त्रिसूर

आरएसएस के तालूक कार्यवाहक सतीशन इंडियन बैंक के कर्मचारी थे। जब वे घर लौट रहे थे, तभी एसएन थिएटर के पास वामपंथी गुंडों ने उनपर हमला कर मार डाला।

गोपालकृष्णन
18 दिसंबर, 1984 को शहीद, मलापुरम

इन्होंने मंडल शारीरिक प्रमुख गोपालकृष्णन वालाचेरी में आयोजित विशाल हिंदू सम्मेलन में 18 दिसंबर को हिस्सा लिया था। उनकी हत्या इस्लामी चरमपंथियों ने कर दी थी।

के लोहिताक्षण
16 दिसंबर, 1984 को शहीद, कन्नूर

पुथालोट्टू शाखा के आरएसएस के शारीरिक मुख्य शिक्षक, लोहितकक्षण की हत्या मार्क्सवादियों ने उनके घर पर ही कर दी थी।

के पी सोमन
18 जनवरी, 1984 को शहीद, आलप्पुज़ा

पिरिम्बलम पंचायत समिति के भाजपा के पदाधिकारी (चेरतलई मंडलम), सोमन की मार्क्सवादी गुण्डों ने हत्या कर दी थी।

धर्मजन और यशोदा

13 जून, 1982 को शहीद, अलप्पुझा

पूर्व सैनिक धर्मजन पहले सीपीआई (एम)समर्थक थे। आरएसएस से प्रभावित होकर वे भाजपा में शामिल हुए। वे मंडल समिति के सदस्य भी थे। उनकी दोनों बेटियां राष्ट्र सेविका समिति में सक्रिय थीं। धर्मजन और उनकी पत्नी यशोदा की हत्या राजनीतिक कारणों में शामिल हैं। घटना सुबह 9 बजे की है जब दोनों का सामना वामपंथियों से हुआ। साइकिल की चेन से उनपर हमला किया गया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया । उनकी बड़ी बेटी गिरिजा संयोग से भागने में कामयाब रही और अस्पताल में भर्ती हो गई। गिरिजा पर पहले भी वापंथी गुंडों ने हमला किया था। यह मामला कोर्ट में चल रहा है। वामपंथी सुलह करने का प्रयास कर रहे थे।

अर्जुनन पिल्लई

6 अक्टूबर, 1985 को शहीद, पथानमथिट्टा

स्वयंसेवक अर्जुनन क्षेत्र समरक्षण समिति के सदस्य थे। उनकी हत्या चाकू मार कर दी गई।

पी सी श्रीधरण

7 जुलाई, 1986, को शहीद, त्रिसूर

आरएसएस के शाखा प्रमुख श्रीधरण दलित और पेशे से मज़दूर थे। उन्होंने काफी संख्या में वामपंथी सदस्यों को आरएसएस से जोड़ा था। 27 जून को वापंथी गुंडों ने उसपर हमला कर गंभीर रुप से घायल कर दिया। 7 जुलाई को उसकी मौत हो गई।

सी. गणेशन

28 अक्टूबर, 1985, को शहीद, पय्यन्नूर

दैनिक मज़दूर सी. गणेशन भाजपा के सक्रिय सदस्य थे। 19 अक्टूबर को लोहे की छड़ से इस्लामिक चरमपंथियों ने हमला कर उन्हें घायल कर दिया। 28 अक्टूबर को उन्होंने दम तोड़ दिया।

के टी कणकण

22 जुलाई, 1986, को शहीद, कन्नूर

भारतीय मज़दूर संघ के तालूक सचिव कणकण पेशे से ऑटो ड्राइवर थे। 9 बजे सुबह वामपंथी गुंडों ने चाकू मारकर उनकी हत्या कर दी।

अनिल कुमार

2 दिसंबर, 1985 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

अलमपोट्टा शाखा के स्वयंसेवक की हत्या वामपंथियों ने काम से लौटते समय कर दी।

मणिकंडन

23 मई ,1987, को शहीद, पालक्कड

गरीब परिवार से आने वाले मणिकंडन प्रमुख लोडर थे और आरएसएस से जुड़े हुए थे। 23 मई की सुबह सीटू के सदस्यों ने उनपर हमला कर मार डाला।

सुधाकरण

10 जून, 1985, को शहीद, कोल्लम

भाजपा के सदस्य सुधाकरण की हत्या गुंडों ने चावरा में कर दी थी।

मुरली और कलाधरण

14 जून, 1982 को शहीद, अलप्पुझा

दोनों आरएसएस के सक्रिय सदस्य थे। मुरली चेन्नीथाला के मंडल कार्यवाहक थे। अलप्पुझा धर्मरंजन और यशोदा की हत्या से उबर नहीं पाया था। एक स्वयंसेवक के माता पिता पर सीपीएम के गुंडों ने हमला किया था। जिसका शोर सुनकर मुरली और कलाधरण भारी भीड़ लेकर वहां पहुंचे और मामले की तहकीकात कर रहे थे। तत्काल समझौते के बाद दोनों घर लौट रहे थे। रास्ते में मंदिर में दोनों दर्शन के लिए रुके। वहां वामपंथी गुंडे आ घमके और पुजारी के हाथ-पैर बांधने के बाद मुरली को मौत के घाट उतार दिया। कलाधरण किसी तरह वहां से भागने में सफल रहा, लेकिन वामपंथी गुंडों ने उन्हें खोज निकाला और मार डाला।

पी के मधुलाल

20 जुलाई, 1987, को शहीद , कोट्टायम

आरएसएस के मंडल बाल प्रमुख मधुलाल चंगास्सरी के पयीप्पडू के रहने वाले थे। शाखा से घर लौटते समय वामपंथी गुंडों ने उनकी हत्या कर दी।

हरिहर अय्यर

6 नवंबर, 1987, को शहीद, तिरुअनंतपुरम

आरएसएस के कार्यकर्ता हरिहर कपड़े के शो रुम में काम करते थे। साथ ही मातृभूमि और जन्मभूमि अखबार भी बेचा करते थे। डीवाईएफआई के गुंडों ने उनकी हत्या दिनदहाड़े कर दी। अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला हरिहर उस समय मात्र 18 साल का था।

गंगाधरण नायर

26 अगस्त, 1987, को शहीद, तिरुअनंतपुरम

उल्लूर पंचायत में सीपीएम का गढ़ है। गंगाधरण व उनके परिवार ने मेहनत से भाजपा में अपनी स्थिति अच्छी बना ली। उनका बेटा भी आरएसएस का सदस्य था। उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को पूरा परिवार टेलीविजन देख रहा था। वामपंथी गुंडों ने उनके घर पर धावा बोल दिया और गंगाधरण को मौत के घाट उतार दिया।

टी पी दामोदरण

18 नवम्बर, 1987, को शहीद , कन्नूर

भाजपा के बूथ कमेटी अध्यक्ष दामोदरण सीपीएम का दामन छोड़कर आए थे। उनकी हत्या रात के समय वामपंथी गुंडों ने कर दी।

शिवरमण

26 सितंबर, 1987, को शहीद, त्रिसूर

विश्व हिंदू परिषद के सक्रिय सदस्य शिवरमण पूर्व सैनिक थे। छूआछूत के खिलाफ उन्होंने काफी लड़ाई लड़ी। उनकी बढ़ती लोकप्रियता से वामपंथी घबरा गए और उनकी हत्या कर दी।

एस डी रंगनाथन

18 नवंबर, 1987 को शहीद, पालाक्कड

भारतीय मज़दूर संघ कोझीकोड के यूनिट सचिव रंगनाथन पहले सीटू से जुड़े हुए थे। राष्ट्रवादियों से हाथ मिलाने पर सीटू के सदस्यों ने उन्हें मार डाला।

मुरकीन्नाकारा थंपी

7 दिसंबर ,1987 को शहीद, त्रिसूर

ओल्लूर चुनाव क्षेत्र के आरएसएस सदस्य थंपी की हत्या मार्क्सवादियो ने कर दी थी।

के राजन और एन वी सुब्रमणियन

21 जुलाई, 1982 को शहीद, त्रिसूर

के राजन और एन वी सुब्रमणियन दोनों की हत्या मध्य रात्रि में मार्क्सवादी गुंडों ने कर दी थी। दोनों मछुआरों के इलाके काजीबरम में रहते थे। इस क्षेत्र में आरएसएस की पकड़ मजबूत हो रही थी जोकि वामपंथी समर्थकों को पसंद नही आया। वामपंथी गुंडे आए और इलाके में आरएसएस कार्यकर्ताओं के घरों पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी और हमले कर दहशत फैला दी। राजन और सुब्रमणियन को घर से बाहर नहीं निकलने दिया गया। आतंकियों ने उनपर पेट्रोल डालकर आग के हवाले कर दिया जिसके कारण वे मर गये।

विजयन

10 जनवरी, 1988 को शहीद, कोल्लम

भारतीय मज़दूर संघ के सदस्य विजयन की हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी थी।

कडक्कल जयन

16 फ़रवरी, 1988 को शहीद, कोल्लम

रामाचंद्रन पिल्लै उर्फ जयन, उन लोगों में से एक थे जिन्होने कडक्कल जो की एक मार्क्सवादी गढ़ हैं उसमें भाजपा की गतिविधियों को प्रारंभ किया था। कडक्कल मंदिर में जब उत्सव पूरे जोर शोर से चल रहा था, उसी दौरान मार्क्सवादी गुण्डों द्वारा चाकू मारकर उनकी हत्या की गयी थी।

कोय्यडन विश्वनाथन

3 मार्च, 1988 को शहीद, कन्नूर

भाजपा के सक्रिय सदस्य विश्वनाथन की हत्या अज्ञात लोगों ने कर दी थी। उन्होंने कन्नूर नगर निगम का चुनाव लड़ा था।

वेणुपला शिवरमण नायर

5 अप्रैल, 1988 को शहीद, पथनमथिट्टा

15 मार्च को भारत बंद के दिन वामपंथी गुंडों ने तिरुवाला के मंदिर पर आक्रमण किया था। वामपंथी लगातार मंदिर के पास हुड़दंग मचा रहे थे। उसी हुड़दंग में 22 मार्च को वेणुपला की हत्या कर दी गई।

थिरुमुलपुरम मोहनन

7 मई, 1988 को शहीद, पथनमथिट्टा

सीपीएम के पूर्व सदस्य मोहनन आरएसएस से जुड़ गए। वे श्री नारायण सेवा संघम के सक्रिय सदस्य थे। ओनम के दिन वामपंथी गुंडों ने नारायण गुरुदेवन की मूर्ति से छेड़छाड़ की। मोहनन के नेतृत्व में लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया। इसका बदला लेने के लिए वामपंथियों ने योजना बनाई। शाखा में भाग लेने जा रहे मोहनन की हत्या कर दी गई।

वी. राधाकृष्णन

11 जुलाई, 1988 को शहीद, पालाक्कड

भाजपा के सक्रिय सदस्य राधाकृष्णन को बस से खींचकर वामपंथियों ने मौत के घाट उतारा था।

पुष्पराजन

30 सितंबर, 1988 को शहीद, पथनमथिट्टा

आरएसएस के खंड कार्यवाहक पुष्पराजन के घर पर वामपंथी गुंडों ने तोड़फोड़ की और उनकी हत्या कर दी।

अनिल कुमार

2 दिसंबर, 1988 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

पेरुमबथुर शाखा का स्वयंसेवक अनिल दैनिक मज़दूर था। घर लौटते समय उसकी हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी।

बालाकृष्णन

17 अप्रैल, 1989, को शहीद, अलप्पुझा

आरएसएस के मंडल शारीरिक प्रमुख बालाकृष्णन की हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी।

ओनम के दिन मुरिक्कुंपझा नरसंहार

राजेश, ललिकुट्टन और वेणु

17 अगस्त, 1988 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

1988 के मुरिक्कुंपझा के दिल दहला देने वाले नरसंहार ने पूरे राज्य को शोक में डुबा दिया था। मलयालम माह चिंगम के पहले दिन

(अथम-ओनम पर्व का पहला दिन) वामपंथी गुंडों ने आतंक फैलाकर आरएसएस के तीन कार्यकर्ता राजेश, ललिकुट्टन और वेणु की हत्या कर दी। ललिकुट्टन और वेणु पेशे से पलंबर थे,जबकि राजेश मल्लास्सरी शाखा के मुख्य शिक्षक थे।

दहशत तब फैली जब वामपंथी गुंडों ने मुरिक्कींपुझा मंदिर पर बम फेंका।

ललिकुट्टन उनकी मंशा को नहीं समझ पाए । वह गंभीर रुप से घायल होने के कारण भागने में असमर्थ हो गए। आतंकियो ने उन्हें मंदिर की छत से बाहर निकाला और जंगल ले जाकर मार डाला।

राजेश और वेणु का अपहरण कर लिया गया और मौत के घाट उतार दिया गया। तीनों के शव घटना के एक दिन बाद अज्ञात जगह पर मिले। ललिकुट्टन का शव पूरी तरह क्षत-विक्षत था। वेणु का शव फसल के बीच पाया गया। इस घटना से दो दिन पहले स्थानीय वामपंथी नेताओं ने
खुलेआम चेतावनी दी थी कि वे ओनम के दिन आरएसएस समर्थकों को नही छोड़ेंगे। तीनों को श्रद्धांजलि देने के लिए आरएसएस के सदस्य 1988 से ओनम के दिन उपवास रखते हैं।

सशींद्रण
8 जुलाई , 1989 को शहीद, आलप्पुज़

वालिया कलावुर के स्वयंसेवक सशींद्रण की हत्या100 वामपंथी गुंडों ने शाखा के दौरान कर दी। केरल की यह दूसरी घटना थी जब आरएसएस की शाखा पर हमला बोला गया

के रमेशन
17 जुलाई , 1989 को शहीद, कोझीकोड

भाजपा के सक्रिय सदस्य रमेशन बायपोर में दुकान पर चाय पी रहे थे तभी इस्लामिक संगठन ने उसकी हत्या कर पूरे इलाके में दहशत फैला दी।

टी के विश्वनाथन
3 अगस्त, 1989 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के मंडल कार्यवाहक, विश्वनाथन सीपीएम समर्थित परिवार से आते थे। लेकिन कॉलेज के दिनों से ही वह आरएसएस की विचारधारा से प्रभावित थे। ई के नायनार की जन्मभूमि अरोली वामपंथियो का गढ़ माना जाता है। विश्वनाथन वहां भाजपा की जडें जमा चुके थे। इसके परिणामस्वरुप ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की जीत स्कूलों में हुई। इससे उत्तेजित वामपंथियों ने उनकी हत्या कर दी।

आर नकुलन
9 अगस्त, 1989 को शहीद, कोल्लम

आरएसएस के पल्लिकल शाखा के स्वयंसेवक नकुलन पहले वामपंथी संगठन से जुड़े हुए थे। दलित समुदाय के लोगों को आरएसएस से जोड़ने में वे कामयाब रहे। बदले की कार्रवाई में वामपंथियों ने उनकी हत्या उनकी चाय की दुकान के सामने कर दी।

एमटीके करुणन
17 मई, 1985 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस के मंडल कार्यवाहक करुणन की हत्या अपने घर लौटते समय कर दी गई। शाम के समय वह अस्पताल में भर्ती अपने पड़ोसी को देखकर आ रहे थे। पुक्कम नहर के पास वामपंथियो ने उन्हें घेर लिया और मार डाला।

सतीशन
13 अप्रैल, 1990 को शहीद, कोल्लम

कोल्लाक्कल शाखा के सक्रिय सदस्य सतीशन की हत्या शाखा में भाग लेकर घर लौटते समय कर दी गई। वामपंथी गुंडों के हमले के समय उनका भाई भी साथ था, वह भी गंभीर रुप से घायल हुए थे। सतीशन की मौत हमले की रात में हुई थी। रीढ़ की हड्डी में ज़ख्म गहरा था जिसके कारण उसे अस्पताल में भर्ती किया गया था। दोनों भाई दलित थे और सीपीएम के कार्यकर्ता रह चुके थे। उनके आरएसएस से जुड़ने पर स्वाभाविक रुप से दलित समुदाय के वामपंथी कार्यकर्ता उनके साथ चले गए। इसका बदला लेने के लिए यह हत्या की गई।

चंद्रशेखरन नायर
15 जून, 1990 को शहीद, कौट्टम

भारतीय मज़दूर संघ के सक्रिय सदस्य चंद्रशेखरन टिंबर की फैक्ट्री में मज़दूर थे। उसकी हत्या अज्ञात लोगों ने कर दी।

प्रेमकुमार
21 जुलाई, 1990 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

आरएसएस के कार्यवाहक प्रमुख अपने क्षेत्र में असामाजिक तत्त्वों का कड़ा विरोध करते थे। 21 जुलाई की रात वामपंथी गुंडों ने उनपर हमला किया। अगले दिन उनकी मौत हो गई।

सुरेश कुमार
1 सितंबर, 1990 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

आरएसएस के कार्यकर्ता सुरेश की हत्या अज्ञात लोगों ने कर दी।

सी पी वलसाराज
17 अक्टूबर, 1990 को शहीद, मलप्पुरम

वलसाराज और उसके भाई आरएसएस के कार्यकर्ता थे। वलसाराज की हत्या इस्लामिक चरमपंथियो ने कर दी।

कन्नन
20 अक्टूबर, 1990 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

कन्न और अन्य स्वयंसेवक आरएसएस के कार्यक्रम में भाग लेकर घर लौट रहे थे। वामपंथी गुंडों के हमले में कन्न की मौत घटनास्थल पर ही हो गई जबकि अन्य गंभीर रुप से घायल हो गए।

राजेंद्रन
21 अक्टूबर, 1990 को शहीद, कोट्टयम

आरएसएस के मंडल शारीरिक प्रमुख राजेंद्रन की हत्या अज्ञात गुंडों ने कर दी।

सुनील
7 दिसंबर, 1990 को शहीद, कोल्लम

आरएसएस के शाखा प्रमुख शिक्षक सुनील की हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी।

माणिकंदन
4 मार्च, 1991 को शहीद, पल्लकड

भारतीय मज़दूर संघ के सदस्य माणिकंदन पहले सीपीएम के सदस्य थे। वह प्रमुख लोडर था। उसकी हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी थी।

के के दिवाकरण
4 मार्च, 1991 को शहीद, तिसूर

पूर्व सैनिक दिवाकरण भाजपा के नट्टीका मंडल के प्रमुख थे। उनकी हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी थी।

भास्करण
12 मार्च, 1991 को शहीद, पल्लकड

आरएसएस के शाखा प्रमुख शिक्षक भास्करण की हत्या वामपंथी गुंडों ने घर लौटते समय कर दी थी।

प्रदीप
19 अप्रैल, 1991 को शहीद, अलप्पुझा

आरएसएस के मंडल शारीरिक शिक्षण प्रमुख बालाकृषणन की कड़ी मेहनत से आरएसएस की जड़ें कावलम में मजबूत हुईं। विश्व हिंदू परिषद सदस्यता अभियान कार्यक्रम से लौटते समय उनकी हत्या वामपंथी गुंडों ने कर दी थी। बालाकृष्णन की शादी तय हो चुकी थी।

कौशल्या
22 मई, 1991, को शहीद, कोट्टयम

भाजपा महिला मोर्चा मंडलम उपाध्यक्ष कौशल्या मछुवारे के परिवार से आती थीं। सीपीआई के गुंडों ने उसके घर घुसकर उसकी हत्या कर दी। खून से लथपथ कौशल्या को अस्पताल ले जाने का प्रयास किया गया लेकिन गुंडों ने रोककर दोबारा हमला किया।

पद्मनाभन
23 मई, 1991, को शहीद, अलप्पुझा

वामपंथी संगठन से जुड़े पद्मनाभन पहले भाजपा के सक्रिय सदस्य थे। उनकी हत्या वायलार में कर दी गई थी।

विजयन
10 जनवरी, 1992 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

भाजपा कार्यकर्ता और वायमुल्ला के रहने वाले विजयन की हत्या पुनथुरा हिंसा के दौरान कर दी गई थी।

सुरेश कुमार
10 जनवरी, 1992 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

भाजपा कार्यकर्ता सुरेश की हत्या इस्लामिक चरमपंथियो ने पुनथुरा हिंसा के दौरान कर दी थी।

विजयन
10 जनवरी, 1992 को शहीद, एरनाकुलम

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के तालुक सचिव विजयन कोचीन कॉलेज के प्रिंसिपल के ऑफिस से बाहर निकल रहे थे, उसी समय एसएफआई के सदस्यों ने उनपर चाकू से हमला किया। चाकू उनके रीढ़ की हड्डी में लगा जिसके कारण वे 20 साल तक बिस्तर पर पड़े रहे। 10 जनवरी को उनकी मौत हो गई।

साजन
3 मई, 1992 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

आरएसएस के शाखा मुख्य शिक्षक, वट्टापारा के साजन के घर पर वामपंथी गुंडों ने बम फेंककर हमला कर दिया। साजन घर से बाहर निकला तो उसकी गुंडों से गरमागरम बहस हो गई। गुंडों ने चाकू मारकर उनकी हत्या कर दी।

आदर्श लोक के लिए हिंसा का मार्ग

-मीनाक्षी लेखी
सांसद, नई दिल्ली

"हमें (विरोधियों को कैसे मारा जाता है) बंगालियों से सीखना चाहिए । वे रक्त की एक भी बूंद बहाए बिना इसे करते हैं । अपहरण(प्रतिद्वंदियों का) करते हैं और उसे नमक की एक बोरी में बंदकर गहरे गड्ढे में दफन कर देते हैं । दुनिया (यहाँ तक कि) को ऐसे खूनखराबे (पीड़ितों) के फोटो या समाचार के बारे में पता नहीं चल पाता।" यह बात अब्दुल्लाकुट्टी के हवाले से विजयन ने बतायी।

विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया गया। भारत में कम्युनिस्ट नेतृत्व का वैचारिक या भौतिक आधार भूमिगत नस्ल का नहीं थे । वे कभी भी जंगलों की कठिनाई के बारे में नहीं जान पाए। उनमें से अधिकांश विशेषाधिकार प्राप्त हैं, जो ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज में अपनी शिक्षा प्राप्त किए हुए थे। वे पूर्व ब्रिटिश स्वामी द्वारा पढ़ाए गए पाठ को याद कर कट्टर कम्युनिस्टों के रूप में भारत लौटे थे। ये तथाकथित कम्युनिस्ट पूरी तरह से पूर्व औपनिवेशिक काल के ब्रिटिश एजेंडे के साथ गठबंधन कर चुके थे। वाम-उदारवाद को उपकरण बनाकर औपनिवेशिक शासन की वैधता स्थापित करके की प्रक्रिया में भारत के अतीत के प्रति गर्व करने की भावना को नष्ट कर दिया गया ।

भारत में वामपंथी आंदोलन आधिकारिक तौर पर भारत (सीपीआई) की कम्युनिस्ट पार्टी के गठन के साथ 1920 के दशक में ऐसे नास्तिकों द्वारा शुरू हुआ जो ऊंची जाति के हिंदुओं के मुखौटे लगाकर सामने आये। भारत के कम्युनिस्ट नेता ज्यादातर अंग्रेजी शिक्षित अभिजात वर्ग से आते हैं। उनके लिए, साम्यवाद (या मार्क्सवाद) एक विचारधारा है जो जनता की मदद के लिए नहीं है, बल्कि ऐसी सनक के रूप में है जो उन्हें आम लोगों से अभिजात वर्ग के रूप में अलग रखती है। किसी भी बात के लिए वे हमेशा पश्चिम की ओर देखते हैं।

जब भारत अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष कर रहा था, उस समय भी कम्युनिस्ट जर्मनी, रूस, ब्रिटेन और यहां तक कि पाकिस्तान जैसे विदेशी सरकारों के एजेंट के रुप में जाने जाते थे ! हालांकि, कम्युनिस्टों के ऐसे सभी राष्ट्रविरोधी आंदोलनों की विध्वंसकारी भूमिका को एक दार्शनिक और बौद्धिक आधार प्रदान किया गया है। भाकपा नेतृत्व ने द्विराष्ट्र सिद्धांत का समर्थन किया और इस तरह मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग पूर्ण हुई। यहां तक कि सिखों के अलग देश की मांग को कम्युनिस्टों ने स्वीकार किया। भारत छोड़ो आंदोलन के समय कम्युनिस्टों की भूमिका जग जाहिर है।

चीन के युद्ध के दौरान भाकपा की भूमिका सबसे प्रतिकूल रही | "अध्यक्ष माओ, हमारा अध्यक्ष" घोषित करने से लेकर गुप्त रुप से चीन का साथ देने तक का काम किया । आजादी के बाद, कम्युनिस्टों ने हैदराबाद के निज़ाम की सरकार के साथ एक सौदा कर लिया और पाकिस्तान की मदद से हैदराबाद के विलय के खिलाफ भारत से संघर्ष के लिए रजाकारों से हाथ मिलाया।

कम्युनिस्टों ने 1947 में भारत के विभाजन का समर्थन किया था | 1962 में चीन युद्ध के दैरान चीन का समर्थन , 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण का विरोध और 1964 में चीन का समर्थन किया था | और नेताजी सुभाष चंद्र बोस को 'तोजो का कुत्ता' कहा था, नेताजी के चेहरे को गधे के कार्टून के रूप में बनाया था। 1967में सीपीआई (एम) के नेतृत्व में बनी संयुक्त मोर्चा सरकार के कार्यकाल के दौरान कानू सान्याल के नेतृत्व में नक्सलबाड़ी

हाल ही में, कन्नूर के पिनारयी गांव की मेरी यात्रा के दौरान, मैं इस बात की साक्षी रही कि कैसे एक शोकजनक राज्य के निवासियों का दैनिक जीवन आतंक के साए में गुज़रता है। बेशर्म कम्युनिस्ट गुंडों ने छोटे बच्चों को भी नहीं छोड़ा है। छोटे बच्चों, जो मास्टर के.टी. जयकृष्णन की हत्या के गवाह बने, से लेकर सात साल के कार्तिक, जिसके हाथ 2016 के चुनाव में जीत के बाद काट दिए गए थे ,ने लाल आतंक की बर्बरता को भुगता है। जब ऐसा व्यक्ति, जिसने अपने
साथी दलों के सदस्यों से कहा कि खून बहाने से बचने के लिए विरोधियों को ज़िन्दा ही नमक से भरी बोरी में बांधकर दफन किये जाने का बंगाल मॉडल अपनाया जाए, राज्य पर शासन कर रहा है तब केवल भगवान ही 'देवताओं की इस भूमि' को बचा सकते हैं। पिनारयी विजयन सरकार से केरल में न्याय और शांति की उम्मीद करना एक चोर को अपने घर की कुंजी देने की तरह ही है।

केरल में 1957 के बाद से, सीपीआई (एम) ने मतदाताओं पर नियंत्रण रखने के लिए विधानसभा के निर्वाचित प्रतिनिधियों का इस्तेमाल किया। हत्या की राजनीति और मार्क्सवादी फासीवाद से मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए इसने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ एक प्रभावशाली राजनीतिक पार्टी के रूप में शक्ति को बनाए रखा। ख़ासकर उत्तरी केरल में कई भाजपा और आरएसएस कार्यकर्ताओं का राज्य में क़त्ल कर दिया गया।

एकमात्र केरल राज्य है जहां राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को दबाने के लिए राज्य द्वारा प्रायोजित राजनीतिक हिंसा कभी नहीं रुकी। 1997 में बुद्धदेव भट्टाचार्य ने विधानसभा में एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि 1977 (जब वे सत्ता में आए थे) और 1996 के बीच 28,000 राजनीतिक हत्याएं हुई थीं। 1997 और 2009 के बीच कुल 27,408 हत्याएं हुईं। इस तरह से कुल 55,408 लोगों का कम्युनिस्ट शासन द्वारा सफ़ाया किया गया। इसका मतलब है कि एक वर्ष में औसतन 1,787 लोग, मास में औसत 149 और प्रतिदिन पांच लोग राजनीतिक हत्या का शिकार हुए। दूसरे शब्दों में, बंगाल में हर चार घंटे 50 मिनट में एक व्यक्ति राजनीतिक कारणों से मौत के घाट उतारा गया।

कम्युनिस्ट पार्टी से संसद के एक पूर्व सदस्य एपी अब्दुल्लाकुट्टी ने आरोप लगाया कि उस समय के केरल सीपीएम के राज्य सचिव पिनारयी विजयन ने पार्टी से कहा था कि 'बंगाल पद्धति' से रक्त की एक बूंद बहाए बिना राजनीतिक दुश्मनों की हत्या के तरीक़े का अनुसरण करें। अब्दुल्लाकुट्टी लिखते हैं कि- कन्नूर में अझीकोडन स्मारक पार्टी कार्यालय में 5 मार्च 2008 को आयोजित पार्टी की एक बैठक में विजयन ने यह बात कही कि बंगालियों से हमें सीखना चाहिए (विरोधियों को मारने के लिए कैसे) कि वे कैसे रक्त की एक बूंद बहाए बिना इसे करते हैं। विरोधियों का अपहरण कर उसे नमक की बोरी में डालकर दफना दिया जाता है। दुनिया (यहाँ तक कि) को ऐसे खूनखराबे (पीड़ितों) के फोटो या समाचार के बारे में पता नहीं चल पाता है| अब्दुल्लाकुट्टी के हवाले से विजयन ने
मीडिया को यह सब बताया। कुट्टी के अनुसार सीपीएम सांसद पी करुणाकरण, पी सथीदेवी और कन्नूर से सीपीएम विधायक भी उनके साथ उस बैठक में शामिल थे।

हमें वैश्विक और घरेलू तस्वीर देखनी चाहिए और इस पागलपन की विधि की पहचान करनी चाहिए। वामपंथी आतंकवाद की जड़ें 19 वीं और 20 वीं सदी के अराजकतावादी आतंकवाद के समय थी और शीत युद्ध के दौरान यह स्पष्ट भी हो गया। 1968 की राजनीतिक उथल -पुथल के कारण आधुनिक वामपंथी आतंकवाद का प्रसार हुआ। पश्चिमी यूरोप की राजनीतिक अशांति के संदर्भ में विकसित आतंकवाद संगठनों में महत्त्वपूर्ण समूह थे - पश्चिम जर्मन रेड आर्मी गुट (आरएएफ), इटली की लाल ब्रिगेड ,फ्रांस की एक्शन डायरेक्ट और बेल्जियम की कम्युनिस्ट लड़ाकू कोशिकाएं (सीसीसी) । एशियाई समूहों में जापानी लाल सेना और तमिल ईलम के लिबरेशन टाइगर्स को शामिल किया गया है। हालांकि बाद के संगठन ने राष्ट्रवादी आतंकवाद को अपनाया। जोसेफ स्टालिन एडोल्फ हिटलर की तरह बुरा और मुसोलिनी से भी बदतर था , जिसने अपने ही लाखों देशवासियों की हत्या कर दी थी। चीन का माओ त्से तुंग एक और कम्युनिस्ट नेता था, जिसकी तानाशाही और राज्य पर नियंत्रण की नीतियों से लाखों लोगों की मौत हुई। 1966-76 के माओ की सांस्कृतिक क्रांति के परिणामस्वरूप पूरे देश में कई किताबें जला दी गई और कई

आंदोलन शुरु किया गया जिसके परिणामस्वरुप हजारों निर्दोष लोगों का नरसंहार किया गया । 27 फ़रवरी 2013 को , सवाल संख्या 371 के जवाब में गृह राज्य मंत्री ने राज्यसभा को बताया था कि वर्ष 2001 से 2013 तक वामपंथी उग्रवादियों ने 7,881 लोगों को मार डाला ।

भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए वामपंथी उग्रवाद (एलडब्ल्यूई) लगातार सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक रहा है । इसकी तीव्रता तीन राज्यों छत्तीसगढ़, झारखंड और उड़ीसा में कायम है | इसके अतिरिरक्त पश्चिम बंगाल, बिहार और महाराष्ट्र में इसकी भारी उपस्थिति है। साथ ही वामपंथी उग्रवादियों ने सफलतापूर्वक पूर्वोत्तर और भारत के दक्षिण हिस्से व कुछ शहरी क्षेत्रों में घुसपैठ करने में कामयाबी हासिल की है।

अनुमान लगाया जाता है कि माओवादी कथित तौर पर जबरन वसूली से 1,500 करोड़ सालाना जमा करते हैं, हालांकि माओवादी की अर्थव्यवस्था के महापाप का कोई सटीक आकलन नहीं है। उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से तेंदू पत्ते के ठेकेदारों, व्यावसायिक घरानों, सड़क ठेकेदारों, बस और ट्रक मालिकों, पेट्रोल पंप और दुकानदारों से हफ्ता और वसूली पर आधारित है। ऐसा संदेह है कि माओवादियों ने छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और बिहार के क्षेत्रों में अपने आंदोलन चलाने के लिए आर्थिक मजबूती के लिए अपने गढ़ों में अफीम की खेती कर रखी है। खनन निगम भी माओवादियों को करदाताओं के रूप में उनकी अर्थव्यवस्था के लिए काफी हद तक योगदान करते हैं।

कांग्रेस और कम्युनिस्ट एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह कांग्रेस पार्टी ही है जो राज्य के हर अंग में कम्युनिस्टों की घुसपैठ करने को बढ़ावा दे रही है और यह भी संभावना है कि वे भारत के एक महत्त्वपूर्ण भाग को अपने अधिकार में ले लें। इसका एक सबूत सामने आया, जब सोनिया गांधी की यूपीए-1 सरकार के गठन के चार महीने के भीतर ही, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का 21 सितंबर 2004 को गठन हुआ था | यह काम एक अतिरिक्त संवैधानिक संस्था यानी राष्ट्रीय सलाहकार परिषद(कम्युनिस्टों से भरी हुई) के माध्यम से अपने परोपकारी आका के कम्युनिस्ट एजेंडे को चलाने के लिए किया गया था।

हम शायद, नेहरू वंश के पारिवारिक संबंधों और अन्य प्रभुत्व की ऊपरी परत भी पूरी तरह खरोंच नहीं पाए हैं जिसकी लपेट में सम्पूर्ण बुद्धिजीवी वर्ग , इतिहासकार और पत्रकार भारत के परिदृश्य को नियंत्रित किए हुए हैं | कई शीर्ष संपादक और पत्रकार सीधे या परोक्ष रूप से वाम संगठनों के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं । भारत की पत्रकारिता में कुछ ठेठ जेएनयू नेहरूवादी कम्युनिस्ट ,वाम-उदारवादी विचारकों का बोलबाला है। वे जनता के विवेक को प्रभावित करते हैं और वे बंगाल में और किसी अन्य जगह पर भी कम्युनिस्टों द्वारा की जा रही ज्यादतियों पर चुप रह जाते है। आदर्शलोक कभी व्यावहारिक नहीं होता। हालांकि वामपंथी केरल,देवताओं की भूमि का ऐसा चित्र खींचते हैं जहाँ वे सबकी शांति और खुशी का दावा करते हैं ,जबकि राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के तथ्य एक अलग हकीकत बता रहे हैं। वामपंथियों का गढ़ माने जाने वाले गुलग्स में न सिर्फ हत्याएं प्रायोजित की जाती हैं बल्कि हत्यारों के और सज़ा के हालातों में उनके परिवारों के भी संरक्षण के पूरे प्रयास किए जाते हैं | लाल गलियारों में पूर्ण शक्ति बनाए रखने के लिए वे अभिव्यक्ति की कोई स्वतंत्रता नहीं देते | औरतें ,बच्चे यहां तक कि दलितों का भी बहिष्कार करते हैं यदि वे पार्टी के गुंडों के फरमान का पालन करने में विफल रहते हैं तो | मीडिया और बुद्धिजीवी साथी इन कामरेडों के अपराधों को अंजाम देने के लिए जनता को उकसाते हैं। अन्यथा जिन राजनीतिक हत्याओं में सबूत हैं ,उनमें राज्य पुलिस नेतृत्व को अपराध में लिप्त लोगों और नेताओं के ख़िलाफ़ आपराधिक मुकदमा चलाना शुरू करना चाहिए। बंगाल और केरल की राज्य सरकारों को निश्चित तौर पर अपने मौत के मैदानों में क्रूर राजनीतिक प्रलय के शिकार पीड़ितों के लिए मुआवज़ा प्रदान करने के लिए कार्रवाई शुरू करनी चाहिए। क्या केरल में कभी शांति और राजनीतिक स्वतंत्रता स्थापित हो सकती है?

अनिल कुमार
7 अक्टूबर, 1992, को शहीद, एरनाकुलम

आरएसएस के शाखा मुख्य शिक्षक मट्टानचेरी के अनिल पर इस्लामिक चरमपंथियो ने हमला किया था। वह शाखा से बाहर आ रहे थे। उनकी हत्या निर्ममता से कर दी गई थी। मट्टानचेरी उस समय इस्लामिक चरमपंथियों के आतंक की गिरफ्त में था।

बी चंद्रू
8 अक्टूबर, 1992 को शहीद, एरनाकुलम

भाजपा की सोच रखने वाले चंद्रू मट्टानचेरी हिंसा के शिकार हुए थे। इस्लामिकल चरमपंथियो ने उनकी हत्या की थी।

कृष्णदास
16 अक्टूबर, 1992 को शहीद, एरनाकुलम

भाजपा की सोच रखने वाले कृष्णदास की इस्लामिक चरमपंथियो ने मट्टानचेरी में हत्या की थी।

वेणु
7 दिसंबर, 1992 को शहीद, मालाप्पुरम

भाजपा समर्थक वेणु की इस्लामिक चरमपंथियो ने पुककोट्टूर में हत्या की थी।

मुक्कन्नन कुरुकुट्टी
8 दिसंबर,1992 को शहीद, मालाप्पुरम

भाजपा समर्थक वेणु को इस्लामिक चरमपंथियो ने निर्ममता से काटकर मार डाला था। उसका शव दो दिन बाद 10 दिसंबर को मिला था।

पी के बालन
8 दिसंबर,1992 को शहीद, मालाप्पुरम

भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता बालन की हत्या मार्क्सवादी गुंडों ने कोंडोट्टी में की थी।

एम अच्युतन
8 दिसंबर, 1992 को शहीद, मालाप्पुरम

भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता अच्युतन की हत्या मार्क्सवादी गुंडों ने कोंडोट्टी में कर दी थी।

मधु
12 जनवरी, 1993 को शहीद, कोल्लम

काडाक्कमन कालोनी के भाजपा कार्यकर्ता मधु की हत्या मार्क्सवादी गुंडों ने कर दी थी। मधु पहले सीपीएम जुड़े हुए थे।

सदाशिवन
6 फरवरी, 1993 को शहीद, कोल्लम

कुंद्रा तालुक के कोल्लाक्कल शाखा के सक्रिय सदस्य सदाशिवन की हत्या शाखा में भाग लेकर घर लौटते समय कर दी गई। वामपंथी गुंडों के हमले के समय उनका भाई सतीशन भी साथ में था, वे भी गंभीर रुप से घायल हुए थे। सदाशिवन की रीढ़ की हड्डी में चाकू लगने से ज़ख्म गहरा था, जिसके कारण उसे अस्पताल में भर्ती किया गया था। तीन साल तक इलाज चलने के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। सतीशन की मौत घटनास्थल पर ही हो गई थी। दोनों भाई दलित थे और सीपीएम के कार्यकर्ता रह चुके थे। उनके आरएसएस से जुड़ने पर स्वाभाविक रुप से दलित समुदाय के वामपंथी कार्यकर्ता उनके साथ चले गए। इसका बदला लेने के लिए यह हत्या की गई।

नंदन
9 फेब्रुअरी, 1993, को शहीद, त्रिशूर

उल्लूर मंडल, भाजपा युवा मोर्चा के उपाध्यक्ष नंदन पेशे से बस कंडक्टर था। उनको बस से खींचकर मौत के घाट उतारा गया।

ए अनिल कुमार
10 फरवरी,1993 को शहीद, कन्नूर

भाजपा कार्यकर्ता अनिल वामपंथी हिंसा के शिकार हुए थे। एकेजी कॉपरेटिव अस्ताल में चुनावी जीत का वामपंथी आनंद उठा रहे थे। उत्साह के दौरान ही वे खून के प्यासे हो गए। जीत की रैली जब कोडियैरी पंचायत कार्यालय पहुंची तो वहां राष्ट्रभक्त अनिल दिख गया। गुंडों ने तत्काल अनिल पर हमला बोल दिया और मौत के घाट उतार दिया।

सुरेश बाबू
10 मार्च, 1993 को शहीद, त्रिशूर

कडावल्लर पंचायत, त्रिशूर के भाजपा कार्यकर्ता सुरेश बेवजह वामपंथी हिंसा का शिकार हुए। स्थानीय स्तर पर सीपीएम और भाजपा कार्यकर्ताओं के बीच मतभेद था। सुरेश इन बातों से अंजान थे और उसी रास्ते से गुजर रहे थे। मार्क्सवादी गुंडों ने उनका पीछा किया और पंच मार दिया। इस्लामिक चरमपंथियों ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

मोहनदास व राजीव
12 दिसंबर, 1992 को शहीद, मालाप्पुरम

अरुमुलघम नामक स्वयंसेवक पर इस्लामिक चरमपंथियो ने हमला किया था। उसे मोहनदास ने वेणु व राजीव के साथ अस्पताल पहुंचाया। उन्हीं लोगों ने पुलिस को भी सूचना दी। राजीव व वेणु को इस्लामिक गुंडों ने मार डाला।

सत्यन
10 मार्च, 1993 को शहीद, कोल्लम

अयाथल्ली में भाजपा कार्यकर्ता सत्यन की हत्या इस्लामिक चरमपंथियों ने थेक्केकावु समारोह के दौरान कर दी थी।

सन्नी वर्गीज़
12 जून , 1993 को शहीद, इड्डुक्की

अडिमलाई में आरएसएस के शाखा मुख्य शिक्षक सन्नी, संघ के कार्य को मज़बूती दे रहे थे। राष्ट्रवादियों के साथ लगातार समर्थकों के जुड़ने से वामपंथी संगठनों की जड़ें हिल रही थीं। इससे चिढ़कर वामपंथियों ने उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

नड्डाकल शशिकुमार
19 सितंबर,1993 को शहीद, वायनंद

नड्डाकल शाखा के आरएसएस के शाखा मुख्य शिक्षक शशिकुमार की हत्या इस्लामिक चरमपंथियों ने कर दी थी। दंगाइयों ने उनके पड़ोसी के घर पर हमला बोल दिया था। मामले की जांच करने के लिए जैसे ही वे बाहर आए वैसे ही उनकी हत्या कर दी गई।

के राजन
21 मार्च, 1994 को शहीद, कन्नूर

कुथूपारांबू में आरएसएस के कार्यकर्ता राजन प्रचारक रह चुके थे। वे हार्डवेयर की दुकान में सेल्समैन का काम करते थे। वामपंथी गुंडों ने हमला कर घटनास्थल पर ही उन्हें मार डाला। यह घटना सदानंद मास्टर के पैर काटने के एक दिन बाद घटी थी।

पी पी मोहन
19 अप्रैल, 1994 को शहीद, कन्नूर

कुथूपारांबू में आरएसएस के सहकार्यवाहक मोहन एक एडवोकेट के अधीन क्लर्क थे । उनकी हत्या वामपंथियो ने ट्रेजरी के सामने कर दी थी। वहां पर पुलिसवाले भी मौजूद थे, लेकिन उन्होंने हाथ से मुंह छिपा लिया था।

सुनील कुमार
1 जुलाई, 1994 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

करनाकुलम आरएसएस के मंडल कार्यवाहक सुनील प्रचारक भी रह चुके थे। किसी से न डरने वाले सुनील ने कई बार असामाजिक तत्त्वों से झगड़ा किया था। उनकी अज्ञात लोगों ने बेरहमी से हत्या कर दी थी।

आजी एन
18 अगस्त, 1994 को शहीद, कोल्लम

आरएसएस के कार्यकर्ता और भारतीय मज़दूर संघ के कनवेनर आजी पर सीटू और एआईटीयूसी के गुंडों ने हमला किया था। जिंदगी बचाने के लिए वे नदी मे कूद गए थे। लेकिन गुंडे लगातार उसपर पत्थर फेंक रहे थे। आजी इडोमन के पास डूब गए।

एन के मधुबालाचंद्रन नायर
10 नवंबर, 1994 को शहीद, तिरुअनंतपुरम

की जूरुर के आरएसएस शाखा के मुख्य शिक्षक मधुबालाचंद्रन की हत्या अकारण ही कर गई थी। वामपंथी गुंडों ने खेल-खेल में उन्हें मौत के घाट उतार दिया था।

एम बी कुमारन
25 नवंबर, 1994 को शहीद, कोझीकोड

अंबालाक्कुलनगारा के पास वामपंथियो ने देसी बम फेंक कर वडागारा आरएसएस के खंड कार्यवाहक कुमारन की हत्या कर दी थी। हत्या सीपीएम के लगातार हिंसा का एक हिस्सा थी। इसमें पुलिस भी मदद कर रही थी। कुमारन के अंतिम संस्कार की रैली भी प्रशासन ने नहीं निकालने दी।

सुनील
4 दिसंबर, 1994 को शहीद, त्रिसूर

तोजिरुर में आरएसएस का कार्यकर्ता सुनील गरीब दलित परिवार से था। इस्लामिक चरमपंथियो ने बेरहमी से उसकी हत्या कर दी थी। 4 दिसंबर की रात में चरमपंथियों ने उसके घर पर तोड़फोड़ की। माता पिता और भाई के सामने ही उसकी हत्या कर दी गई थी। माता पिता और भाई भी हमले में गंभीर रुप से घायल हो गए

के वी बीजू
28 जनवरी, 1995 को शहीद, त्रिसूर

कोराट्टी भाजपा के कार्यकर्ता बीजू को वामपंथियो ने घर पर ही पकड़ लिया था। उसे कन्नूर नालूकेट्टू जंक्शन लाकर बेरहमी से काट दिया गया।

चेमबट्टा के सी केलू
10 मार्च, 1995 को शहीद, कन्नूर

जनसंघ से समय से ही केलू की भारतीय जनता पार्टी पर मज़बूत पकड़ बनी हुई थी। 50 साल के केलू जब घर पर थे तो रात के समय मार्क्सवादियों ने उनपर हमला किया और मौत के घाट उतार दिया।

जोस
22 जनवरी, 1995 को शहीद, त्रिशूर

जोस भारतीय मजदूर संघ, त्रिशूर बाजार के कार्यकर्ता एवं पूर्व सी.आई.टी.यू. कार्यकर्ता रहे। मार्क्सवादी गुण्डों ने उन पर तब हमला किया जब वे एक थियेटर के अंदर थे, एक फिल्म देख रहे थे। गुंडों ने बाहर तक उनका पीछा किया और उनकी जान ले ली। वे कुरियाचिरा से थे, जो कि त्रिशूर शहर से करीब 5 किलोमीटर दूर है। भारतीय मजदूर संघ पुतुर पंचायत के सक्रिय सदस्य थे वे।

कोम्बनतविदु सुरेन्द्रन
24 मार्च, 1995 को शहीद, कन्नूर

आरएसएस शाखा मुख्य शिक्षक, पेरिम्बलम।

काम के बाद घर पहुँचे सुरेन्द्रन रहस्यमय तरीके से गायब हो गए थे। उनका शरीर अगले दिन संदिग्ध परिस्थितियों में लटका पाया गया। सुरेन्द्रन अपने क्षेत्र के इस्लामिक राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के खिलाफ अगवाई कर रहे थे।

पालूर मोहनचन्द्रन
19 अगस्त, 1995 को शहीद, मलप्पुरम

भाजपा मूँकड़ा नियोजक मंडल के महासचिव, मोहनचन्द्रन एक दुकान चलाते थे। एक दुर्भाग्यपूर्ण रात को, दुकान बंद कर घर लौटने के दौरान इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा उनकी नृशंस हत्या कर दी गयी थी।

पी के शिवदास
12 अक्तूबर, 1995 को शहीद, आलप्पुज़ा

शिवदास किडनगरा, कूटनाड्डु के एक आरएसएस कार्यकर्ता थे। शिवगिरी मठ में पुलिस कार्रवाई के विरोध में एस.एन.डी.पी. द्वारा राज्यव्यापी बंद के संबंध में किडनगरा में हिंसा भड़क उठी। हिंसा को रोकने के लिये, पुलिस ने गोलियाँ चला दी। शिवदासन इसमें हिस्सा लिए बगैर अपने घर के पास खड़े थे। दुर्भाग्य से एक गोली उन्हें लग गयी और उनकी स्थान पर ही मृत्यु हो गई थी।

सुकुमारन
26 दिसंबर, 1995 को शहीद, मलप्पुरम

भाजपा कार्यकर्ता, बी.बी. अंगदी थिरूर। सुकुमारन एक ऐसे परिवार से थे, जो काँग्रेस पार्टी से जुड़ी थी, जिसमें कि उनके कई करीबी रिश्तेदार कांग्रेस पार्टी के सक्रिय सदस्य थे। उनपर पुरथूर बस स्टैंड पर कांग्रेस के गुण्डों द्वारा हमला किया गया और अगले ही दिन, कोझीकोड मेडिकल कॉलेज में उनकी मृत्यु हो गयी थी।

सी जे राजीव
29 दिसंबर, 1995 को शहीद, त्रिशूर

वादानपल्ली में भाजपा कार्यकर्ता थे, राजीव। वे इस्लामवादी क्रूरता का शिकार हो गये। उस दुर्भाग्यपूर्ण 29 दिसंबर की रात, पीडीपी (अब्दुल नासिर मदनी द्वारा स्थापित राजनीतिक दल) के कार्यकर्ताओं ने उनके निवास में घुसकर हमला कर उन्हें बाहर घसीटा। उनकी हत्या कर दी गई थी।

मोहनदास
20 फरवरी, 1996 को शहीद, त्रिशूर

एक पूर्व सैनिक, मोहनदास भाजपा, कोडगरा के सक्रिय सदस्य थे। कांग्रेस के गुण्डों ने उन पर हमला किया और हत्या कर दी। उनका मृत शरीर झाड़ियों के बीच मिला था।

शाजी
18 मई, 1996 को शहीद, कन्नूर

भाजपा कार्यकर्ता कन्नूर, मार्क्सवादी गुंडों ने शाजी की हत्या कर दी थी।

विद्यासागर
12 जुलाई, 1996 को शहीद, त्रिशूर

भाजपा के वरिष्ठ नेता, विद्यासागर ने कोडुन्गाल्लुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के अध्यक्ष के रूप में सेवा की थी। 12 जुलाई की रात को मार्क्सवादी गुंडों ने उनका कत्ल कर दिया था।

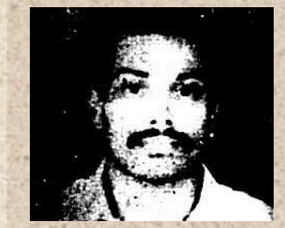

सुरेन्द्रन और मनोज

6 दिसंबर,1994 को शहीद, कोझीकोड

वलयम, कोझीकोड से आरएसएस के कार्यकर्ता। सुरेन्द्रन और मनोज सीपीआई (एम) के द्वारा आरएसएस की शाखा में किए गये एक बम आक्रमण में मारे गये जब वे शाखा में भाग ले रहे थे।

टी एस संतोष

9 अगस्त, 1996 को शहीद, त्रिशूर

संतोष एक व्यापारी एवं तयइल, इरिंजालक्कुड़ा के भाजपा वॉर्ड कमिटी के कोषाध्यक्ष थे। दुकान बंद करके रात में घर जाते वक़्त कुछ इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा मार दिया गया था।

मुतलमाडा मणि

14 अगस्त, 1996 को शहीद, पालघाट

मणि मुतलमाडा भाजपा पंचायत मंडल के मेंबर थे जो की पहले सीपीआई (एम) के समर्थक थे। उनकी हत्या उनके घर के समीप सीपीआई (एम) समर्थक इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा कर दी गयी थी।

मढ़थिल थमी

25 अगस्त,1996 को शहीद, मलप्पुरम

मढ़थिल थमी भाजपा के स्थानीय नेता थे। वे एक दलित परिवार से थे। उनकी हत्या इस्लामिक कट्टरपंथियों द्वारा की गयी थी। इसके पहले भी उनकी दो बार हत्या करने का प्रयास किया गया था। पुलिस से किसी भी प्रकार के सहयोग एवं सुरक्षा ना मिलने की स्थिति में उनपर किए गये हत्या के तीसरे प्रयास ने अंततः उनकी जान ले ली थी।

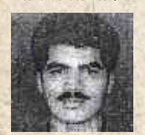

अशोक शेट्टी

26 अक्तूबर, 1996 को शहीद, कासरगोड

भाजपा के स्थानीय नेता अशोक बस से उतार कर पैदल अपने घर जा रहे थे तभी मार्क्सवादी गुण्डों द्वारा उन्हें ख़तरनाक शस्त्रों द्वारा शिर्डी साई मंदिर के पास मार दिया गया था।

के सुकुमारन

27 दिसंबर, 1996 को शहीद, मलप्पुरम

भाजपा कार्यकर्ता, बी.वी. अंगदी, थिरूर सुकुमारन को कांग्रेसी गुंडों द्वारा पुराथूर बस स्टैंड के पास आक्रमण किया गया। उन पर आक्रमण 26 दिसंबर को किया गया था और अत्यधिक घावों की वजह से 27 दिसंबर को उन्होंने दम तोड़ दिया था।

ओ पी बाबू

28 फरवरी, 1997 को शहीद, कोझीकोड

नेट्टूर, कुट्टियादि से आरएसएस के सक्रिय कार्यकर्ता बाबू को श्रीराम नवमी रथयात्रा के स्वागत का दायित्व दिया गया था। उत्सव के समय उनपर 40 मार्क्सवादी गुंडों द्वारा आक्रमण कर उनकी हत्या कर दी गयी थी। इसके कुछ दिनों पहले ही 25 फरवरी को कुछ मार्क्सवादी नेताओं द्वारा उस क्षेत्र के आरएसएस कार्यकर्ताओं की हत्या करने का एलान किया गया था जिसमें बाबू का भी नाम था।

भास्करन

4 जून, 1997 को शहीद, कासरगोड

भारतीय जनता पार्टी, पुलुर, कनजंगड के एक सक्रिय कार्यकर्ता, भास्करन एक छोटा सी दुकान चलाते थे। 4 जून की रात, मार्क्सवादी लफंगों ने दुकान में तोड़फोड़ की, भास्करन पर हमला किया और उसकी हत्या कर दी।

उन्नी

6 जून,1997 को शहीद ,तिरुवनंतपुरम

नागरुर, किल्लीमानूर की भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, उन्नी ने रात में शरारती तत्त्वों से सामना किया था। उनपर हमला किया गया और चाकू मार कर मौत के घाट उतार दिया था।

भास्करन मास्टर

30 जून, 1997 को शहीद, कोझिकोड

नदपुरम मंडलम भारतीय जनता पार्टी के महासचिव भास्करन राष्ट्रीय शिक्षक संघ के जिला पदाधिकारी थे, साथ ही वलयम के निवासी थे, उनका घर एक अलग क्षेत्र में था। बरसात की एक रात, एक अज्ञात व्यक्ति पानी मांगने के बहाने उनके घर आए थे। दरवाजा खोलने पर भास्करन मास्टर को उसकी वृद्ध मां, पत्नी और बच्चों के सामने मौत के घाट उतार दिया था।

कुमारन

30 जून, 1997 को शहीद, कोझिकोड

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य, कुमारन पेशे से एक किसान थे। उनकी क्रूर तरीके से हत्या कर दी गई थी। वास्तव में उनकी हत्या भास्करन मास्टर की मौत के एक घंटे के अंदर ही कर दी गई थी।

मौत उसके सामने थी, छात्र अपने अमूल्य जीवन के लिए दौड़ा और उग्र नदी पंपा में डूब गया

वह 17 सितम्बर 1996 का काला दिन था, जब भयावह परुमला हत्या को अंजाम दिया गया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के तीन कार्यकर्ता अनु, सुजित, और किम, जो की देवास्वोम मंडल महाविद्यालय, परुमला के विद्यार्थी थे, उन्हें एसएफआई, सीआईटीयु, और डीवायएफआई के गुंडों द्वारा उस दिन दर्दनाक हत्या कर दी गयी थी। गुंडों ने उन्हें हत्या कि चेतावनी दी क्योंकि वे अपने महाविद्यालय में ऐबीवीपी के कार्य में सक्रीय थे। जैसे ही उन्हें

अनु सुजीत किम

यह एहसास हुआ कि मृत्यु उनके पीछे है, विद्यार्थी अपनी जान बचाने के लिए पम्पा नदी में यह सोचकर कूद गए कि वे तैर कर सुरक्षित स्थान पहुँच जायेंगे। लेकिन मार्क्सवादी गुंडों ने उनपर ऐसी पत्थरबाज़ी की कि लड़कों का तैरना असंभव हो गया।

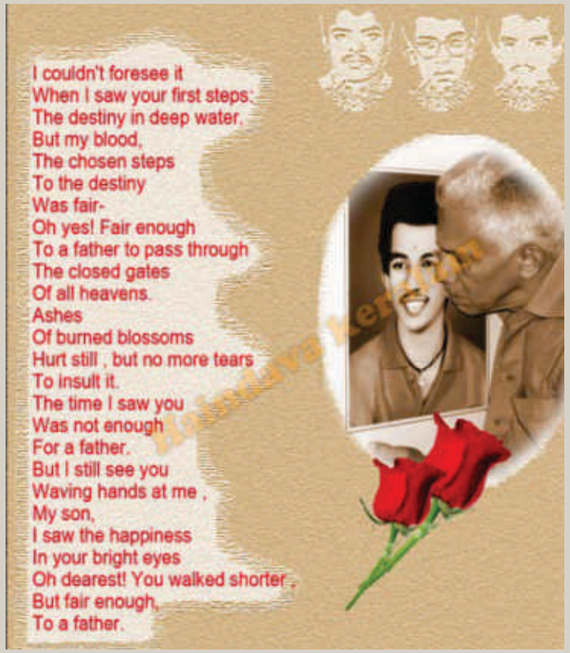

कुछ महिलाएं इस पूरे घटनाक्रम कि गवाह थी जो कपडे धो रहीं थी। उन्होंने छात्रों कि ओर अपनी साड़ी फेंक कर इस उम्मीद से उन्हें बचाने का प्रयास किया कि वे उसे पकड़कर सुरक्षित चढ़ जाएंगे। परन्तु एसएफआई के गुंडों ने उन महिलाओं का खतरनाक तरीके से पीछा किया, उन्हें गलियां दी एवं उनपर पथराव किया। उन मजबूर महिलाओं के पास भाग बचने के अतिरिक्त और कुछ उपाय नहीं था। और अंततः छात्र डूब गए।

उस समय केरल कम्युनिस्टों द्वारा राज किया जा रहा था, जिन्होंने इस घटना के सारे सबूत मिटाने का प्रयास किया। उन्होंने पोस्टमॉर्टेम रिपोर्ट में भी छेड़खानी करने कि कोशिश की। एक नया रिपोर्ट तैयार किया गया जिसमें कि कहा गया कि छात्र नशे में थे, जिसके कारण वे डूब गए। इन झूठे रिपोर्टों के बल पर मार्क्सवादी नेतृत्व केस में जीत गए। असल में जब यह मामला

अनु और सुजीत के शव

केरल विधानसभा में विधायक टी एम् जैकब ने उठाया, मुख्यमंत्री ई के नायनार ने खिल्ली उड़ाते हुए यह पुछा कि "आपको इससे क्या लेना देना ये मामला तो आरएसएस का है" !!!

पेरुमला हत्या जैसे चौंका देने वाली घटना, कैंपस हत्याओं में नायाब है। किम और अनु दोनों ही अपने अभिभावकों की एक लौती संतान थे। अनु अपनी मृत्यु के समय महाविद्यालय आर्ट्स क्लब के सचिव थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनि वे हर गतिविधियों में आगे रहते थे, चाहे वो काला हो या खेल। वे मृदंगम व तबला भी काफी अच्छा बजाते थे। पढाई में होनहार होने के साथ साथ अनु पथनमथिता जिले के जूनियर फुटबॉल टीम के सदस्य भी थे। उनके अभिभावक जो की अभी सेवानिवृत्त हो गए हैं (पिता - डाक कर्मचारी, माता - अध्यापिका) आज तक भी इस दुःख से उबर नहीं पाए हैं की ऐसे होनहार एवं काबिल पुत्र को उनसे हमेशा के लिए बड़े ही निर्दयता पूर्वक छीन लिया गया था।

अनु की तरह, किम भी अपने अभिभावकों का एक लौता बेटा था। जब अपने पुत्र की दुखद मृत्यु का पता चला तब उसके माता पिता इस पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे कि उनका पुत्र अब इस दुनिया में नहीं रहा। बाद में उनकी भी मृत्यु हो गयी। उन्होंने अपने पुत्र कि याद में श्री नारायणा स्मृति मंदिरम बनवाया। सुजित के पिता जो कि विदेश में काम करते थे, इस दुखद घटना पर, वे अपने कार्य से त्यागपत्र देकर घर लौट आये। अपने पुत्र को न्याय न मिलने पर वे आज भी निराशा के अँधेरे में जी रहे हैं।

शिवरामन नायर

9 अगस्त, 1997 को शहीद, कोट्टयम

आरएसएस के कर्मठ कार्यकर्ता शिवरामन ने आपातकाल के समय से ही काफी मेहनत करके संगठन का कार्य किया। उनको केरल के कांग्रेसी गुंडों द्वारा मौत के घाट उतारा गया था।

श्रीधरन

26 सितंबर, 1997 को शहीद, पलक्कड़

चेरुप्पलास्सरी क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, श्रीधरन का मार्क्सवादी गुंडों ने घर से अपहरण कर लिया था और निर्दयता से पिटाई की। इसे तांडव का रूप कहा जा सकता है, गुंडों ने जबरन उसके मुंह में जहर डाला। थोड़ी देर के बाद गुंडों ने मृत समझकर उसे सड़क के किनारे पर फेंक दिया। लेकिन श्रीधरन जिंदा था और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहाँ उसने अंतिम सांस ली। अपनी मृत्यु से पहले वह मजिस्ट्रेट के समक्ष अपराधियों के बारे में अपने बयान दर्ज कराने में सक्षम था।

प्रदीप

7 अक्टूबर, 1997 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता प्रदीप की मार्क्सवादी गुंडों ने घंटों तक घसीटने के बाद हत्या कर दी थी। गुंडों ने अंत में उस पर एक बम भी फेंका जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। गुंडे इससे भी शांत नहीं हुए। उन्होंने प्रदीप के बेजान शरीर को हथियाने के लिए निर्दयता जारी रखी ।

लॉरेंस

22 अक्टूबर, 1997 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय मज़दूर संघ के एक सक्रिय सदस्य, पुडूर पंचायत के लॉरेंस शक्तरन थंपुरन बाज़ार में एक प्रमुख लोड कार्यकर्ता थे। दिनभर के कड़े परिश्रम के बाद उस क्षेत्र में खड़ी एक बस के अंदर आराम कर रहे थे। मार्क्सवादी गुंडे बस में घुस आए और उनके सिर पर एक घातक प्रहार किया,जिसके कारण उनकी मौत हो गई।

रामचंद्रन

26 अक्टूबर, 1997 को शहीद, पलक्कड़

भारतीय मज़दूर संघ के सदस्य रामचंद्रन ओट्टापलम के क्षेत्र सचिव थे। एक बीएमएस कार्यक्रम के बाद जब वह घर लौट रहे थे तो अज्ञात लोगों ने उनकी हत्या कर दी थी। बाद में उनका शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला था।

संतोष

24 नवंबर, 1997 को शहीद, कोल्लम

संतोष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में भाग लेने के लिए साइकिल से जा रहे थे। एक कार में सवार मार्क्सवादी गुंडों ने

पन्नियान्नूर चंद्रन

25 मई, 1996 को शहीद, कन्नूर

कन्नूर भाजपा जिला सचिव चंद्रन, बैंक की नौकरी त्याग कर आरएसएस के प्रचारक बने थे। भाजपा में दायित्व लेने से पहले वे दीर्घकाल संघ के प्रचार रहे। एक भाजपा उमीदवार के रूप में पेरिंगलम निर्वाचन क्षेत्र से चंद्रन करीब 10000 वोट पाने में सफल रहे। चंद्रन की हत्या तब हुई जब वे अपने एक रिश्तेदार को रेलवे स्टेशन छोड़ कर वापिस घर आ रहे थे। उनके साथ उनकी धर्मपत्नी भी थी। जब वे बाइक से जा रहे थे तब मार्क्सवादी गुंडों ने उनपर बम से आक्रमण कर दिया था। दिन दहाड़े उनके पत्नी के सामने उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी थी। उनकी हत्या कामरेड नायनार के केरल के मुख्यमंत्री बनते ही कर दी गयी थी।

पीछा कर उनकी साइकिल को धक्का मारकर उन्हें गिरा दिया और बाद में मौत के घाट उतार दिया।

गोपी

28 नवंबर, 1997 को शहीद, कासरगोड

गोपी कन्हनगाडू में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता थे। सीपीआई (एम) के गुंडों ने रात्रि के दौरान गोपी को मौत के घाट उतार दिया था। उससे पहले की अवधि में मार्क्सवादियों ने सुनिश्चित किया था कि कन्हनगाडू में आतंक का मुकाबला न हो पाए, इसीलिए उसी दिन उन्होंने भाजपा के ज़िला अध्यक्ष के निवास पर भी हमला किया।

मुरुगनंदन

9 अप्रैल, 1998 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सक्रिय स्वयंसेवक मुरुगनंदन वीटीएम कॉलेज, धनुवचपुरम की अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के एक सक्रिय सदस्य थे। उनपर महाविद्यालय के गेट के पास मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया था। उन्हें पिटाई करके जान से मार दिया गया

मनोज
12 अप्रैल, 1999 को शहीद, कोझिकोड

भारतीय मज़दूर संघ, बेपोर के सक्रिय सदस्य मनोज का अपहरण कर लिया गया और कम्युनिस्ट गुंडों द्वारा हत्या कर दी गयी । हत्या के बाद मनोज की पहचान व साक्ष्य मिटाने के लिए गुंडों ने उसके शरीर पर तेज़ाब डालकर एक जघन्य अपराध को अंजाम दिया था।

चंद्रमोहन
21 अप्रैल, 1999 को शहीद, कासरगोड

विश्व हिंदू परिषद के बेडड्का के सक्रिय कार्यकर्ता चंद्रमोहन की हत्या मार्क्सवादी गुंडों ने कर दी थी। उसका शव ताना हुआ और लटका पाया गया था।

शशि
12 सितंबर, 1999 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मंडलम कार्यवाहक मंबरम, कुथुपुरंबू, शशि विजयादशमी के एक कार्यक्रम बैठक में भाग लेने के लिए जा रहे थे। उनपर मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया और हत्या कर दी।

सतीश
6 अक्टूबर, 1999 को शहीद, अलाप्पुझा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्थानीय नेता सतीश ने, हरीपाद में अवैध शराब के खिलाफ़ काफी संघर्ष किया था। उन्होंने अधिकारियों के संज्ञान में दिया कि अवैध शराब की बिक्री से कैसे गरीबों का शोषण किया जा रहा है। प्रतिशोध में मार्क्सवादी गुंडों ने उसकी हत्या कर दी।

पुरुषोत्तमन
1 नवंबर, 1999 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी के चकोली, पनूर के सक्रिय सदस्य पुरुषोत्तमन की मार्क्सवादी गुंडों द्वारा हत्या कर दी गयी थी।

कुंजीरामन
3 नवंबर, 1999 को शहीद कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय सदस्य कुन्जीरमणम की मार्क्सवादी गुंडों ने हत्या कर दी थी।

प्रकाशन
2 दिसंबर, 1999 को शहीद, कन्नूर

जयकृष्ण मास्टर की हत्या के बाद कन्नूर एक लंबी अवधि की हिंसा की बाढ़ झेलता रहा। प्रकाशन की हत्या इसी चरण के दौरान हुई। काठीरुर, भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता को मार्क्सवादी गुंडों ने मौत के लिए काट दिया।

बालन
3 दिसंबर, 1999 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी के पेरिलिंगम निर्वाचन क्षेत्र के कोषाध्यक्ष, बालन के घर पर आधी रात को मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया था। बालन ने गुंडों से काफी संघर्ष किया, लेकिन बालन की बेरहमी से हत्या कर दी गई।

उन्नी
25 फरवरी, 2000 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता उन्नी की कोंगामपुक्का, चवक्कड़ में मार्क्सवादी गुंडों ने हत्या कर दी थी।

विजयन
27 अप्रैल, 2000 को शहीद, कासरगोड़

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता, विजयन कुंबलम अपने कार्यस्थल पर जाने के रास्ते पर थे। मार्क्सवादी गुंडों ने, जो एक बाइक पर सवार थे, तलवार का उपयोग कर उसके सिर पर मारकर हत्या कर दी।

सुकुमारन
7 जून, 2000 को शहीद, त्रिशूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शाखा मुख्य शिक्षक, कनडास्सरी पंचायत, सुकुमारन खाड़ी देश में एक फर्म में मुख्य लेखाकार थे | अपनी हत्या से पहले वे पैतृक स्थान में बसने के लिए वह दो साल पहले आये थे । जिस समय उनकी हत्या हुई, उस समय वे राशन खरीदने के लिए जा रहे थे। मार्क्सवादी हमलावरों ने उन पर हमला किया और मार दिया।

चंद्रन
3 दिसंबर, 2000 को शहीद, कन्नूर

कुथुपरमबू के भारतीय जनता पार्टी सदस्य चंद्रन की मार्क्सवादी हमलावरों ने हत्या कर दी थी।

चंद्रनगाथन
4 दिसंबर, 2000 को शहीद, कन्नूर

कुथुपरमबू,भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता, चंद्रनगाथन पर मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया और हत्या कर दी थी।

बीजू
5 दिसंबर, 2000 को शहीद, कन्नूर

कुथुपरमबू में भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता, बीजू पर मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया और हत्या कर दी थी। बीजू की हत्या के साथ ही कुथुपरमबू में तीन दिनों तक हत्याओं का सिलसिला चला। अर्थात तीन दिन में तीन हत्याएं।

प्रशांत थैक्कैंडी
2 जनवरी, 2001 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी, पनूर के कार्यकर्ता, प्रशांत की मार्क्सवादी गुंडों ने हत्या कर दी थी।

राजेश कोंकाची
3 अप्रैल, 2001 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पनूर के कार्यकर्ता राजेश की मार्क्सवादी गुंडों ने क्रूरता से हत्या कर दी थी, जब वह अपनी दादी के अंतिम संस्कार की रस्म के बाद घर लौट रहा था। एक बम उस पर फेंका गया था जिससे उसे गंभीर आघात पहुंचा। गुंडे एक लंबे समय तक अस्पताल में भी राजेश के इलाज पर बाधा उत्पन्न करने का प्रयास करते रहे । हालांकि उसे अंत में अस्पताल में भर्ती किया गया था, जहां उसने अपनी अंतिम सांस ली।

प्रसाद
14 अप्रैल, 2002 को शहीद, त्रिशूर

भाजपा कार्यकर्ता प्रसाद को मार्क्सवादी गुंडों द्वारा चावक्कऑड के समीप इरत्तापुज़हा में केरल के नव वर्ष विशु उत्सव के दिन प्रातःकाल को हत्या कर दी गयी थी। उनपर भाजपा विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र के कार्यालय सचिव का दायित्व था।

उत्तमन
22 मई, 2002 को शहीद, कन्नूर

चावेस्सरी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सदस्य उथमम पेशे से एक बस ड्राइवर था। प्रेरणास्वरुप वह सेवा के लिए सामाजिक गतिविधियों में जुट गया। इन गतिविधियों से मार्क्सवादी नाराज हो गए | उथमम की बस को एक बम फेंककर गुंडों ने रोका और उसे बाहर खींचकर जान से मार दिया।

अम्मू अम्मा
23 मई, 2002 को शहीद, कन्नूर

इरिटी के रहने वाले अमालू अम्मा, प्यार से अम्मू अम्मा के रूप में जाना जाता है | उथमम के अंतिम संस्कार कार्यक्रम में भाग लेने के बाद वे जीप से घर लौट रहा था । एक बम फेंककर जीप को रोका गया, अम्मा और जीप चालक जजीला मंज़िल साहिब की मौके पर मौत हो गई। अन्य को गंभीर चोटें आई।

राजेश
9 जून, 2002 को शहीद, कोल्लम

भारतीय जनता पार्टी, पुनाल्लोर का कार्यकर्ता राजेश एक ऑटो चालक था। उसपर मार्क्सवादी गुंडों ने शिवन कोइल के पास नेताजी रोड में एक बम फेंका जिससे वह मारा गया था।

सी.बिम्बी
20 अक्टूबर,1996 को शहीद, कोट्टायम

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कार्यकर्ता सी.बिम्बी आईएचआरडी कॉलेज़, पुथुपल्ली में एक कंप्यूटर विज्ञान स्नातक का छात्र था। कक्षा समाप्त होने के बाद वह बस से चंगनशेरी स्थित घर लौट रहा था । उस दिन उसकी एनएसएस कॉलेज चंगनशेरी में किसी से हाथापाई हो गई थी, वामपंथी विचारक छात्र भी उसमें शामिल थे। हाथापाई के दौरान ही सीटू के गुंडों ने बिम्बी पर हमला कर दिया। गुंडों ने बिम्बी के सिर पर एक लोहे की छड़ से प्रहार कर दिया।
बिम्बी अचेत होकर गिर गया। यह घटना 16 अक्तूबर को हुई थी। आंतरिक चोटों के कारण बिम्बी कोमा में चला गया और क्रूरता के आगे 20 अक्टूबर को उसने घुटने टेक दिए।

शाजी
17 नवंबर, 2002 को शहीद, कन्नूर

पोट्टक्करन शाजी, पहले सीपीआई (एम) के समर्थक थे | बाद में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कूथुपरमबा में शामिल हो गए। अपने अथक परिश्रम से मार्क्सवादी समर्थकों को राष्ट्रवादी संगठन में लाने के लिए एक रणनीति बनाई। मार्क्सवाद से जुड़े शाजी के माता-पिता की अनदेखी करते हुए वामपंथियों ने शाजी की हत्या कर दी।

दामोदरन
23 जून, 2003 को शहीद, कासरगोड

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय डाक संघ के पदाधिकारी, सक्रिय भूमिका निभाने वाले दामोदरन पुल्लर डाकघर, कंजनगाद के पोस्ट मास्टर थे । उनकी मार्क्सवादी गुंडों ने हत्या कर दी थी।

जयचंद्रन
8 सितंबर, 2003 को शहीद, कासरगोड

मणिकोठ शाखा के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शाखा मुख्य शिक्षक, जयचंद्रन की हत्या ओणम के समय की गयी थी। उथ्राडम (थिरुवोनम उत्सव का मुख्य दिन) के दिन, उसकी पुण्णक्कुल भगवती मंदिर के पास हत्या कर दी गई थी।

मणिकंडन
15 जून, 2004 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय युवा मोर्चा जनरल गुरूवायूर के सचिव, मणिकंडन की पेरियाबलम में एनडीएफ समर्थित इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा हत्या कर दी गई थी|

मुरुगन
3 जुलाई, 2004 को शहीद, अलप्पुझ

कारुकाइल की भारतीय जनता पार्टी के वार्ड अध्यक्ष पार्टी से संबंधित एक कार्यक्रम में भाग लेने के बाद घर लौट रहे|उस एक रात मार्क्सवादी गुंडों से उनका सामना हुआ । मुरुगन को काट दिया गया था। उसकी हत्या के मामले में अभियुक्तों में से एक कुख्यात और विवादास्पद अनुजा था ।एक हिन्दू लड़की का इस्लाम में धर्म परिवर्तन कर दिया गया था। अनुजा का शरीर फांसी पर लटका पाया गया था जबकि उसका सिर मुंडन किया हुआ था।

उदयन
17 नवंबर, 2004 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय जनता पार्टी वडनप्पैल्ली का सदस्य, उदयन पेशे से ऑटो रिक्शा ड्राइवर था। उसकी बेरहमी से हत्या की गई थी, एनडीएफ इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा। हत्या से कुछ दिनों पहले ही उसकी सगाई हुई थी।

राजन
1 फरवरी, 2005 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता राजन पेशे से पेंटर था। अरूर, नदपुरम स्थित उसके घर पर 8 दिसंबर की दोपहर में ,दिन के उजाले में मार्क्सवादी गुंडों ने हमला किया। लंबे समय तक अस्पताल में भर्ती होने के बावजूद राजन की मौत हो गई।

बिजी
12 जून, 2005 को शहीद, अलाप्पुझा

अरयाद में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, बिजी को 12 जून की मध्य रात को मार्क्सवादी गुंडों ने उसके घर पर आक्रमण कर मौत के घाट उतार दिया था। बिजी के निवास पर एक महीने में तीसरी बार हमला किया गया था।

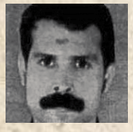

सूरज
7 अगस्त, 2005 को शहीद, कन्नूर

सीपीआई (एम) के एक पूर्व सदस्य, सूरज 2002 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हो गए। उनकी गतिविधियों का क्षेत्र मुझीप्पीलनगाडू था, जहां वह राष्ट्रवादी हाथों में आने के लिए मार्क्सवादी युवकों को प्रेरित करता रहता था। 2004 में मार्क्सवादी हमलावरों ने सूरज पर हमला कर उसे घायल कर दिया था, हालांकि उसका घाव धीरे धीरे भर रहा था लेकिन दंगाइयों ने फिर हमला कर उसे मार दिया।

प्रेमन
27 नवंबर, 2005 को शहीद, कन्नूर

मुझीक्कारा की भारतीय जनता पार्टी बूथ कमेटी के अध्यक्ष थे। 13 अक्टूबर 2005 की सुबह उनपर हमला किया गया था। गंभीर रूप से घायल प्रेमन ने 27 नवंबर को दम तोड़ दिया। प्रेमन एक निडर और साहसी व्यक्ति थे। उनपर पांच बार हमला किया गया था। हालांकि, उन्होंने अपना काम निडरता से जारी रखा।

सत्येश
3 जनवरी, 2006 को शहीद, त्रिसूर

कोडुंगल्लूर की भारतीय जनता पार्टी नगरपालिका क्षेत्र में सत्येश ने पार्टी का आधार जमाने में अहम भूमिका निभाई। 3 जनवरी को दिन की रोशनी में उसकी हत्या कर दी गई थी। कुथूपरमबू नगर पालिका वार्ड में आयोजित चुनाव में सत्येश ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और भाजपा ने सीपीआई (एम) से सत्ता छीनी थी। इसका प्रतिशोध लेने के लिए सीपीआई (एम) ने हत्या को अंजाम दिया।

सुनील कुमार
9 नवंबर , 2006 को शहीद, तिरुवनंतपुर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिला सेवा प्रमुख सुनील अपनी आजीविका के लिए अखबार के एजेंट के रूप में काम करता था । वह दैनिक आधार पर अखबार की खरीद के लिए किळिमानूर गया था। वह एक दुर्भाग्यपूर्ण दिन था जब इस्लामी कट्टरपंथी गुंडों का नेतृत्व कर रहे एनडीएफ द्वारा उसकी हत्या कर दी गई। उसके अंतिम संस्कार की रस्म में हजारों लोग शामिल हुए जो उसकी लोकप्रियता का प्रतीक था।

बीजू
1 दिसंबर, 2006 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

भारतीय जनता पार्टी, वट्टीकावू के कार्यकर्ता बीजू एक रक्तदान शिविर में भाग लेकर घर लौट रहे थे। उसी समय मार्क्सवादी गुंडों ने हमला कर दिन के उजाले में उनकी हत्या कर दी।

मराड नरसंहार: चरमपंथी और आतंकी संगठनों की मिली-भगत से सांप्रदायिक विवाद

भाजपा कार्यकर्ता शिमझीत और कुंजोमन नारायणन की 2 जनवरी 2002 को मुस्लीम लीग के सहयोग से इस्लामिक चरमपंथी एनडीएफ के नेतृत्व में मराड, कोझीकोड समुद्री तट पर हत्या कर दी गई थी, जिसके कारण पूरे इलाक़े में तनाव बना हुआ था। 2 मई 2003 को एकबार फिर परेशानी तब शुरु हुई जब सैकड़ों की तादाद में हथियारबंद इस्लामिक संगठन के सदस्य नाव पर सवार हो गए। दूसरा संगठन मराड जामा मस्जिद के पास एक घर में तलवार और जिलेटिन भरे कोक केन से लैस थे। कुछ ही मिनट में ये सभी वहां जमा हो गए जहां पेशे से भारतीय जनता पार्टी के आठ कार्यकर्ता दिनभर की मेहनत के बाद आराम कर रहे थे। चंद्रन, दसन, गोपालन, कृष्णन, माधवन, प्रजीश, पुष्पराज, और संतोष को आतंकियों ने कुछ ही मिनट में मौत के घाट उतार दिया। नरसंहार के बाद सभी हत्यारे स्थानीय जामा मस्जिद में छिप गए (मराड जांच आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, जिसे कोझीकोड पुलिस आयुक्त ने तैयार किया था, हत्यारे को गिरफ्तारी से बचाने वाली सैकड़ों मुस्लिम महिलाओं से बातचीत की गई थी)।

नरसंहार करने वालों ने बम भी फेंका था, लेकिन सौभाग्य से बम नहीं फटा, नहीं तो सैकड़ों लोग मारे जाते। पुलिस ने बम,तलवार और चाकू जामा मस्जिद से भारी मात्रा में बरामद किया था। माना जा रहा है कि तलवारों का जखीरा भारी नरसंहार के लिए जमा किया गया था, लेकिन सौभाग्य से ऐसा नहीं हो सका। मराड नरसंहार ने इस बात का खुलासा किया कि राज्य में धार्मिक चरमपंथियों का बोलबाला बढ़ रहा है।

जांच एजेंसियो ने यह भी पाया कि ऐसे संगठन आसानी से अपनी जड़े जमा रहे हैं। जांच एजेंसियों को 17 बम के साथ हथियारों का जखीरा भी मिला था। पूर्व पुलिस आयुक्त के अनुसार यह नरसंहार एक योजनागत तरीके से किया गया था। वहां 10 मिनट के अंदर अचानक आक्रमण किया गया।

आक्रमण एक खास समुदाय के लोगों ने किया था। हत्या के दो दिनों बाद पुलिस ने जामा मस्जिद से बम-बारुद और घातक हथियार भी बरामद किये थे। इस अपराध में केरल पुलिस की अपराध शाखा ने 147 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की थी। लोगों की भारी मांग थी कि घटना की न्यायिक जांच हो। लोगों के दबाव पर सत्तारुढ़ ए. के. एंटोनी के नेतृत्व वाली यूडीएफ सरकार ने जिला एवं सत्र न्यायाधीश थोमस पी जोशफ के नेतृत्व में एक आयोग का गठन किया। फरवरी 2006 में आयोग ने अपनी रिपोर्ट सरकार को सौंपी

और सितंबर माह में इसे विधानसभा के पटल पर रखा गया। आयोग ने इसे सांप्रदायिक विवाद करार दिया है। आयोग ने दंगे में विदेशी संगठनों के शामिल होने की संभावना की जांच के लिए मामले को सीबीआई को सौंपने की सलाह दी है।

पी एस सुजीत
17 दिसंबर, 2006 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय सदस्य जिसका काम एगण्टियूर में केंद्रित था, सीपीआई (एम) के गुंडों ने सुजीत की हत्या कर दी थी।

रवि
20 जनवरी, 2007 को शहीद, मलप्पुरम

थिरुनवाय के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ खंड के कार्यवाहक रवि, शनिवार की रात घर लौट रहे थे तो उनका एनडीएफ के कार्यकर्ताओं से सामना हो गया। एक मोटर साइकिल पर सवार होकर आए इस्लामिक कट्टरपंथियों ने बेरहमी से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

शाजू
12 फरवरी, 2007 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय मजदूर संघ कोडकारा क्षेत्र के संयुक्त सचिव, शाजू केरल खाद्य निगम के एक गोदाम में काम करता था। सीपीआई (एम) के गुंडों ने घात लगाकर उसके कमरे में प्रवेश किया और कपड़े बदल रहे शाजू को मौत के घाट उतार दिया।

एडवोकेट वलसाराजा कुरुप
5 मार्च, 2007 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी मंडल समिति के सदस्य, प्रेरिंगलम वलसाराजा थालास्सेरी बार में वकील थे । अपनी पहचान छुपाते हुए एक रात सीपीआई (एम) के गुंडे उनके घर पर एक मामले की चर्चा करने के बहाने पहुंच गए। बातचीत में उलझा कर गुंडों ने उनके सिर पर एक घातक प्रहार किया और जान से मार दिया।

लक्ष्मणन
16 मार्च, 2007 को शहीद, मल्लपुरम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्ता लक्ष्मणन, ओट्टूगल, थानूर में एक दुकान चलाता था। वह एनडीएफ द्वारा मारा गया। इस्लामिक कट्टरपंथियों ने इसका नेतृत्व किया था। दो मोटर बाइक सवार एक बड़े गिरोह की तरह हत्या के लिए पहुंचे और शाम को उसकी दुकान के सामने ही उस पर हमला कर दिया। उन्होंने बेरहमी से उसकी हत्या की थी। लक्ष्मणन की हत्या मलप्पुरम में एक छोटे समय में दूसरी घटना थी।

चंद्रन
20 अप्रैल, 2007 को शहीद, अलाप्पुझा

यह ऐसा समय था जब अलाप्पुझा में अप्रैल 2007 के महीने में संघर्ष देखा गया था |वल्लिकुन्नम कडाविनाल नेदियाथ चैलम वेट्टी कैहेनद्रन जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चरुमोड तालुक के कार्यवाहक के रूप में कार्यरत थे,को मार्क्सवादी गुंडों के हाथों खामियाजा भुगतना पड़ा। प्रतिशोध में उस पर हमला कर उसे मार डाला गया। चंद्रन की मां अपने बेटे की बेजान, विकृत शरीर को देखकर मूर्छित हो गई और चार दिनों बाद उसने अपनी अंतिम सांस ली।

प्रमोद
16 अगस्त, 2007 को शहीद, कन्नूर

थालास्सेरी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता प्रमोद को कम्युनिस्ट गुंडों ने मार डाला था। हत्या के लिए योजना बनाई गई थी। वास्तव में कन्नूर पूरी तरह शांति के लिए जाना जाता था लेकिन अकारण के मुद्दे उछालकर इस घटना को अंजाम दिया गया।

सुनील
22 अक्टूबर, 2007 को शहीद, त्रिसूर

कोडुंगल्लूर में भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता सुनील को क्रूरता से डीवाईएफआई के गुंडों ने मार डाला था।

विनोद कुमार
2 नवंबर, 2007 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता मनलयम के विनोद को चार व्यक्तियों ने घेरकर मौत के घाट उतार दिया। इस्लामी विचारधारा के गुंडे मोटर साइकिल से आए थे। मनलयम जंक्शन के पास घेरकर उसकी हत्या कर दी गई।

विनोद
23 दिसंबर, 2007 को शहीद, अलाप्पुझा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वल्लिकुन्नम मंडल के शारीरिक शिक्षण प्रमुख विनोद बाइक पर सवार होकर घर लौटरहे थे। एनडीएफ इस्लामी गुंडों ने एक बाइक से उसका पीछा किया। विनोद ने जान बचाने के लिए पड़ोस के घर में शरण ली। लेकिन गुंडों ने उसे वहाँ से बाहर घसीटा और आंगन में मार डाला।

निखिल
5 मार्च, 2008 को शहीद, थालास्सेरी

निखिल की हत्या में मार्क्सवादी गुंडे शामिल हुए थे| सुमेश, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तालुक शारीरिक शिक्षण प्रमुख था,थालास्सेरी पर हमले के बाद हिंसा फैलाने की साजिश का शिकार हुआ । भाजपा का सदस्य निखिल एक ट्रक क्लीनर था और अपने परिवार का एकमात्र कमानेवाला था। उसे उसके वाहन से नीचे खींच लिया गया

था और क्रूरता से मार दिया गया था। 2007 में शिवरात्रि के दिन, सुमेश, सेवा निधि के संग्रह के बाद घर लौट रहा था, जब उसका मार्क्सवादी गुंडों से उसका सामना हुआ। हिंसा में सुमेश गंभीर रूप से घायल हो गया था। उसकी हथेली काट दी गई थी और चेहरा हथियारों से खरोंच दिया गया था।

सत्यन

5 मार्च, 2008 को शहीद, कन्नूर

सुमेश पर भीषण हमले के बाद सत्यन मार्क्सवादी क्रूरता का अगला शिकार हो गया था । उसका एक वाहन में घंटों के लिए गुंडों ने अपहरण कर लिया और मार्क्सवादी ने भीषण तरीके से हत्या कर दी थी। उसका सिर तालिबानी शैली में मार्क्सवादी गुंडों द्वारा काट दिया गया था।

महेश

6 मार्च, 2008 को शहीद, कन्नूर

सीपीआई (एम) के गुंडों की हिंसा के शिकार निखिल और सत्यन हिंसा की होड़ का हिस्सा बन गए। महेश उसी का अगला शिकार हुआ। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता महेश पहले मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थकों के दोस्त थे। दोस्ती की आड़ में हत्यारे उसके निवास पर पहुंच गए और उसे दोस्ताना बातचीत के लिए बाहर बुलाया। विश्वासघात की आड़ में भेड़ियों द्वारा हत्या कर दी गई।

सुरेश बाबू

7 मार्च, 2008 को शहीद, कन्नूर

सुरेश बाबू थालास्सेरी में हिंसा की मार्क्सवादी होड़ के चौथे शिकार थे। उसपर भीषण हमले के बाद उसके घर तोड़फोड़ की गई थी और शिकार को अपने ही निवास के आंगन में मौत के घाट उतार दिया गया था।

सुरेन्द्रन

7 मार्च, 2008 को शहीद, कन्नूर

थालास्सरी में मार्क्सवादी गुंडों की खूनखराबे की होड़ के हिस्से के रूप में, भाजपा कार्यकर्ता 62 साल के सुरेन्द्रन पर उसके निवास पर ही हमला किया गया था। अपाहिज सुरेन्द्रन को मौत के घाट उतार दिया गया था। हिंसा के प्यासे मार्क्सवादियों के खिलाफ देश भर में विरोध प्रदर्शन हुआ था।

संदीप

14 अप्रैल, 2008 को शहीद, कासरगोड

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता संदीप विशु की एक शाम को इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा हत्या कर दी गई थी। उसे नेल्लीकुन्नु समुद्री तट के रोड पर चाकू मारा गया था।

रमेश

9 अप्रैल, 2008 को शहीद, त्रिसूर

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता रमेश की वडनापल्ली के पास तालिकुलम में हत्या कर दी गई थी। कम्युनिस्ट की तालिकुलम जिहादी नेक्सस गैंग ने चाकू मारा था। उनका भाई राजेश भी हमले में गंभीर रुप से घायल हो गया था।

एडवोकेट सुहास

16 अप्रैल, 2008 को शहीद, कसारगोड़

भारतीय मजदूर संघ जिला उपाध्यक्ष, एडवोकेट सुहास पर उसके कार्यालय में ही हमला किया गया था। इसे संदीप की हत्या के हिस्से के रूप में जाना जाता है। सुहास की भी हत्या कर दी थी। अयोध्या आंदोलन के दौरान, सुहास के पिता अधिवक्ता एडवोकेट मंजप्पा की सरगोड में इस्लामी कट्टरपंथी द्वारा क्रूरता से हत्या कर दी गई थी।

सुरेश

9 मई , 2008 को शहीद, पलक्कड

कल्लानडीचेल्ला में भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता, सुरेश की 9 मई को मार्क्सवादी पार्टी के गुंडों ने हत्या कर दी थी। मार्क्सवादी गुंडे जो कोझीछाबरा, चित्तूर निर्वाचन क्षेत्र में मंदिर के उत्सव को अव्यवस्थित करने के लिए आए थे , सुरेश ने उनकी मंशा पर सवाल उठाया था जिसके कारण उसकी बेरहमी से हत्या कर दी।

अरुक्षामी

21 जुलाई, 2008 को शहीद, पलक्कड

भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय नेता मलमपुझा, अरुक्षामी रात में एक सर्वदलीय बैठक के बाद घर लौट रहे थे । सीपीआई (एम) के गुंडों ने उसपर रात में हमला कर दिया। बाद में अस्पताल में उसने दम तोड़ दिया।

बैजू

21 अगस्त, 2008 को शहीद, त्रिसूर

पावारत्ती में स्थानीय भारतीय जनता पार्टी के नेता, बैजू पेशे से टैक्सी चालक थे। उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को पास के एक पेट्रोल पंप से अपनी कार में डीजल भरवा

प्राथमिक वर्ग के छात्रों के सामने ही कम्युनिस्ट कसाइयों ने स्कूल टीचर को काट डाला

के.टी.जयकृष्णन मास्टर

1 दिसंबर,1999 को शहीद,कन्नूर

के.टी. जयकृष्णन मोकरी इस्ट अप स्कूल, कुथूपरंबू,कन्नूर जिले स्थित पनुर के पास शिक्षक थे। वे भारतीय जनता युवा मोर्चा, केरल राज्य के उपाध्यक्ष थे।

उस दिन यानी 1 दिसंबर ,1999 को 10:35 बजे जयकृष्ण मास्टर कक्षा 6 के छात्रों को पढ़ा रहे थे, कक्षा के बाहर तैनात उनके अंगरक्षक (कम्युनिस्ट अपराधियों से खतरे के कारण केरल की राज्य सरकार ने उनके जीवन की रक्षा के लिए दिया था)गायब हो गया। चुपके से सात सीपीआई (एम) के कार्यकर्ताओं ने कक्षा में प्रवेश किया, नारेबाजी की और आंदोलन के किसी भी प्रकार जाने के खिलाफ छात्रों को चेतावनी दी। उन्होंने कक्षा के प्रवेश द्वार को बंद कर दिया | उनके हाथ में तलवार- डंडे और छुरे थे। सभी जयकृष्ण मास्टर के पास आए और उसपर कई घातक वार किए । जयकृष्ण मास्टर फर्श पर गिर गए। इतने पर ही वहशी मार्क्सवादी गुंडे नहीं रुके|उन्होंने तब तक छुरा चलाना जारी रखा, जब तक कि जयकृष्ण मास्टर मर नहीं गए।

यह काम वहशी मार्क्सवादी गुंडों ने पांच मिनट के अंदर कर डाला , स्टमार्टम रिपोर्ट में सारे शरीर में 48 घाव व चोटें होने के प्रमाण मिले। जयकृष्ण मास्टर की मौत सुनिश्चित होने के बाद एक वहशी मार्क्सवादी गुंडे ने ब्लैकबोर्ड पर एक चेतावनी भी लिखी कि किसी बच्चे या शिक्षक ने अगर किसी को भी सबूत दिया या पुलिस या अदालत में गवाही दी, तो उनकी भी क्रूर तरीके से हत्या कर दी जाएगी। इसके साथ ही गुंडे जश्न का जुलूस निकालते हुए एक विजयी घटना के उत्साह के रूप में खून से सने हथियारों को दिखाते हुए स्कूल से बाहर निकलकर सड़क पर चले गए। एक क्रूरतम हत्या, राज्य के इतिहास में दर्ज आंकड़े में सबसे जघन्य अपराधों में से एक है। यह हत्या 11 साल के कम उम्र के छात्रों के सामने की गई। यह उम्र बच्चों के मन को सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली मानी जाती है। छोटे बच्चे जिन्होंने ऐसी घटना को अपनी आंखो के सामने देखा, वे आतंक के कारण अपमानित महसूस कर रहे थे।

इस घटना ने उनके मन पर एक अमिट छाप छोड़ने के साथ- साथ उनमें से कईयों की जिंदगी सबसे दर्दनाक चरण में धकेल दी है। बच्चों को लंबे समय तक कड़े परामर्श सत्र से गुज़रना पड़ा, क्रूरता के गवाह ऐसे बच्चों को आघात से उबरने के लिए कई वर्षों तक इंतज़ार करना पड़ा। जयकृष्ण मास्टर का अपराध, मार्क्सवादी विचारधारा के अनुसार एक गहरी

विचारधारा में विश्वास होना है, जिसे वे नहीं तोड़ पाए। सीपीआई (एम) ने केवल बढ़ती लोकप्रियता की वजह से जयकृष्ण मास्टर की हत्या कर दी। मार्क्सवादी गुंडों ने इसका भी ध्यान नहीं रखा कि गहरा मानसिक आघात बच्चों को जीवन में लंबे समय तक सहना पड़ेगा। इस तरह के रक्तपात की गवाह उनकी आँखें हमेशा रहेंगीं यह 1996 का समय था जब भाजपा के कन्नूर ज़िला सचिव पन्नियार चंद्रन की हत्या भाकपा (एम) के अपराधियों द्वारा उनकी पत्नी के सामने की गई थी। उसकी हत्या के बाद भाजपा को एक

बड़े झटके का सामना करना पड़ा। लेकिन जयकृष्ण मास्टर ने जिम्मेदारी संभाली और 14 पूर्णकालिक प्रतिबद्ध पार्टी कार्यकर्ताओं के समर्थन के साथ कन्नूर में संगठन का सफल नेतृत्व किया। जयकृष्ण मास्टर के अथक प्रयास और प्रतिबद्धता से कन्नूर में पार्टी गतिविधियों को बल मिला है।

उन्होंने कन्नूर जिले में सीपीआई (एम) के अपराधीकरण के बारे में जनता को सूचित करने के लिए कई सार्वजनिक बैठकों की श्रृंखला आयोजित कर लोगों की भारी भीड़ को आकर्षित करने में कामयाबी हासिल की। जनता के बढ़ रहे समर्थन और जयकृष्ण मास्टर की समर्पित भावना से जिला सीपीआई (एम) इकाई में दहशत का माहौल कायम हो गया जिसके कारण जयकृष्ण को रास्ते से ही हटाने का फैसला सीपीआई(एम) ने किया। कई अवसरों पर सीपीआई (एम) के स्थानीय नेताओं ने खुली चेतावनी जारी कर "बहुत जल्द ही अपने अगले लक्ष्य को दर्शाया था। के.टी. जयकृष्ण मास्टर स्थानीय लोगों के बीच सबसे सम्मानित व्यक्तियों में से एक थे। बहुत ही मृदुभाषी स्वभाव के व्यक्ति होने के कारण उनसे सभी लोग प्यार करते थे। केरल के किसी भी हिस्से में , विशेष रूप से कन्नूर जिले में केवल उनके भाषणों को सुनने के लिए भारी भीड़ जमा होती थी। उनके व्यक्तित्व की एक अद्वितीय विशेषता यह थी कि जयकृष्ण मास्टर अपने राजनीतिक विरोधियों का अपमान या खिल्ली उड़ाने वाली आदत कभी नहीं रखते थे ।

जिस तरह से सीपीआई (एम) द्वारा अपराध किया गया था वह न केवल जयकृष्ण मास्टर के रिश्तेदारों बल्कि पूरे समुदाय को हैरान करने वाला था । निर्दयता से उनका उस समय कत्ल किया गया जब वह निहत्थे थे, जब वे अपने प्रिय छात्रों को ज्ञान प्रदान करने जैसे महान कार्य में जुटे हुए थे। प्यासे हमलावरों ने समय और वारदात स्थल का चुनाव पूरे ध्यान से किया था। वे जानते थे कि जयकृष्ण की हत्या उसके अपने घर में या स्कूल जाने के रास्ते पर नहीं की जा सकती और इसलिए शिक्षा के मंदिर में इस भीषण घटना को अंजाम दिया गया। पांच साल की जांच के बाद, अतिरिक्त जिला सत्र न्यायालय और बाद में केरल उच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत सात आरोपियों में से पांच को मौत की सजा सुनाई। छठे आरोपी को सत्र न्यायाधीश ने बरी कर दिया।

जबकि सातवें आरोपी की एक ट्रेन की चपेट में आने से मृत्यु हो गई।

कोर्ट ने इस फैसले की पुष्टि करते हुए कहा है कि हत्या, एक कक्षा के अंदर छात्रों के सामने की गई, साथ ही आरोपियों ने अपनी पहचान छुपाने के लिए कोई प्रयास नहीं किया। केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने इस पर भी गौर किया कि किस तरह से आरोपियों ने" क्लास में पहुंचकर और एक अत्यंत क्रूर विचित्र, शैतानी, विद्रोही और नृशंस तरीके से" के.टी. जयकृष्णन की हत्या की।

फैसला सुनाए जाने के बाद सीपीआई (एम) कार्यकर्ताओं ने सत्र अदालत और उच्च न्यायालय के सामने प्रर्दशन भी किया। उन्होंने न्यायाधीशों के खिलाफ नारेबाजी की और यहां तक कि उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी। सीपीआई (एम) ने कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए बहुत ही कम समय में दो करोड़ रुपए से अधिक की राशि जुटाई थी । मौत की सजा के खिलाफ सीपीआई (एम) के राज्य सचिवालय की सलाह पर सभी पांचदोषियों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील प्रस्तुत की है।

रहे थे । तभी इस्लामी कट्टरपंथी, एनडीएफ द्वारा हमला किया गया। उन्होंने अपने आखिरी कुछ घंटों की सांसें अस्पताल में लीं ।

अनूप

11 अक्टूबर, 2008 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक सक्रिय सदस्य अनूप पर थालास्सेरी में सीपीआई (एम) के गुंडों ने एक बम फेंककर तब हमला किया था, जब वह अपने दोस्त के घर से लौट रहा था। उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पूरे इलाके में विजयादशमी समारोह जोरों से शांतिपूर्ण मनाया जा रहा था। आरएसएस द्वारा एक रैली का आयोजन किया गया था। जिसमें लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। विशाल उपस्थिति को देखते हुए मार्क्सवादी गुंडों ने इसमें खलल डालने का प्रयास किया। अनूप उनके गुस्से का शिकार हो गया था।

रंजीत

17 अक्टूबर, 2008 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

मनमथला मंडल शारीरिक शिक्षण प्रमुख,रंजीत मनमथला में अपनी एक सब्जी की दुकान चलाता था। एक दिन सुबह के समय,जब वह दुकान खोल रहा था तो सीपीआई (एम) के गुंडों ने हमला कर दिया और उसे काट दिया। यह एक क्रूर हत्या थी। शरीर को विकृत कर छोड़ दिया गया था।

विनोद

19 नवंबर, 2008 को शहीद, त्रिसूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ,थिरुनेल्लूर के पूर्व मंडल कार्यकर्ता, अरक्कल विनोद को मार्क्सवादी गुंडे और इस्लामवादी चरमपंथियो के एक समूह ने मौत के घाट उतारा था। विनोद की मौके पर ही मौत हो गई थी। हमलावरों के समूह ने जानबूझ कर विनोद की बाइक में कार से टक्कर मारी थी, विनोद ने मोटर साइकिल लेकर भागने का प्रयास भी किया लेकिन आगे जाकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना के बाद विनोद ने बाइक छोड़कर भागने की कोशिश की, लेकिन हमलावरों ने उसका पीछा कर उसे बड़ी बेरहमी से काट दिया।

सीजू

10 मार्च, 2009 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मल्लूर पंचायत का कार्यकर्ता, सीजू सीपीआई (एम) गुंडों के जानलेवा हमले का शिकार हुआ था।

विनयन

12 मार्च, 2009 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक सक्रिय सदस्य, विनयन पेशे से मजदूर था। एक स्थानीय दुकान में दिन के काम के बाद वह आराम कर रहा था। उसी समय मार्क्सवादी गुंडों ने हमला कर दिया। गंभीर रूप से घायल विनयन को थालास्सेरी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उसने अंतिम सांस ली।

साजित

27 अप्रैल, 2009 को शहीद, कन्नूर

मत्तनूर में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता, साजित पहले सीपीआई (एम)का कार्यकर्ता था । राष्ट्रवादी संगठन में वे अपनी नृशंस हत्या से दो साल पहले जुड़ा था । साजित एक निजी बस में चालक के रूप में काम कर रहा था। वह अपने दोस्त बीजू के साथ भारतीय जनता पार्टी के एक कार्यकर्ता की शादी के रिसेप्शन में भाग लेने के बाद घर लौट रहा था। आधी रात थी जब दोनों को सीपीआई (एम) के गुंडों का सामना करना पड़ा था। साजित की मौके पर ही मौत हो गई। लहूलुहान बीजू चमत्कारिक ढंग से बच गए।

विनिल वी

3 मई, 2010 को शहीद, त्रिसूर

वडनप्पल्ली में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता विनिल पर कम्युनिस्ट गुंडों ने, चवक्कड़ के पास 3 मई की रात को हमला किया था और मार दिया ।

राजेश

10 अगस्त, 2010 को शहीद, कन्नूर

भारतीय जनता पार्टी, पनूर के कार्यकर्ता राजेश पर हथियारों से लैस सीपीआई (एम) के गुंडों ने उस समय हमला किया था जब वह कुन्नुथू परम्बु में एक जीप में बैठा हुआ था। बाद में उन्होंने अस्पताल में दम तोड़ दिया।

रतीश

2 दिसंबर, 2010 को शहीद, पलक्कड़

कनजीकोड के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शाखा कार्यवाहक रतीश पर सीपीआई (एम)के गुंडों ने बस से यात्रा करते समय हमला किया था। बाद में उन्होंने दम तोड़ दिया।

मनोज

12 फरवरी, 2012 को शहीद, कोझकोड

भारतीय जनता मजदूर संघ के सचिव मनोज को मार्क्सवादियो के 20 हथियारबंद गुंडों ने मौत के घाट उतारा था। निर्मम हत्या 9.30 बजे रात में पीड़ित के घर पर ही हुई। हत्या के लिए कुछ गुंडे उनके घर के प्रवेश द्वार पर खड़े हो गए ताकि मनोज भाग न सके। मनोज की हत्या उसकी पत्नी व बच्चों के सामने ही कर दी गई।

शिंजित और कुन्जूमोन

2 जनवरी, 2002 को शहीद, कोझिकोड

मराड, कोझिकोड के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता, शीमजिथ और कुंजूमोन नारायणन की हत्या कर दी। मराड पहली बार नरसंहार होने की हैसियत से इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया है। उनकी हत्या उस समय की गई जब इस्लामी कट्टरपंथी 2 जनवरी को मराड तट पर हिंसा फैला रहे थे। मराड में 6 दिसंबर 2001 से ही तनाव बना हुआ था। इस्लामिक कट्टरपंथी अरएसएस और भाजपा से जुड़े मछुआरों को अपना निशाना बनाते थे। उनकी नावों पर हमला करते थे।

सुजीश और सुनील

2 मार्च, 2002 को शहीद, कन्नूर

मेलूर थालास्सेरी में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय स्वयंसेवक सुजीश और सुनील पहले सीपीआई (एम) के सदस्य थे। उनके शामिल होने से आरएसएस की जडें मजबूत होने लगी । साथ ही मार्क्सवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए राष्ट्रवादी संगठन आरएसएस में आने का का रास्ता भी बना। इससे घबराए वामपंथी संगठनों को काफी झटका लगा और दोनों को मौत के घाट उतारने का निर्णय लिया गया ।

शेरोन

19 जनवरी, 2012 को शहीद, त्रिशूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मल्लेस्सरी शाखा के कार्यवाहक शेरोन एक बेहद सक्रिय और जीवंत व्यक्ति थे जिन्होंने इस क्षेत्र पर एक ठोस प्रभाव डाला । बिना किसी उकसावे के कम्युनिस्ट गुंडों ने आधी रात को हिंसा फैलाकर बेवजह शेरोन को चाकू मारा। अगले ही दिन अस्पताल में उसकी मौत हो गई।

विनूमोन

6 सितंबर, 2013 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता विनूमोन थमलम जा रहा था। रास्ते में चार सदस्यीय गिरोह उसकी प्रतीक्षा में था। उस पर तेजधार हथियार से हमला किया गया। हमलावारों ने बेरहमी से उसे मार डाला।

विनोद कुमार

2 दिसंबर, 2013 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शाखा कार्यकर्ता विनोद एक बहुत ही मृदुभाषी व्यक्ति था। पेशे से वह फोटोग्राफर था। प्रत्येक साल एक दिसंबर को केरल में जयकृष्ण मास्टर बलिदान दिवस का आयोजन किया जाता है। विनोद स्वयंसेवकों की सभा में भाग लेने के लिए जा रहा था। 2013 का वह दुर्भाग्यपूर्ण दिन जब कन्नूर उस दिन को मना रहा था तभी मार्क्सवादी गुंडों के हथियारों से लैस एक भारी गिरोह ने,जिस वाहन में स्वयंसेवकोंसहित विनोद कुमार यात्रा कर रहे थे, रोक लिया। घातक हथियारों और देशी बमों से लैस सशस्त्र हमलावरों का क्रोध खूनखराबे में बदल गया। गंभीर रुप से घायल विनोद की परियारम मेडिकल महाविद्यालय में मौत हो गई। इस घटना में कई स्वयंसेवक गंभीर रूप से घायल हो गए थे ,जो लंबी अवधि से अनमोल जीवन के लिए जूझ रहे हैं।

अनूप

19 दिसंबर, 2013 को शहीद, कोझिकोड

अनूप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, कुट्टीयाडी के शाखा मुख्य शिक्षक थे। उन्होंने अवैध खनन माफिया के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया था और पश्चिमी घाट की रक्षा करने की मांग की थी। एक दिन जब अवैध खदान माफिया के खिलाफ प्रर्दशन किया तो कथित तौर पर स्थानीय सीपीआई (एम) के एक नेता के नेतृत्व में कम्युनिस्ट गुंडों ने कच्चे तेल का देशी बम फेंक कर कहर बरपाया। अनूप व कई अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। अनूप की मौत उसी दिन हो गई।

राजन पिल्लई

1 जून, 2014 को शहीद, कोल्लम

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता राजन पलाप्पली जंक्शन पर एक छोटी सी चाय की दुकान का मालिक था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह की पूर्व संध्या पर मार्क्सवादी गुंडों ने उसपर गंभीर रूप से हमला किया था। राजन का अस्पताल में इलाज चल रहा था। एक सप्ताह बाद उसने दम तोड़ दिया।

पल्लाप्पल्ली जंक्शन पर नरेंद्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह को लेकर भारतीय जनता पार्टी के झंडे लगाए गए थे। झंडे राजन के स्वामित्व वाले चाय की दुकान में बंधे थे। शरारती तत्त्वों का एक समूह दुकान में लगे झंडों को नष्ट करने के लिए आया था।

उस समूह ने राजन पिल्लई पर दूसरों को सूचना भेजने का आरोप लगाया और भाजपा के झंडे के बारे में पूछताछ शुरू कर दी। गुंडों ने उसे निर्दयता से पीटा। राजन ने मरने से पहले अपने बयान में सीपीआईएम-डीवाईएफआई के स्थानीय नेता का नाम लिया।

सुमेश और पीथमबरम

15 मार्च, 2002 को शहीद,अलप्पझू

मारैकुलम आरएसएस के सदस्य सुमेश और पीथमबरम इसाई आतंकियों की हिंसा का शिकार हुए। इसाई आतंकियों ने पहले उनके घर पर हमला किया और दोनों को घसीटकर घर से बाहर निकालकर हत्या कर दी। सुमेश और पीथमबरम के पैर के निचले हिस्से को पहले काट कर समुद्र में फेंक दिया गया।पीथमबरम का शव आज तक नहीं मिला। हत्या थाईकल समुद्री तट के मारीकुलम में की गई। बाद में इसाई आतंकियों ने कई हिंदुओं के घरों पर तांडव मचाया।

के के राजन

14 फ़रवरी, 2015 को शहीद, कन्नूर

जनशक्ति सम्मेलन में भाग लेकर भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता राजन अन्य भाजपा कार्यकर्ता के साथ एक जीप से घर लौट रहे थे। के टी जयकृष्ण मास्टर बलिदान दिवस पर पय्यनुर में भाजपा जिला समिति द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। सीएन विनोद कुमार की पहली पुण्य तिथि भी थी। सीपीआई (एम) के कार्यकर्ताओं ने राजन की जीप समेत कई वाहनों पर पत्थर फेंके। हमले में राजन को गंभीर चोटें आई। परियारम मेडिकल कॉलेज अस्पताल उसे ले जाया गया। अस्पताल में भर्ती होने के तीन महीने के बाद राजन ने 14 चोटों के आगे घुटने टेक दिए।

सुरेश

27 अगस्त, 2014 को शहीद, कन्नूर

भारतीय मजदूर संघ कार्यकर्ता, सुरेश पेशे से टैक्सी चालक था। एक अभियान पर जा रहे सुरेश पर बहाना बना कर 17 अगस्त को सीपीएम के गुंडों ने हमला किया था। हमलावर पांच की संख्या में थे। सभी ने लोहे की छड़ और तलवारों के साथ उसे घेर लिया। सुरेश के सिर पर मारा गया था, जिसके कारण खून का थक्का जमा हो गया था। 10 दिनों बाद 27 को उसकी मौत हो गई।

टी अश्विनी कुमार

10 मार्च, 2005 को शहीद, कन्नूर

कन्नूर के राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ, जिला बौद्धिक प्रमुख, अश्विनी कुमार एक अच्छे वक्ता के तौर पर जाने जाते थे। वह अच्छी तरह से पुराणों में निपुण थे। प्रगति पैरालैल कॉलेज, इरीटी में वह एक शिक्षक थे। एनडीएफ इस्लामी कट्टरपंथियों द्वारा उनकी बेरहमी से हत्या की गई थी। जिस समय हत्या की गई थी उस समय अश्विनी कुमार एक बस में यात्रा कर रहे थे। बस को रोकने के लिए वाहन पर बम फेंका गया। उसे बस से घसीटकर बाहर निकाला गया और मौत के घाट उतार दिया गया। उसका चेहरा पहचान से परे क्षत-विक्षत हो गया था।उनकी बढ़ती लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1000 लोग उनके अंतिम संस्कार में भाग लेने आए।

हिंसा कम्युनिस्ट की विरासत

-तरुण विजय
राज्यसभा सदस्य

वामपंथी हिंसा की बर्बरता की तुलना अक्सर तालिबान से की जाती है जो कि लगातार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष आरोपों में मारे गए राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के जीवित परिवार के सदस्यों को परेशान करता रहता है।

भारत धार्मिक और चरमपंथियो के बीच एक युद्ध के चरणों से गुजर रहा है, जैसा कि कश्मीर से लेकर छत्तीसगढ़, पूर्वोत्तर में देखा जा सकता है | साथ ही केरल में ज्यादातर देखा जाता है। केरल को भगवान के अपने देश के रूप में जाना जाता था।

जो लोग भारत की सभ्यता के मूल्यों की रक्षा के लिए खड़े रहे हैं और कई सदियों से विदेशी आक्रमणकारियों की हिंसक रणनीति का जिन्होंने विरोध किया है,उनके खिलाफ यह एक युद्ध है। हालांकि बाहरी संरचना में बदलाव हुआ है लेकिन हिंदू धार्मिक समाज और परंपरा के दुश्मनों का उद्देश्य समान है। मिट्टी की खुशबू का प्रतिनिधित्व करने वालों का उन्मूलन कर और मानसिकता बदलकर अभारतीयकरण की विचारधारा थोपने की कोशिश बनी हुई है। यह औपनिवेशिक मानसिकता के समान है, जो अपने भाइयों का खून बहाकर आतंक का उन्मुक्त शासन स्थापित करने की रही है। यह नागरिकों के संवैधानिक स्वतंत्रता की गारंटी की विरोधी तथा एक लोकतंत्र और बहुलतावादी रुख के विरूद्ध खड़ी है। इसमें न सिर्फ विदेशी विचारधारा और काम करने की मानसिकता प्रकट होती है,

अपितु धन और रणनीतिक प्रशिक्षण भी विदेशी रंग में रंगा है। हिंदुओं की शांतिपूर्ण, प्रगतिशील और सांस्कृतिक धारा अकारण नाज़ी नफरत ब्रिगेड की स्तालिनवादी और पोल पॉट युग की क्रूर छापामारों की विधि से हमले का सामना करती है।

आईएसआईएस के साथ प्रतिस्पर्धा करता वामपंथी कम्युनिस्ट आतंकवाद भारतीय नागरिकों की सुरक्षा और मानवाधिकारों के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है। विडंबना यह है कि न तो संसद में और न ही संसद से बाहर कम्युनिस्ट किस्म के आतंकवाद का मुद्दा उठाए जाने या विचार-विमर्श करने की अनुमति दी गई है, जिसके कारण इसके निर्णायक उन्मूलन के लिए आम सहमति नहीं बनायी जा सकती।

भारत का दक्षिणी राज्य केरल इस तरह के वैचारिक आतंकवाद की चपेट में घिर गया है और इन अभारतीय तत्त्वों नें इसे राजनीतिक हत्याओं का राज्य बना दिया है। चुनिंदा राष्ट्रवादी युवा भारतीयों की हत्या चरमपंथियों, इस्लामवादियों और असहिष्णु कट्टरपंथी प्रचारकों के बीच एक अपवित्र गठजोड़ को साबित करता है।

1957 से, केरल में जब पहली निर्वाचित कम्युनिस्ट सरकार,सीपीएम नेता ईएमएस नंबुदीरीपाद के नेतृत्व में गठित की गयी थी , उसके बाद से ही आरएसएस, एबीवीपी, विहिप और जनसंघ-भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ वैचारिक हिंसा ने अपनी जड़ें जमा ली थी। भारत में राजनीतिक हत्याओं की सूची में केरल का नाम शीर्ष पर पहुंचाने में भाकपा और सीपीआई (एम) ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी।

विचारधाराओं का विरोध करने वाले सदस्यों को निर्दयता से लक्षित किया गया है। उदाहरण के तौर पर जयकृष्ण मास्टर, एक शिक्षक को महज 10 साल के छठी कक्षा के निर्दोष छात्रों के सामने सत्तारूढ़ मार्क्सवादी सदस्यों ने निर्दयता से काट कर मौत के घाट उतार दिया था। ऐसा सिर्फ इसलिे किया गया था

क्योंकि उसने एक राष्ट्रवादी पार्टी के साथ खड़े होने का साहस दिखाया था। इसके अतिरिक्त, राज्य में ऐसा वामपंथी राजनीतिक खेल जारी है, जिसने केरल के कई शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालय परिसरों पर असहिष्णुता का एक बदसूरत निशान छोड़ दिया है। वास्तव में हिंसा और नरसंहार की वामपंथी राजनीतिक विचारधारा एक सर्वविदित तथ्य रही है,

जिसने अभिव्यक्ति की आजादी को कुचल दिया है। मैं उन सबों को सैल्यूट करता हूं जिन्होंने अपने प्रयासों से इसे संभव बनाया है और आशा है कि ये शहीद हिंसक कृत्यों के खिलाफ खड़े होने वाले राष्ट्रवादियों को प्रेरित करेंगे और इस प्रकार चरमपंथ को हराने के लिए सही मायने में भगवान के अपने देश इस राज्य में 'शांति और सौहार्द' लाया जा सकेगा।

हमारी श्रद्धांजलि और प्रणाम उन सभी को जिन्होंने भारत माता के चरणों में अपने जीवन न्योछावर किया।

शिनोज और विजित
28 मई, 2010 को शहीद, कन्नूर

विजित, भारतीय जनता पार्टी माही वार्ड समिति के अध्यक्ष थे और शिनोज माही वार्ड समिति के सचिव। दोनों पूरी भावना से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों में शामिल थे। उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन, दोनों एक मोटर बाइक पर यात्रा कर रहे थे, जब मार्क्सवादी गुंडों ने एक बम उन पर फेंका । दोनों बाइक से गिर गए । मार्क्सवादी गुंडों ने बेरहमी से दिन के उजाले में उन्हें शहर क्षेत्र के पास काट दिया।

पूरी घटना को देखने वाले स्थानीय निवासी सुजीत का कोई राजनीतिक जुड़ाव नहीं था। पूरे तांडव के गवाह सुजीत को घटनास्थल पर ही दिल का दौरा पड़ा और वह मर गया।

विशाल कुमार
17 जुलाई, 2012 को शहीद,अलाप्पुझा

बीएससी (इलेक्ट्रॉनिक्स) के छात्र, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद तालुक, चेंगनूर के अध्यक्ष और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नगर शारीरिक शिक्षण प्रमुख, विशाल अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं के साथ 16 जुलाई को नए छात्रों का स्वागत करने के लिए चेंगनूर ईसाई कॉलेज़ के सामने इकट्ठे हुए। हर साल अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सरस्वती पूजा का आयोजन करता था।

नौ बाइक पर एनडीएफ और इस्लामी कट्टरपंथी गुंडे कैम्पस में तलवार,कटारे, हथियार, एसिड बल्ब आदि लेकर घुसे और चिल्लाकर कहने लगे कि "हम भगवा ध्वज धारण करने वाले कुत्तों को बर्दाश्त नहीं करेंगे। उन्होंने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े छात्रों पर हिंसक हमले किए।

आवाज सुनकर विशाल घटनास्थल पर पहुंचे। इस्लामी गुंडों ने विशाल के पेट में छुरा घोंप दिया। विशाल के साथ-साथ कई अन्य अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं पर भी हमला किया गया। विशाल को कोट्टायम मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। 17 जुलाई को उन्होंने अंतिम सांस ली।

सचिन गोपाल
5 सितंबर, 2012 को शहीद, कन्नूर

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता, 21 साल के सचिन को इस्लामी चरमपंथी संगठन से संबद्ध परिसर मोर्चे के कार्यकर्ताओं ने कन्नूर जिले के पल्लीकुन्नू स्कूल के सामने 6 जुलाई 2012 को हमला कर घायल कर दिया था। गंभीर रूप से घायल सचिन को अस्पताल में भर्ती कराया गया था। हालांकि, एक लम्बी लड़ाई के बाद उसने 5 सितंबर को अंतिम सांस ली।

शहीद, मुरली मनोहर

चेंगन्नुर से आरएसएस के प्रचारक मुरली मनोहर उर्फ नारायणन कुट्टी को अस्सी के दशक में असम में संगठन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। 1990 में असम में अपने कार्यकाल के दौरान उल्फा द्वारा उसका अपहरण कर लिया गया था। तब से आजतक उसके बारे में कोई जानकारी नहीं है।

अभिलाष

28 अगस्त, 2015 पर शहीद, त्रिसूर

वासुपुरम, कोडाकारा के भारतीय जनता पार्टी बूथ सचिव अभिलाष को ओणम के दिन कम्युनिस्टों के गुंडों ने चाकू से हमला किया । उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाद में उसकी मौत हो गई। अभिलाष भाजपा के एक सह कार्यकर्ता सतीश के सहयोगी थे, जो गंभीर रूप से हमले में घायल हो गया था।

सुजीत

16 फेब्रुअरी, 2016 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता, सुजीत पूर्व में आरएसएस के मंडल कार्यवाहक थे। दस हथियारबंद मार्क्सवादी गुंडों का एक गिरोह ने अरोली आजाद कालोनी में सुजीत के घर में घुसकर उसे क्रूरता से मार डाला। सुजीत को अपने माता-पिता के सामने ही मौत के घाट उतार दिया गया था। हालांकि सुजीत को एकेजी अस्पताल में भर्ती कराया गया लेकिन उसका जीवन बचाया नहीं जा सका। उसके माता-पिता और भाई गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

प्रमोद

20 मई, 2016 को शहीद, त्रिसूर

नए एलडीएफ सरकार के मुख्यमंत्री के रूप में पिनारयी विजयन के कार्यभार ग्रहण करने के बाद भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता, प्रमोद की हत्या, पहली ऐसी घटना थी। 33 वर्षीय प्रमोद पर मार्क्सवादी प्रायोजित संघर्ष में स्थानीय एलडीएफ उम्मीदवार ई टी टायसन की जीत के बाद हमला किया गया था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, मार्क्सवादी गुंडों का गिरोह ने जीत के समारोह की आड़ में भाजपा कार्यकर्ता को आतंकित कर दिया। । गिरोह एक टिपर ट्रक में आया और प्रमोद व दूसरों को कोसने लगा । प्रमोद पर ईंट से हमला किया। जिससे सिर में गंभीर चोटें आई।

सीके रामचंद्रन

11 जुलाई, 2016 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता और भारतीय मजदूर संघ के कार्यकर्त्ता रामचंद्रन 52 साल के थे। पेशे से ऑटो चालक थे| वे बीएमएस के नेतृत्व वाले ऑटो ड्राइवर एसोसिएशन का नेतृत्व करते थे। रामचंद्रन की मार्क्सवादी गुंडों और शरारती तत्त्वों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

विनीश

3 सितंबर, 2016 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यकर्ता, विनीश को थिल्लांकर पंचायत कार्यालय के परिसर में शाम 7:30 बजे बेरहमी से काट दिया गया था। भारी हथियारों से लैस सीपीआई (एम) के गुंडों के बड़े गिरोह ने उस घटना को अंजाम दिया । उसकी हत्या पार्टी के बड़े नेता की मार्क्सवादी साजिश का नतीजा माना जा रहा है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि खून बहा रहे मार्क्सवादी गुंडे विनीश के पास खड़े थे। हथियार लैस गुंडे विनीश को अस्पताल ले जाने वालों को भी धमकी दे रहे थे। विनीश को जब तक पुलिस अस्पताल पहुंचाती तब तक बहुत देर हो चुकी थी, स्थानीय सूत्रों ने कहा।

विष्णु

7 अक्तूबर, 2016 को शहीद, तिरुवनंतपुरम

विष्णु भाजपा युवा मोर्चा के कार्यकर्ता थे। कुशल नेतृत्व कौशल के धनी वे बारहवीं कक्षा के छात्र थे, एवं एक विनम्र दलित परिवार से थे। मार्क्सवादी गुंडों द्वारा कण्णमूला में उनके घर पर उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी थी। इस दुर्घटना में उनकी माँ समेत उनके परिवारजनों को गंभीर चोटें आयी थी।

रमित

12 अक्तूबर, 2016 को शहीद, कन्नूर

भाजपा के कार्यकर्ता और पिनराई के मूल निवासी रमित को कम्युनिस्ट गुण्डों द्वारा केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के गृह ग्राम में दिन दहाड़े हत्या कर दी गई थी। यह घटना रमित के घर के समीप उनकी माँ और गर्भवती बहन के सामने हुआ और यह भयावह दृश्य देख वे बेहोश हो गये। रमित के पिता उत्तमन को भी इसी तरह मार्क्सवादियों द्वारा धोखा देकर आठ साल पहले मारा गया था। पेशे से एक बस चालक, उन्हें वाहन से बाहर निकालकर हमलावरों ने मौत के घाट उतार दिया था।

एलामथोट्टाथिल मनोज

1 सितंबर, 2014 को शहीद, कन्नूर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक सेवक संघ जिला शारीरिक शिक्षण प्रमुख, मनोज उर्फ काठीरुर मनोज ने अपना जीवन देश की सेवा के लिए समर्पित कर दिया था। कन्नूर में संघ की गतिविधियों से कम्युनिस्टों गुंडों के लंबे समय से चल रहे आतंक को खत्म करने की कोशिश वह लगा हुआ था। मनोज पर डायमंड मुक्कु के पास उस समय हमला किया गया जब वे कार से घर लौट रहे थे। वामपंथी गुंडों ने उनकी कार पर बम फेंका और दिन के उजाले में उसे काट दिया।

निर्मल

12 फ़रवरी, 2017 को शहीद, त्रिशूर

निर्मल भारतीय जनता पार्टी के एक उत्साही और सक्रिय कार्यकरता थे, वो स्नातकोत्तर की पढ़ाई कर रहे थे । कोककुलांगरा भगवती मंदिर, मुक्काट्टुकारा, त्रिशूर में आयोजित उत्सवों में भाग लेते वक़्त, वामपंथियों ने क्रूरता से उनकी हत्या कर दी, उस वक़्त वो सिर्फ़ 20 वर्ष के थे।

मरकसिस्टों ने मध्यरात्रि को मंदिर के मैदान के समीप उनपर हमला किया और उनकी छाती और पीठ पर चाकू से जान लेवा हमला कर किया। गहरी चोट के कारण अस्पताल पहुँचने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गयी । उसी रात एक और बीजेपी कार्यकर्त्ता चिराइकिंबंधु थॉमस उर्फ मिथुन पर भी हमला किया गया और उन्हें भी काफ़ी चोट आयी ।

रवींद्रनाथ

18 फ़रवरी, 2017 को शहीद, कोल्लम

रवींद्रनाथ पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त उपनिरीक्षक थे, वो भाजपा के सक्रिय कार्यकर्ता थे। रवींद्रनाथ ने भाजपा का प्रतिनिधित्व कड़ेकक्कल पंचायत समिति के अध्यक्ष के रूप में किया। कड़ेकक्कल मार्क्सवादी हिंसा के लिए काफ़ी कुख्यात है।

वामपंथियों ने 2 फरवरी की रात को, इलारेरामोद्दो, कडयक्कल में भाजपा कार्यकर्ताओं पर भारी हिंसक हमले किए । यह सुनकर, रवींद्रनाथ घटनास्थल पर स्थिति का जायज़ा लेने पहुँचे, उनका उद्देश्य स्तित को नियंत्र में लाना था, और वो उग्र भीड़ को शांत कराना चाहते थे।

परंतु , मार्क्सवादइयों के मन में कुछ और ही षड्यंत्र चल रहा था; घर लौटते समय रवींद्रनाथ पर बाइक पर सवार वामपंथियों ने हमला कर दिया । इस गिरोह ने बड़ी निर्दयता से उनपर हमला किया, रवींद्रनाथ को सिर पर काफ़ी चोटें आयीं ।

उन्हें तुरंत ही कदयक्कल अस्पताल में ले जाया गया और बाद में तिरुवनंतपुरम में मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल भी ले जाया गया । वहाँ वह आई॰सी॰यू॰ में थे, पर डॉक्टर उन्हें बचा नहीं पाए और रवींद्रनाथ ने 18 फरवरी 2017 को अंतिम सांस ली।

अनिल कुमार

7 नोवेम्बर, 2016 को शहीद , तिरुवनंतपुरम

अनिल सी॰पी॰आई॰एम॰ के पूर्व कार्यकर्ता थे। अनिल कुमार राष्ट्रवादी भावनाओं से प्रेरित थे, और ईसी कारण वह भाजपा से जुड़े, वो ऐयूर बूथ के अध्यक्ष थे । एक दिन मार्क्सिस्ट पार्टी के लोगों ने उन्हें मरियपुरम, नेय्यतिनकर में घेर लिया और बद्र ही क्रूर तरीक़े से उनकी हत्या कर दी, ये भयानक घटना देर रात को हुई । उनको गले और सिर पर भारी चोट लगा था, इलाज के लिए उन्हें जल्द से जल्द अस्पताल ले जाया गया पर डॉक्टर उनको बचा ना सके और उन्होंने वहाँ अंतिम साँस ली ।

सुजीत

1 जनवरी, 2016 को शहीद, पालककाड़

सुजीत एलवांचेरय गाँव, कोल्लेनगिड़े में भाजपा के कार्यकर्ता थे । वो बहुत ही साधारण परिवार से आते थे और वो ग्रैजूएशन की पढ़ाई कर रहे थे । उन्हें कोत्तायामकादु में कॉम्युनिस्ट लोगों ने सुबह सुबह बंधक बना लिया और बड़ी बहरमी से चाकू मारकर उनकी हत्या कर दी । उनके मित्र अखिल पर भी हमला किया गया और उनके धड़ और जाँघों पर भारी चोट आयी ।

संतोष कुमार

18 जनवरी, 2017 को शहीद, कण्णूर

संतोष कुमार धर्मादोम के निकट अंडलूर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के शाखा के मुख्य शिक्षक थे । वो अंडलूर से भाजपा के बूथ अध्यक्ष भी थे । 2015 पंचायत चुनाव में वो भाजपा के उम्मीदवार थे।

संतोष कुमार पर वामपंथियों ने आधी रात में उनके घर पर हमला किया और उनकी जान ले ली। उस वक़्त उनकी पत्नी और बेटी गाँव में नहीं थे, मार्क्सिस्ट लोगों ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और उन्हें अकेले पा कर उन पर जान लेवा हमला कर दिया । उन्हें जल्द से जल्द अस्पताल ले जाया गया, परंतु अधिक रक्त बहाव के कारण उनकी अस्पताल पहुँचने के पहले ही मृत्यु हो गयी। इस घटना के लिए पुलिस ने 6 सी॰पी॰आई॰एम॰ कार्यकर्ताओं को गिरफ़्तार किया।

केरल के मुख्य मंत्री, पेनियार विजयन के चुनाव इलाक़े में इस अमानवीय घटना ने पूरे देश को झगझोड दिया। वामपंथियों द्वारा रक्तपात की इस दुखद घटना ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया, पूरे देश के राष्ट्रीय मीडिया में इस घटना पर बहस और चर्चा हुई।

इस दुखद घटना पर पूरे केरल में कविता शिविर आयोजित कराए गए, कविताओं के छंद, वामपंथियों के क्रूरता की ओर केंद्रित थे । संतोष कुमार की सुपुत्री, विस्माया ने 'हमारे आँसू आपके लिए आनन्ददायक हैं ' नामक एक विडीओ जारी किया, पूरे देश की मीडिया और सोशल मीडिया में ये विडीओ आग की तरह फैल गया।

एक पुत्री की दिल दहला देने वाली इस विडीओ में ये पूछा गया है की उनके पिता की हत्या सिर्फ़ इस लिए क्यों कर दी गयी क्योंकि वो आर॰एस॰एस॰ और भाजपा से जुड़े थे ? इस बालिका ने विडीओ में अपने भय और चिंता से भरे भविष्य के बारे में भी भाव व्यक्त किए हैं ।

राधाकृष्णन, विमला देवी

06&16 जनवरी 2016, को शहीद, पालककाडू

राधाकृष्णन, पलक्कड़ के कांजीकोड़े क्षेत्र में भारतीय जनता पार्टी के जाने mane कार्यकर्ताथे, वो मंडलम समिति के सदस्य भी थे। राधाकृष्णन की भाभी विमला देवी, महिला मोर्चा की एक सक्रिय सदस्य थीं। 2016 के राज्य विधानसभा चुनावों के दौरान कांजीकोड़े में बीजेपी के सशक्त प्रदर्शन ने सीपीआई (एम) की नीवों को हिला दिया, वो भाजपा के चुनावी प्रदर्शन से काफ़ी परेशान थे । कांजीकोड, हमेशा से मार्क्सवादी हिंसा का केंद्र था, और इस परिणाम के बाद मार्क्सवादियों ने भाजपा कार्यकर्ताओं पर हमले तेज़ कर दिए ।श्रीमती विमला के पति कन्नन को मरकसवादीयो से लगातार मौत की धमकी मिल रही थी ।

सीपीएम के हमलावरों ने राधाकृष्णन के घर पर हमला कर दिया और घर को काफ़ी नुक़सान पहुँचाया, । घर के आँगन में जो बाइक लगाए गए थे, उन्हें मार्क्सवादियों ने जला दिया । यह घटना 28 दिसंबर की सुबह उस वक़्त हुई जब पूरा परिवार गहरी नींद में था । जब परिवार वाले बाहर लगी आग को बुझाने की कोशिस कर रहे थे,तब रसोई के पास रखी गैस आग के चपेट में आ गया और एक बड़ा विस्फोट हुआ। राधाकृष्णन के भाई कन्नन जो पूर्व पंचायत सदसय थे, उनकी पत्नी विमला, और उनके भतीजे सेल्वराज विस्फोट में बुरी तरह घायल हुए थे। इलाज के लिए उन्हें थ्रिसूर के मेडिकल कॉलेज अस्पताल ले जाया गया।

राधाकृष्णन, जिनका शरीर 70% से ज्यादा जल चुका था ने 6 जनवरी 2017 को अंतिम साँस ली। 16 जनवरी 2017 को विमला देवी, का निधन 80% से ज़्यादा जलने के कारण हो गया।

कांजीकोड सामूहिक हत्या के माध्यम से मार्क्सवादियों ने केरल की राजनीतिक हत्याओं के परिदृश्य में क्रूरता की एक नई शैली का प्रदर्शन किया है।

ऐसा दुष्कर्म केवल हिंसा से प्रेरित राजनीतिक विचारधारा ही कर सकती है । ऐसी विचारधारा मानवता से वंचित है , और ऐसी नीच विचारधारा ही एक परिवार, जिनके सदस्य सो रहे थे, उन पर घात लगा कर हमला करेगा और उनके घर को जला देगा ।

कांजीकोद घटना की समानता 80 के दशक में त्रिशूर के तटीय क्षेत्र के पास एक दुखद घटना से है। उस दशक में मार्क्सिस्ट त्रिशुर के तटीय इलाक़े में हिंसा फयला रहे थे । उस वक़्त भाजपा के दो कार्यकर्ता राजन और सुब्रह्मण्यम को खून के प्यासे कोम्मनिस्टो ने पेट्रोल से ज़िंदाजला दिया था ।

पूर्व में कुछ ऐसी अन्य घटनाएं भी हुई हैं- पारसीनीकादाव सर्प पार्क, में आग जनी; यहां तक की कन्नन के निवास की गौशाला को भी इन मार्क्सिस्ट ने नहीं छोड़ा यह घटना कांजीकोड़े के लोगों के दिमाग में बना रहेगा । इस घटना के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के रूप में केरल के सभी हिस्सों में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुआ, इन विरोध प्रदर्शन ने पूरे राज्य को हिलाकर रख दिया गया।

सीपीआई-सीपीएम संघर्षः हिंसक वाम के बारे में बहुत कुछ कहता है

जब कोई सीपीआई और सीपीएम की हत्याओं की घातक गाथा को देखता है, जब हसियों और हथौड़ों ने स्वयं अपनों के बीच निशाना बनाया, तो केरल में कुल 23 हत्याएं हुईं, जिनमें से सीपीआई के 16 पार्टी-पुरुष और सीपीएम खो चुका है, 7 । कुछ उदाहरणों में, पार्टी के सदस्यों ने हत्यारे कार्यों को पूरा करने के लिए उद्धहरण (कोटेशन) टीमों को नियुक्त किया । कोटेशन टीमों की नियुक्ति के बाद इस तरह की हत्या के शिकार होने वाले पहले विक्टिम कोईलैंडी के सीपीआई नेता चठोथु श्रीधरन नायर थे। दूसरा, भाष, पेट्टाह, त्रिपुनीतुरा, जिनकी 1989 में हत्या कर दी गई थी। वह एआईटीयूसी के सदस्य थे। कुख्यात कोटेशन टीम 'अट्ठाई और हाफ कंपनी' द्वारा हत्या की गई थी।

1992 में, मुवत्तुपुझा जिले में, सीपीआई ने कथित रूप से सीपीएम कार्यकर्ताओं के खिलाफ आतंक फैलाया। हमले में, सीपीएम शाखा के पिपरी के एम के कुंजु बाबा की मृत्यु हो गई थी। हालांकि, हत्या के लिए कोई भी दोषी नहीं ठहराया गया था।

कहा जाता है कि कोट्टायम जिले में सीपीएम ने तीन सीपीआई कार्यकत्ताओं को हटा दिया। संक्रांथि के मूल निवासी राघु नट्टाकम के मूल निवासी टी के थैंकाप्पन और कूराल्ली श्रीधरन पिल्लई। थैंकाप्पन सीपीआई की राज्य समिति के सदस्य भी थे। 1972 में हुए एक झगड़े में पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीके गोपीनाथ को गहरी चोटें लगीं। पलक्कड जिले में कम्युनिष्ट पार्टी में विघटन के बाद सीपीआई और सीपीएम के झगढ़ों में हताहतों की संख्या बढ़ गई। जब सीपीआई ने किजाककनशेरी बलन के वेलप्पन और मंगलम दम जोश का नाम मृतक के रूप में घोषित किया है तो सीपीएम ने प्रत्युत्तर में कुट्टान, वेलयुधन,कुंजली का नाम 'सीपीएम शहीद' के रूप में घोषित कर दिया। यह हत्याएं 1964 और 1973 के बीच हुईं। इस काल के तुरंत बाद सीपीआई नेता कोटैककडु मुकरामकडु भावदास,जो पलक्कड जिला मे जिला पंचायत अध्यक्ष और मारुथा रोड पंचायत के उपाध्यक्ष थे, की हत्या के बाद दोनों धड़े एक दूसरे पर खुले व्यंग्य करने में व्यस्त हो गए। बाद में हत्या के एकमात्र गवाह को हटा दिया गया। 47 वर्षीय कोयलांदी के छथोथू श्रीधरन नायर को उनकी पत्नी के छेरूट्टी रोड स्थित निवास पर दुश्मनी के कारण मार दिया गया,क्योकिं वे सीपीएम छोड़कर सीपीआई चले गए थे। उनके साथ 60 अन्य लोग भी सीपीआई चले गए थे। इससे पार्टी कोयलांडी में मजबूत गढ़ बना पाई। सीपीआई ने कथित रूप से कहा कि कोटेशन टीम को सीपीएम ने भाड़े पर रखा। अलाप्पुझा, सीपीआई और सीपीएम के बीच कभी न खत्म होने वाले संघर्ष की गवाही देता है, जिसमें युद्धरत्त धड़ों के कारण छह लोगों की जानें चलीं गई।

सीपीएम कामरेडों ने कथित रूप से सीपीआई के एपी मोहनन की हत्या 26 जून 1986 को उनकी मां कुंजीपेन्नू के सामने कर दी। हत्या का कारण था कि मोहनन परावूर के संघर्षरत सीआईसीयू और एआईटीयूसी के बीच शांति बनाने का प्रयास कर रहे थे। जब वो अपनी मां द्वारा तैयार दोपहर का भोजन करने के लिए बैठे ही थे तब हमलावरों ने उन्हें हमला करने के लिए दौड़ाया। मोहनन को उनके घर से बीस क़िमी दूर घेर कर मार डाला गया। 19 हमलावरों को मूल पार्टी सीपीएम द्वारा बुलाया गया। जीवन पर्यन्त कारावास का दंड मिलने के बावजूद वे अपनी सजा पूरी किए बिना ही बाहर आ गए, इके नयनार सरकार के हस्ताक्षेप को धन्यवाद। सीपीआई बराबर विश्वास करती रही कि वास्तविक दोषी को सजा नहीं हूई।

सीपीआई के विजयन की हत्या कोट्टारप्पलम पर कर दी गई। उन्होंने पुलिस के लोगों के पीछे शरण लेने की कोशिश की तो आक्रमणकत्ताओं ने पुलिस के लोगों को पीटा और फिर विजयन की हत्या कर दी। मन्नार पवुककारा उन्नीकृष्णनन, मंजेरी के पीके विश्वनाथन और केनककरी रघुअप्पन सीपीआई के वो कार्यकत्ता लोग थे जिन्हें कथित रूप से सीपीएम काडर द्वारा मार डाला गया।

सीपीएम नेता सीजी सुघीनद्रन, जो अलप्पुझा मोहम्मडनस हाई स्कूल में शिक्षक थे, को कलारक्कोड के उनके पैतृक निवास पर मार डाला गया। सीपीआई हत्यारों ने उनके घर के भीतर उनका इंतजार किया और जब वो अपनी बेटी रेनू की एसबीटी में नौकरी मिलने की खबर को अपनी मां को देने अंदर गए तो उन्हें मार डाला। सभी आठ को सजा मिली तथा एक को अजीवन सजा मिली।

लगभग तीन दशक पूर्व अरावकोडू मंदिर में उत्सव मनाए जाते समय सीपीएम के बालाकृष्णनन को भी लगभग इसी तरह से मार डाला गया। केएसवाईएफ कार्यकर्त्ता बालाकृष्णनन एक टेप की मरम्मत करवाने जा रहे थे जबकि कथित रूप से सीपीआई कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें घेर कर मार डाला। उनके शरीर पर 46 घाव थे।

1972 में सीपीआई के थिरूवल्ला तालुक समिति के सचिव पुल्लट एनटी थामस को कथित रूप से सीपीएम कार्यकत्ताओं द्वारा अंजीसलथनम में मार डाला गया था। उनकी हत्या उस समय हुई जबकि किसानों के बीच फैली अशांति को समाप्त करने के लिए शांति वार्ता जारी थी और आंदोलन हिंसक हो गया। कोल्लम जिला सीपीआई और सीपीएम के बीच के कई संघर्षों का साक्षी रहा। लेकिन एआईवाईएफ के सैजू की हत्या सीपीआई कार्यकर्त्ताओं के दिमाग में हमेशा ताजी बनी रही— जिसने दो राजनैतिक धड़ों के बीच संघर्ष को हमेशा जिलाए रखा।

(दैनिक मंगलम मलयालम की 2012 अगस्त में प्रकाशित खबर पर आधारित)

#वामपंथी आतंक

केरला राष्ट्रवादियों के खिलाफ

शहीद

वी रामकृष्णन -1969

धर्मजन और उसकी पत्नी यशोदा – 1982

सत्यन -2008

पंथक्कल पविलण -1978

पनुनंदा चंद्रन -1978

सचिन गोपाल -2012

सुब्रमणियन -1965

विशाल कुमार -2012

वेलियाथानाडु चंद्रशेखरन -1970

सुरेश बाबू -2008

वी ए गंगाधरण -1981

श्रद्धांजलि

शोक संतप्त मनोज का परिवार

शोक संतप्त सुजीत का परिवार और पड़ोसी

शोक संतप्त रामचंद्रन के परिजन

शोक संतप्त विनोद का परिवार

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह बलिदानियों को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

श्री कुम्मनम राजशेखरन रामचंद्रन को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

शोक संतप्त रमित का परिवार

शोक संतप्त विशाल का परिवार

श्री राजनाथ सिंह बलिदानियों को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

शोक संतप्त सुरेश का परिवार

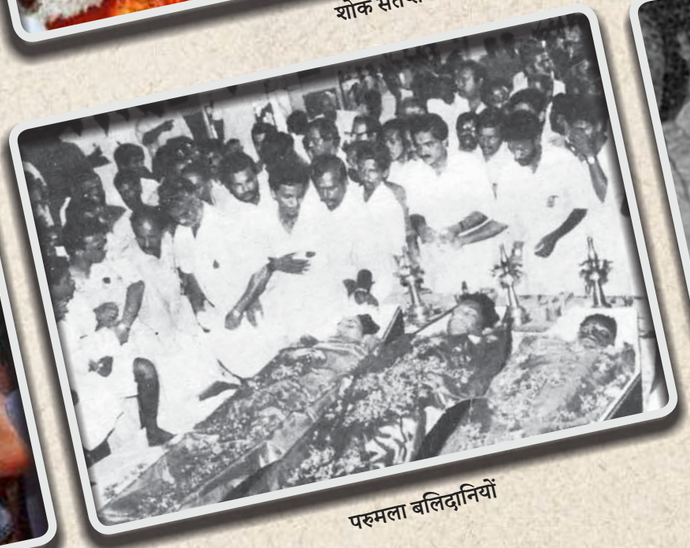

परुमला बलिदानियों

शोक संतप्त वी रामकृष्णन का परिवार

श्रद्धांजलि

श्री सुरेंद्रन संतोष को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

वासन के अंतिम संस्कार में प्रार्थना करते हुए – 1983

शोक संतप्त विनोद कुमार का परिवार और पड़ोसी

शोक संतप्त विनोद का परिवार

श्री मुरलीधरन विनोद कुमार को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

विशाल कुमार को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए

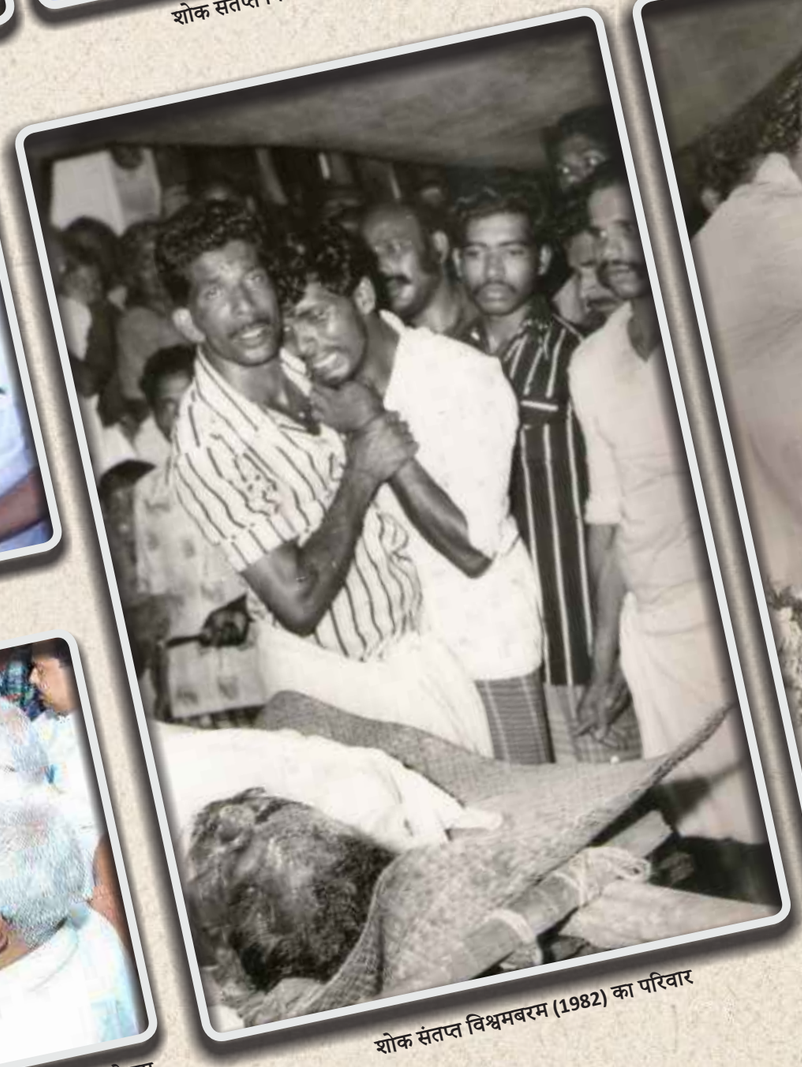

शोक संतप्त विश्वमबरम (1982) का परिवार

विश्वनाथन को अंतिम पुष्पांजलि अर्पित करते हुए

नेताओं द्वारा शान्ति की पेशकश

मेजर जनरल बी. सी. खंडूरी बलिदानी बालन के परिजन को सांत्वना देते हुए

राजमाता विजयाराजे सिंधिया नानू मास्टर के परिवार के साथ

राजमाता विजयाराजे सिंधिया नानू मास्टर के परिवार के साथ

श्रीमति मीनाक्षी लेखी वामपंथी आतंकी के शिकार परिजनों के साथ

श्री एच वी शेशाद्री जी चंद्रन के घर में

श्री यादव राव जोशी बलिदानी हरिदासन के परिवार के साथ

श्री यादव राव जोशी 1980 में बलिदान विजयन के परिवार के साथ

श्री अनंत कुमार केरल में वामपंथी आतंकी के शिकार परिजनों के साथ

श्री लाल कृष्ण आडवाणी अनिल कुमार के घर पर

नेताओं द्वारा शान्ति की पेशकश

श्री कुम्मानम राजशेखरन विनीश के परिजनों को सांत्वना देते हुए

श्री कुम्मानम राजशेखरन प्रमोद के परिजनों को सांत्वना देते हुए

श्री कुम्मानम राजशेखरन निर्मल के परिजनों को सांत्वना देते हुए

श्री ओ. राजगोपाल 1979 में बलिदानी बालाकृष्णन के घर पर

श्री लाल कृष्ण आडवाणी बिम्बी के घर पर

श्री राजनाथ सिंह कन्नुर में

श्री के जी मारार वामपंथी आतंक के शिकार परिजनों के साथ

श्री रविशंकर प्रसाद वामपंथी आतंक के शिकार परिजनों के साथ

विरोध प्रदर्शन

भारत भर में कम्युनिस्ट हिंसा के खिलाफ

केरल में वामपंथी हिंसा के खिलाफ 1989 में प्रदर्शन करते लोग

बेंगलूरु में वामपंथी हिंसा के शिकार लोगों के समर्थन में वर्ष 2016 में कैंडल मार्च करते हुए

बेंगलूरु में वामपंथी हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन करते लोग

वर्ष 1989 में केरल में मुरिक्कमपुज्जा नरसंहार के खिलाफ प्रदर्शन करते लोग

दिल्ली में प्रदर्शन

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम

संसद परिसर में

मुंबई

बेंगलूरु में प्रदर्शन

दिल्ली में प्रदर्शन

दिल्ली में प्रदर्शन

विरोध प्रदर्शन

भारत भर में कम्युनिस्ट हिंसा के खिलाफ

शिमोगा – कर्नाटक

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम

बेंगलूरु

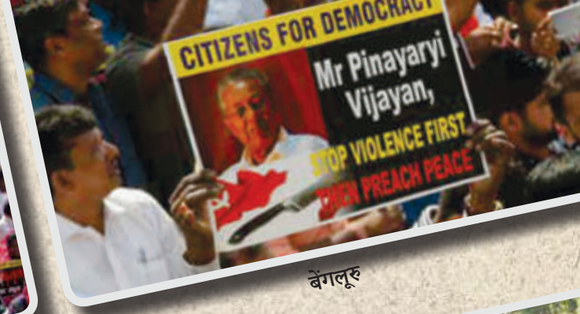

बेंगलूरु

भुज – गुजरात

अस्साम

हिमाचल प्रदेश

इंडोर – मध्यप्रदेश

मैसूरु – कर्नाटक

अस्साम

महाराष्ट्र

उपसंहार

केरल ने हमेशा खुद को धर्मनिरपेक्ष साख के साथ एक शांतिपूर्ण राज्य के रुप में प्रस्तुत किया है। राज्य को इस बात का बहुत गर्व है कि सभी धर्मों की उपस्थिति होने के बावजूद किसी तरह की सांप्रदायिक हिंसा नहीं हुई है।लेकिन सच्चाई इससे कोसों दूर है। केरल के शांतिपूर्ण मुखौटे के नीचे राजनीतिक हिंसा और आतंक का साया उसकी जड़ में जमा हुआ है। फाइनेंशियल एक्सप्रेस में छपी एक रिपोर्ट के अनुसार किसी भी अन्य राज्य की तुलना में केरल में अधिक "राजनीतिक दंगे हुए"। पूरे देश के आंकड़ों में आधे से अधिक भागीदारी केरल की है। 2015 में केरल में प्रति लाख की जनसंख्या पर 164 दंगे मामले दर्ज किए गए जोकि देश की उच्चतम दर है। बिहार (129) और कर्नाटक (126) का स्थान केरल के बाद आता है ।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के हिसाब से 2015 में केरल राजनीतिक हिंसा और कालेजों में छात्रों के दंगे के मामले में अधिक आबादी वाले राज्यों से आगे है। राजनीतिक रूप से संबद्ध कई छात्र संगठनों की प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर पुलिस के साथ टकराव व दंगे नियमित तौर पर होते हैं।

भारत आतंकवाद से बुरी तरह से प्रभावित चौथा देश है और माओवादी भारतीय राज्य के लिए सबसे बड़ा खतरा बने हुए हैं। राष्ट्रीय कंसोर्टियम द्वारा एकत्र आंकड़ें जो आतंकवाद और आतंकी प्रतिक्रियाओं के अध्ययन के लिए अमेरिकी विदेश विभाग के साथ अनुबंध के तहत लिए गए हैं , उनसे खुलासा होता है कि तालिबान, इस्लामी राज्य और बोको हराम तीन सबसे घातक आतंकवादी संगठन विश्व स्तर पर चल हैं। उन्हीं क अनुकरण प्रतिबंधित संगठन भाकपा (माओवादी) द्वारा किया जाता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश भर में सक्रिय 45 संगठनों के साथ अपराधियों / आतंकवादी देश पर हमलों में शामिल समूहों में काफ़ी विविधता थी। अकेले नक्सली पिछले साल भारत में 43% आतंकवादी हमलों के लिए जिम्मेदार है।

केरल की राजनीतिक हत्याओं में सीपीआई (एम) की भूमिका आँकड़े बढ़ाने में खतरनाक है, जिसपर एक बहस होना महत्त्वपूर्ण है। केरल में सत्तारूढ़ कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) के लिए यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण कड़ी है; जिसके आका खुद को दूर रखकर अपनी विचारधारा लोगों पर थोपते हैं। दुनिया भर में कम्युनिस्ट केवल एक ही विचारधारा में विश्वास करते हैं, "किसी भी तरह से सत्ता" हासिल करो। दुनिया भर के कम्युनिस्ट शासन में लगभग 100 मिलियन लोग मारे गए हैं। भारत के आंकड़ों पर एक नज़र डालना जरुरी है | 1997 में बुद्धदेव भट्टाचार्य ने विधानसभा में एक प्रश्न का बेशर्मी से जबाब देते हुए कहा था कि 1977 (जब वे सत्ता में आए थे) और 1996 के बीच 28,000 राजनीतिक हत्याएं हुई। हमें इस बयान पर गौर करनी चाहिए कि महीने में औसतन 125.7 लोगों की हत्या का महापाप हुआ। इसका मतलब है कि प्रत्येक दिन चार लोग मारे गए। यदि कोई केरल विधानसभा में आज यह सवाल खड़ा करे तो ये आंकड़े हजारों में चला जाएगा।

शिक्षाविद, वामपंथी और तथाकथित धर्मनिरपेक्ष ताकतें केरल के विकास के मॉडल का गुणगान करते हैं, लेकिन आम जनता इस विकास की कीमत से अनजान है । कमुनिस्टों ने जब 1957 में पहली बार चुनाव के द्वारा सत्ता हासिल की तो उनका प्रमुख लक्ष्य यह रहा कि लोगों के असंतोष को दबाने और राजनीतिक हत्याओं के द्वारा राजनीतिज्ञों को कुचला जाए। ये हत्याओं के 'माफिया' पिछले छह दशकों से केरल में सतत प्रवृत्ति से सक्रिय हैं। सत्ता में रहने पर या नहीं रहने पर भी उनकी विचारधारा का विरोध करने वाले लोगों की हत्या लगातार हो रही है। अपने राजनीतिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी हिंसा के पंथ से जुड़ी हुई है। उनके हाथ में हत्या एक राजनीतिक साधन है।

कम्युनिस्टों द्वारा अत्याचार को बढ़ावा देना एक दस्तावेजीकरण की पूरी कवायद है, यह तो सिर्फ एक शुरुआत है। इस अधिनायकवादी शासन के खिलाफ केरल की इस लड़ाई में सैकड़ों युवा राष्ट्रवादियों को खो दिया गया है। हमें इस सच्चाई को आम जनता के बीच लाने के लिए ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है। और यह सिर्फ उस दिशा में एक शुरुआत है।

सीकेएसपीएस के बारे में

सेंटर फॉर केरला सोशियो—इकोनॉमिक एंड पोलिटकल स्टण्डीज (सीकेएसपीएस) एक गैर लाभकारी संस्था है जो केरल के सामाजिक— आर्थिक विकास पर राजनीतिक प्रभाव के अध्ययन को समर्पित है। केंद्र का उद्देश्य आवर्ति अनुसंधान के परिणामों का विश्लेषण और उसे प्रकाशित करके आम जनता के सामने सामाजिक— आर्थिक सूचकांको को रेखांकित करते हुए सामने रखना है। केरल अपनी समृद्ध हरियाली, आयुर्वेद—पारंपरिक हिंदू चिकित्सा प्रणाली, कलारी—स्वदेशी मार्शल आर्टस और जमीन की सांस्कृतिक विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इसी समय केरल उद्योग विरोधी गतिविधियों और राजनीतिक हिंसा के लिए कुख्यात है। केंद्र का उद्देश्य हड़ताल, राजनीतिक हिंसा का समाज पर प्रभाव और केरल में आम आदमी की काम की पद्धति का अध्ययन विभिन्न स्टेडी और परियोजनाओं का आयोजन करके करना है। केंद्र का मिशन नीतिगत निर्णयों को प्रोत्साहित करने के लिए डेटा के आधार पर अनुभवजन्य ज्ञान प्रस्तुत करना है। सामाजिक विकास पर राजनीतिक परिणामों के स्पेक्ट्रम को समझने के लिए केंद्र, संस्थानों, राजनीतिक प्रक्रियाओं और नीतियों का मूल्यांकन और जांच करने के लिए विद्वानों, बौद्धिक और राजनीतिक पर्यवेक्षकों को एकजुट करने के लिए भी काम करेगा। शोध निष्कर्षों के बारे में आम जनता को सूचित करने के लिए केंद्र समय-समय पर कार्यशालाओं, सेमिनारों और इसी तरह के वार्ता का आयोजन करेगा।

हमारी टीम

संजू सदानंदन saanjus

एक उत्साही सामाजिक कार्यकर्ता, संजू ने दृढ़ प्रतिबद्धता के रूप में राष्ट्र निर्माण किया है। वह पेशे से एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं, जो वर्तमान में बेंगलुरु में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के साथ साइबर सुरक्षा अभियंता के रूप में काम कर रहे हैं। उनकी पहले की नौकरी के प्रोफाइल में भारत में औद्योगिक नियंत्रण प्रणाली अभियंता के रूप में काम करना शामिल है, इसके अलावा अन्य कई अंतरराष्ट्रीय कार्यों में भी उन्हें नामित किया जा रहा है।संजू ने हमेशा स्वयंसेवा किया है और खुद को विभिन्न सामाजिक सेवा संगठनों और प्लेटफार्मों जैसे विश्व संवाद केंद्र, एनवाईके, आईएसएएन, आईआईएमए, एच.के., समर्पणम और लायंस क्लब के साथ जोड़ा है। उनकी टीम प्रमुख नेताओं की सोशल मीडिया गतिविधियों का प्रबंधन और दिशा देती है। वह 'सांभर संवाद अभियान' के समन्वयक थे। संजू की रुचि का क्षेत्र राजनीतिक विश्लेषण, गांव विकास, युवा सशक्तिकरण, सामाजिक मीडिया सक्रियता और साइबर रक्षा तकनीकों को सीखने में है। केरल के पतनमथिट्टा जिले के मूल निवासी, संजू वर्तमान में बेंगलुरु में रहते है।

विनीता मेनोन kaishikha

विनीता एक समर्पित राष्ट्रवादी हैं और राष्ट्र निर्माण में वे एक सामाजिक राजनीतिक लेखक और कंटेंट एडीटर के रूप में योगदान देतीं हैं। उन्होंने एक अग्रणी टेलीविजन चैनल, लोकप्रिय पत्रिकाओं, वेब पोर्टल्स और ब्लॉग्स के साथ काम किया है। "आई सपोर्ट नमो" तृतीय पक्ष अभियान की वे एक समन्वयक थीं, जिसने 2014 के लोकसभा चुनाव के लिए प्रभावकारी रूप से कार्य किया। समर्पण ट्रस्ट और विवेकानंद सेवा समिति, सीकेएसपीएस, आईएसके और एच.के. विनेथा जैसे सामाजिक सेवा संगठनों और प्लेटफार्मों के सदस्य विनीता ने 'चाए पे चर्चा' और 'समबारा संवाद' जैसे उद्यमों में कुशलता से भाग लिया है। वे उस टीम का भी हिस्सा हैं जो कई प्रमुख नेताओं की सामाजिक मीडिया गतिविधियों का प्रबंधन करती है, साथ ही राष्ट्रीयवादी पोर्टल्स के साथ भी हैं। लेखक के रूप में कैरियर की शुरुआत करने से पहले विनीता ने शिक्षक और अंग्रेजी भाषा प्रशिक्षक के रूप में काम किया। एक कट्टर पशु प्रेमी, उनके रुचि के क्षेत्र में ड्रेस डिजाइनिंग, कला और शिल्प, पशु कल्याण और महिला सशक्तिकरण हैं। एरनाकुलम जिले के मूल निवासी, विनिता वर्तमान में बेंगलुरु में रहती है।

डॉ रसिता आनंद rasita

रशीता पारंपरिक और नए मीडिया का उपयोग करते हुए राष्ट्र निर्माण और महिलाओं के अधिकारों के लिए काम करने के लिए भावुक है। वह अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन में गुजरात के केंद्रीय विश्वविद्यालय से पीएच.डी. धारक हैं। उनकी थीसिस भारत में साइबर सुरक्षा नीति पर है। वह अंग्रेजी साहित्य में स्नातक,मास्टर ऑफ इंटरनेशनल बिजनेस, मास्टर डिप्लोमा इन गवर्नेंस और इंटरनेशनल रिलेशंस में मास्टर ऑफ फिलॉसफी हैं।उन्होंने गुजरात और छत्तीसगढ़ राज्यों में सर्व शिक्षा अभियान के लिए बाल जनगणना के तहत परियोजना प्रबंधक के रूप में काम किया है। अपनी पहले नौकरी प्रोफाइल में, उन्होंने भारत और सिंगापुर में एक आपूर्ति श्रृंखला डोमेन सलाहकार के रूप में काम किया। वर्तमान में, वह सिनर्जी मरीन ग्रुप के मीडिया एंड पॉलिसी इनसिएटिव अध्यक्ष हैं। वह सामाजिक कारणों के लिए स्वयंसेवा करतीं हैं और सीकेएसपीएस, दिशा और केएसएस जैसी संगठनों के साथ काम करती है। वर्तमान में, वह अपने परिवार के साथ वॉशिंगटन डीसी में रहतीं हैं।

जयशंकर एस jaypanicker

नीति और प्रतिस्पर्धा पर मुख्य ध्यान देने के साथ जयशंकर रणनीति पर भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। राजनैतिक अध्ययनों में गहराई वाली जड़ों के जुनून के साथ, जय ने कुछ प्रमुख वेबसाइटों में समकालीन मुद्दों पर लिखा है। जयशंकर केरल के मार्क्सवादी अत्याचारों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाने में अग्रणी रहे हैं। वह विशेष रूप से 2014 के लोकसभा चुनाव और 2016 के केरल राज्य विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा के तीसरे पक्ष के अभियान पर काम कर रहे हैं। 2015-2016 के दौरान वे लायन क्लब के बेंगलुरु क्षितिज के अध्यक्ष भी थे। भवन के राजेंद्र प्रसाद इंस्टीट्यूट ऑफ कम्युनिकेशन एंड मैनेजमेंट, मुंबई से पत्रकारिता में और महात्मा गांधी विश्वविद्यालय एंड पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन में स्नातक होने के बाद जय ने एक दशक से अधिक समय तक सिम्फनी सर्विसेज कॉर्प और जेनपैक्ट जैसी कंपनियों में वैश्विक उन्नत विश्लेषणात्मक संस्थानों की टीमों के साथ प्रबंधकीय भूमिका निभाई। वर्तमान में वे केरल के तिरुवल्ला में अपने मूल गांव को स्थानांतरित हो गए हैं।

बीनू पद्मम bnutwt

पेशे से बिजनेस एडमिनिस्ट्रेटर, बिनू पद्मम बेंगलुरु में एक अग्रणी एमएनसी में वरिष्ठ व्यापार विश्लेषक हैं। एक कट्टर राष्ट्रवादी, उन्होंने लंबे समय से अपने आप को सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्न कर दिया है। बीनू ने नेहरू युवा केंद्र, विशा संचार केंद्र, ऑल इंडिया मलयाली एसोसिएशन, लायंस क्लब, सेवा भारती आदि जैसे विभिन्न संगठनों में जिम्मेदारियां उठाईं।आईएसके, वीएसके, सीकेएसपीएस और आईएसएएन जैसी राष्ट्रवादी प्लेटफार्मों की एक सक्रिय प्रतिभागी, बीनू ने चाय पे चर्चा और संभार सम्वाद जैसे चुनावी कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। कोझीकोड के मूल निवासी, बीनू एक बहुत बड़ा ब्लॉगर और वाक्पटु वक्ता हैं।

जिनोय के जे jinoykj

मानवतावादी होना,जीनोय के लिए जीवन का एक तरीका रहा है। वे एक ऐसे परिवार में पैदा हुए हैं जो सामाजिक कारणों को संबोधित करने में जुड़ा हुआ है। और इसलिए उनके लिए ऐसा उद्यम शुरू करना स्वाभाविक था। वे दो प्रतिष्ठित प्लेटफार्मों समरपन्ना चैरिटेबल ट्रस्ट, बेंगलुरु और विवेकानंद सेवा समिति, थ्रिसूर के संस्थापक ट्रस्टी हैं। राष्ट्र निर्माण एक मंत्र है, वे विभिन्न सेवा समूहों और संगठनों के साथ एक स्थायी रिश्ता स्थापित करने में निपुण हैं और हमेशा सामाजिक कारकों में न्याय सुनिश्चित करते हैं। जिनॉय व्यवसाय से एक इलेक्ट्रॉनिक्स और संचार अभियंता हैं, वर्तमान में एक बंग्लुरू स्थित आईटी फर्म में वरिष्ठ सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम कर रहे हैं, उनका जुनून संगीत और खेती में निहित है। लायंस क्लब, बेंगलोर क्षितिज के कोषाध्यक्ष, जिनॉय एनवाईके, सीकेएसपीएस, आईएसके और एचके जैसे कई सामाजिक सेवा संगठनों और प्लेटफार्मों के सदस्य हैं। वे आईएसएन और आईएसके का हिस्सा रहे हैं, जो 2014 और 2016 के चुनावों के दौरान प्रभावी रूप से कार्य कर रहे थे, उन्होंने चाए पर चर्चा और समभार सम्वाद के सफल कार्यान्वयन के लिए उत्साहपूर्वक काम किया। जीनॉय थ्रिसूर जिले का रहने वाले है और वर्तमान में बेंगलुरु में रहते हैं।